समाजवाद के संस्थापक: धरतीपुत्र मुलायम सिंह यादव "नेता जी"

- विचारों का संक्षिप्त संकलन -

अविनाश कुशवाहा

नेता जी को समर्पित



लेखक के विचार

मुलायम सिंह यादव के निधन से राजनीति के एक युग का अवसान हो गया। मुलायम सिंह यादव समतावादी विचारों से निकले जननेता थे। साधारण पारिवारिक पृष्ठभूमि से निकले व्यक्ति, जिसकी जड़ें पहलवानी में थीं, ने राजनीति के अखाड़े में खूब दांव-पेच आजमाए।

यह अलग बात है कि राजनीतिक विचारों के लिहाज से वे भाजपा के धुर-विरोधी थे, पर उनका वैचारिक विरोध उनके व्यक्तिगत संबंधों में नहीं दिखाई देता था। अपने धुर-विरोधी विचारधारा के व्यक्ति से भी उनके निजी संबंध मधुर थे। गांव, गंवईपन, खेती-किसानी, भारतीय भाषा के सरोकार कहीं न कहीं उनके जेहन में बसे हुए थे। कालक्रम में मुलायम सिंह की छवि स्वजातीय नेता के रूप में भले बन गई थी, लेकिन उन्होंने कभी अपने आप को ऐसा बनाने की कोशिश नहीं की। जनेश्वर मिश्र जैसे धुरंधर लोगों के साथ उन्होंने राजनीति में समाजवाद की मशाल को जलाकर रखा। आगे चलकर उत्तर प्रदेश में कांग्रेस के तिलिस्म को तोड़ने वाले नेता साबित हुए। कांग्रेस के थोपे आपातकाल के दौरान लोकतंत्र को बचाने के संघर्ष में भी मुलायम सिंह लोकतंत्र के प्रहरी की भूमिका में सक्रिय रहे। कांग्रेस की राजनीति में संकीर्णता थी। इस कारण से किसी सामान्य व्यक्ति के लिए राजनीति में जगह बना पाना आसान नहीं था। ऐसे में जब प्रदेश के किसी सामान्य परिवार का व्यक्ति राजनीति में भाग लेता था, तो उसे डकैत बताकर जान से मारने की धमकी देकर उसे दबा दिया जाता था। ऐसी प्रतिकूल परिस्थितियों में, स्वयं के जीवन की परवाह किए बिना, आम लोगों के बीच अपने राजनीतिक संघर्ष की यात्रा को मुलायम सिंह ने आगे बढ़ाया। उत्तर प्रदेश की राजनीति में आज सामाजिक रूप से हाशिये के लोगों का राजनीतिक प्रतिनिधित्व उभरकर आया है, तो उसके पीछे मुलायम सिंह जैसे नेताओं की एक फेहरिस्त है, जिन्होंने जमीनी तौर पर राजनीति की इस कठिन लड़ाई को लड़ा है। अपनी भाषा, अपने वेश, अपने विषय, अपने समाज और अपने गांव को सत्ता की कालीन पर बिछा देने की ताकत मुलायम सिंह जैसे नेता ही रखते हैं। ये सहजता सब जगह उनमें रहती थी। वे सरल भी थे, सहज भी। यूपी में भी तमाम लोग बताते हैं कि नेताजी कभी भी फोन कर हालचाल ले लेते हैं।

सुबह की पहली रोशनी के साथ ही लोगों से मिलना शुरू कर देने वाले नेताजी शाम होने तक उनके बीच ही समय गुजारते थे। लोगों के विषयों को सुनना, उनकी रुचि में था। उनकी राजनीति में दंभ व अहंकार के लिए कोई जगह नहीं थी, लेकिन एक पहलवान की तरह चुनौतियों से भिड़ने और पार पाने की कला उनके भीतर जरूर थी। भांति-भांति की राजनीति करते हुए लोग कई बार राजनीति को केवल कॅरिअर मान लेते हैं, लेकिन मुलायम सिंह असली पहलवान थे। उन्हें तो जीत हो या हार, हर हाल में अखाड़े में डटे रहना ही पसंद था। इस अखाड़े के पहलवान ने भारत की राजनीति के राजपथ पर गांव-गिरांव की मिट्टी को मजबूत करने का काम किया है।

श्रद्धांजलि

अध्याय: परिचय

उत्तर प्रदेश के एक छोटे से गाँव सैफई की धूल भरी गलियों में, धरतीपुत्र मुलायम सिंह यादव नामक एक युवा लड़का साधारण शुरुआत से उठकर अपने समय के सबसे महत्वपूर्ण राजनीतिक व्यक्तियों में से एक बनने वाला था। यह दृढ़ संकल्प, धैर्य और न्याय की निरंतर खोज की कहानी है, जो उसकी जन्मभूमि की मिट्टी में गहराई से जड़ें जमाए हुए है।

मुलायम का जन्म एक साधारण किसान परिवार में हुआ था। यादव, जो परंपरागत रूप से ग्वाले थे, वे विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग का हिस्सा नहीं थे। उन्होंने ग्रामीण जीवन की कठोर वास्तविकताओं का सामना किया—निर्दयी गर्मियाँ, असफल मानसून, और रोजी-रोटी चलाने की लगातार जद्दोजहद। लेकिन मुलायम, बचपन से ही, अपने भाग्य को चुपचाप स्वीकार करने वालों में से नहीं था। उसमें एक आंतरिक ज्वाला थी, एक ऐसा जुनून जो उसके परिवार और उसकी जाति को ऊपर उठाने की इच्छा रखता था।

छोटी उम्र से ही, मुलायम ने कुश्ती में गहरी रुचि दिखाई, जो उनके समुदाय में एक लोकप्रिय खेल था। अखाड़े में, मुलायम ने शारीरिक और मानसिक क्षमता विकसित करनी शुरू की, जिसने उनके चरित्र को परिभाषित किया। कुश्ती ने उसे अनुशासन, रणनीति, और इस बात का महत्व सिखाया कि चाहे प्रतिद्वंद्वी कितना ही ताकतवर क्यों न हो, हार कभी न माननी चाहिए। ये सीखें उन्हें बाद में राजनीतिक क्षेत्र में बहुत काम आईं, जहां उन्होंने अपना दबदबा कायम किया।

सैफई में शिक्षा आसानी से सुलभ नहीं थी, लेकिन मुलायम के पिता ने शिक्षा के महत्व को समझा और यह सुनिश्चित किया कि उनका बेटा स्कूल जाए। मुलायम औसत छात्र थे, लेकिन उनकी तीव्र निरीक्षण क्षमता और जिज्ञासा उन्हें दूसरों से अलग करती थी। वह अपने समुदाय को प्रभावित करने वाले सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों में गहरी रुचि रखते थे। उनके आस-पास की असमानता उन्हें गहराई से परेशान करती थी, और उन्होंने एक ऐसे भविष्य का सपना देखना शुरू किया जहां हाशिए पर पड़े लोग भी शक्ति और प्रभाव में आ सकें।

जवानी में, मुलायम राजनीति की ओर आकर्षित हुए, जो राम मनोहर लोहिया और जयप्रकाश नारायण जैसे नेताओं से प्रेरित थे, जिन्होंने वंचितों के अधिकारों की वकालत की थी। विशेष रूप से लोहिया के समाजवादी विचारों और इस विश्वास से प्रभावित हुए कि राज्य को दबे-कुचले लोगों के कल्याण के लिए काम करना चाहिए। ये विचार मुलायम के साथ प्रतिध्वनित हुए, जिन्होंने राजनीति को न्याय और समानता के लिए संघर्ष का एक साधन माना।

मुलायम की राजनीति में प्रवेश आसान नहीं था। उन्हें स्थापित राजनीतिक परिवारों से विरोध का सामना करना पड़ा और अक्सर उन्हें एक साधारण पहलवान के रूप में खारिज कर दिया गया, जिसका जटिल शासन की दुनिया में कोई स्थान नहीं था। लेकिन मुलायम की दृढ़ता और रणनीतिक सोच ने जल्द ही उनके आलोचकों को गलत साबित कर दिया। उन्होंने अपनी राजनीतिक यात्रा एक अंडरडॉग के रूप में शुरू की, लेकिन जनता के साथ उनकी गहरी जुड़ाव, उनकी समस्याओं की समझ और उन्हें संगठित करने की क्षमता ने उन्हें जल्द ही एक ताकत बना दिया।

1967 के विधानसभा चुनावों में, मुलायम सिंह यादव ने जसवंतनगर निर्वाचन क्षेत्र से अपनी पहली सीट एक विधायक के रूप में जीती। यह जीत सिर्फ उनकी व्यक्तिगत सफलता नहीं थी; यह उत्तर प्रदेश की राजनीति में एक नए युग की शुरुआत का प्रतीक थी। मुलायम का उदय भारतीय राजनीति में पिछड़े वर्गों के उदय का प्रतीक था, जिसने राज्य और देश के राजनीतिक परिदृश्य को बदल दिया।

मुलायम के राजनीति के शुरुआती वर्षों में आदर्शवाद और सत्ता की कठोर वास्तविकताओं के बीच संतुलन बनाने का संघर्ष शामिल था। वह गरीबों और हाशिए पर पड़े लोगों के अधिकारों के लिए लड़ने के लिए दृढ़ थे, लेकिन उन्होंने जल्दी ही महसूस किया कि राजनीति में समझौते करने की आवश्यकता होती है। इन चुनौतियों को बिना अपने मूल सिद्धांतों को खोए नेविगेट करने की उनकी क्षमता उनकी परिभाषित विशेषताओं में से एक बन गई।

जैसे-जैसे मुलायम का प्रभाव बढ़ा, वैसे-वैसे उनका दृष्टिकोण भी बढ़ा। उन्होंने खुद को केवल अपने समुदाय के प्रतिनिधि के रूप में नहीं, बल्कि एक नेता के रूप में देखना शुरू किया, जो महत्वपूर्ण सामाजिक बदलाव ला सकता है। उनके भाषण आम आदमी के साथ गूंजते थे, और उनके करिश्मे ने बड़े-बड़े जनसमूह को आकर्षित किया। मुलायम के पास जीवन के हर क्षेत्र से लोगों के साथ जुड़ने की दुर्लभ क्षमता थी, जिससे वे विश्वास करते थे कि वह उनके संघर्षों को समझते हैं और उनके अधिकारों के लिए लड़ेंगे।

मुलायम सिंह यादव के जीवन का यह अध्याय एक छोटे से गाँव के पहलवान से लेकर राजनीतिक दिग्गज बनने की उनकी यात्रा की भूमिका तैयार करता है। उनकी कहानी केवल व्यक्तिगत सफलता की ही नहीं, बल्कि एक व्यापक सामाजिक आंदोलन की भी है, जिसने यथास्थिति को चुनौती दी और निराधारों को आवाज दी। मुलायम का निर्माण केवल एक व्यक्ति का निर्माण नहीं था, बल्कि एक ऐसे नेता का निर्माण था जो भारतीय राजनीति पर अमिट छाप छोड़ने वाला था।

अध्याय: समाजवादी योद्धा का उदय

1970 का दशक भारत में राजनीतिक उथल-पुथल और सामाजिक अशांति का समय था। 1975 में प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी द्वारा लगाए गए आपातकाल ने पूरे देश में झटके पैदा कर दिए थे, जिससे नागरिक स्वतंत्रताओं पर अंकुश लगा और राजनीतिक असहमति को दबा दिया गया। इसी अशांत समय के बीच मुलायम सिंह यादव के राजनीतिक करियर ने निर्णायक मोड़ लिया। यह युवा नेता, जो पहले से ही अपने जोशीले भाषणों और समाजवादी आदर्शों के प्रति अटूट प्रतिबद्धता के लिए जाने जाते थे, अब अधिनायकवाद के खिलाफ लड़ाई में एक प्रमुख शख्सियत के रूप में उभरने वाले थे।

आपातकाल के दौरान मुलायम का जनता से जुड़ाव और गहरा हो गया। उन्होंने सरकार के दमनकारी उपायों का आम नागरिकों—किसानों, मजदूरों, और छोटे व्यवसायियों—पर पड़ने वाले प्रभाव को प्रत्यक्ष रूप से देखा। गिरफ्तारी, सेंसरशिप और मौलिक अधिकारों के निलंबन ने भय और अनिश्चितता का माहौल पैदा कर दिया था। लेकिन इस अंधकारमय समय में, मुलायम ने लोकतंत्र और न्याय के योद्धा के रूप में अपना मार्ग पाया।

खतरों के बावजूद, मुलायम ने आपातकाल के खिलाफ बोलने से पीछे नहीं हटे। उन्होंने उन विपक्षी नेताओं की श्रेणी में शामिल हो गए जिन्होंने इंदिरा गांधी की सरकार को चुनौती देने का साहस किया। उनकी अवज्ञा ने उन्हें निशाने पर ले लिया, और कई अन्य नेताओं की तरह उन्हें भी जेल जाना पड़ा। लेकिन इससे उनका मनोबल टूटने के बजाय, उनका संकल्प और मजबूत हो गया। जेल में रहते हुए, मुलायम ने दबे-कुचले लोगों की आवाज को दबने नहीं देने वाले भविष्य के लिए योजनाएँ और रणनीतियाँ बनाना जारी रखा।

1977 में जब आपातकाल समाप्त हुआ, तो भारत में एक राजनीतिक भूचाल देखा गया। जनता पार्टी, जो विपक्षी दलों का एक गठबंधन थी, जिसमें मुलायम ने सहयोगी के रूप में भारतीय लोक दल के साथ गठबंधन किया था, ने इंदिरा गांधी की कांग्रेस पार्टी को हराकर सत्ता हासिल की। यह जीत केवल एक राजनीतिक जीत नहीं थी, बल्कि यह लोकतंत्र की विजय थी। मुलायम, जो प्रतिरोध की अग्रिम पंक्ति में थे, अब प्रभावशाली स्थिति में आ गए थे।

आपातकाल के बाद के दौर में मुलायम सिंह यादव उत्तर प्रदेश, जो भारत का सबसे अधिक आबादी वाला राज्य है, के एक प्रमुख नेता के रूप में उभरे। इस राज्य में जटिल जाति गतिशीलता और गहरे सामाजिक मुद्दे थे, जो किसी भी राजनेता के लिए एक चुनौतीपूर्ण क्षेत्र था। लेकिन मुलायम का जमीनी स्तर से जुड़ाव, विशेषकर यादवों और अन्य पिछड़े वर्गों के साथ, उन्हें एक मजबूत आधार प्रदान करता था।

मुलायम का उत्तर प्रदेश के लिए दृष्टिकोण स्पष्ट था। वे ऐसी सरकार बनाना चाहते थे जो उन लोगों का प्रतिनिधित्व करे जिन्हें ऐतिहासिक रूप से सत्ता से बाहर रखा गया था—पिछड़े वर्ग, दलित और अल्पसंख्यक।

उनका मानना था कि सच्चा समाजवाद तभी संभव है जब हाशिए पर रहने वालों को सशक्त किया जाए और यह सुनिश्चित किया जाए कि राज्य के शासन में उनकी आवाज़ हो। इसे हासिल करने के लिए, मुलायम ने अपनी राजनीतिक नींव के लिए एक मजबूत संगठनात्मक ढांचा बनाने पर ध्यान केंद्रित किया। उन्हें पता था कि जमी-जमाई सत्ता संरचनाओं को चुनौती देने के लिए एक ऐसे आंदोलन की आवश्यकता होगी जो जनता को संगठित कर सके।

1989 में, मुलायम सिंह यादव के प्रयास सफल हुए जब वह पहली बार उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री बने। उनका इस पद तक पहुँचना न केवल व्यक्तिगत उपलब्धि थी, बल्कि राज्य के पिछड़े वर्गों के लिए एक मील का पत्थर भी था। मुलायम की सरकार को जनता की, जनता द्वारा, और जनता के लिए सरकार के रूप में देखा गया। उनकी नीतियाँ सामाजिक न्याय के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाती थीं, जिनमें शिक्षा, रोजगार और भूमि सुधार पर विशेष ध्यान दिया गया था।

मुलायम की एक प्रमुख पहल पिछड़े वर्गों में शिक्षा को बढ़ावा देना था। वे समझते थे कि शिक्षा के बिना सामाजिक गतिशीलता असंभव है। उनकी सरकार ने गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के लिए विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में कई स्कूल और कॉलेज स्थापित किए। मुलायम ने विभिन्न राज्य कार्यक्रमों के माध्यम से रोजगार के अवसर प्रदान करने पर भी ध्यान केंद्रित किया, यह सुनिश्चित करते हुए कि लाभ उन तक पहुंचे जिन्हें उनकी सबसे अधिक आवश्यकता थी।

हालाँकि, मुलायम का मुख्यमंत्री कार्यकाल चुनौतियों से अछूता नहीं था। 1990 के दशक की शुरुआत में पूरे भारत में सांप्रदायिक तनाव का उदय हुआ, जिसमें राम जन्मभूमि आंदोलन जोर पकड़ने लगा। यह आंदोलन, जिसका उद्देश्य अयोध्या में विवादित स्थल पर एक मंदिर बनाना था, ने उत्तर प्रदेश में एक अत्यधिक संवेदनशील वातावरण पैदा कर दिया। मुलायम, जो अपनी धर्मनिरपेक्षता के लिए जाने जाते थे, को भारी दबाव का सामना करना पड़ा। वह कानून और व्यवस्था बनाए रखने और स्थिति को हिंसा में बदलने से रोकने के लिए दृढ़ थे।

1990 में, मुलायम ने एक विवादास्पद लेकिन साहसिक निर्णय लिया जब उन्होंने उत्तर प्रदेश पुलिस को अयोध्या की ओर कूच करने वाले कार सेवकों (स्वयंसेवकों) को रोकने का आदेश दिया। साम्प्रदायिक हिंसा को रोकने के उद्देश्य से इस कदम ने मुलायम को प्रशंसा का पात्र बनाया। जहां उनके समर्थकों ने उनकी धर्मनिरपेक्षता के प्रति निष्ठा की सराहना की, जिसे उन्होंने गर्व के साथ अपनाया, क्योंकि यह सभी समुदायों की रक्षा के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाता था।

इस संकट के दौरान मुलायम का नेतृत्व एक सख्त और व्यावहारिक नेता के रूप में उनकी प्रतिष्ठा को मजबूत किया, जो शांति और व्यवस्था बनाए रखने के लिए कठिन निर्णय लेने के लिए तैयार थे। इसने भारतीय राजनीति की जटिल प्रकृति को भी उजागर किया, जहां शासन के साथ धार्मिक संवेदनाओं का संतुलन बनाना एक विवेकपूर्ण निर्णय और साहस की आवश्यकता होती है।

जैसे-जैसे मुलायम सिंह यादव का राजनीतिक प्रभाव बढ़ता गया, वैसे-वैसे उनकी महत्वाकांक्षाएँ भी बढ़ने लगीं। उन्होंने एक ऐसे राजनीतिक दल की आवश्यकता को महसूस किया जो राष्ट्रीय स्तर पर पिछड़े वर्गों और अल्पसंख्यकों की आकांक्षाओं का पूरी तरह से प्रतिनिधित्व कर सके। इस प्रकार, 1992 में, समाजवादी पार्टी का जन्म हुआ। इस पार्टी का गठन मुलायम के जीवन में एक नए अध्याय की शुरुआत थी, जहां वह एक क्षेत्रीय नेता से राष्ट्रीय व्यक्ति के रूप में परिवर्तित हो गए।

समाजवादी पार्टी का निर्माण केवल एक राजनीतिक कदम से कहीं अधिक था; यह सामाजिक न्याय के लिए मुलायम के आजीवन संघर्ष का परिणाम था। पार्टी का प्रतीक, साइकिल, आम आदमी की सशक्तिकरण की यात्रा का एक रूपक बन गया। मुलायम के नेतृत्व में, समाजवादी पार्टी ने जल्दी ही लोकप्रियता हासिल की, विशेषकर पिछड़े वर्गों में, जिन्होंने उनमें एक ऐसा नेता देखा जो उनके संघर्षों और आकांक्षाओं को समझता था।

मुलायम सिंह यादव के जीवन के इस अध्याय में उत्तर प्रदेश में एक मजबूत राजनीतिक शक्ति के रूप में उनके उदय और समाजवादी पार्टी के जन्म का वर्णन किया गया है, जो भारतीय राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। मुलायम की कहानी उनके दृष्टिकोण, साहस, और सामाजिक न्याय के प्रति अटूट प्रतिबद्धता का प्रमाण है। सैफई के एक छोटे से गाँव से लेकर लखनऊ और उससे आगे सत्ता के गलियारों तक की उनकी यात्रा लचीलापन, दृढ़ संकल्प, और एक अधिक समान समाज की निरंतर खोज की कहानी है।

अध्याय: समाजवादी गठबंधन के शिल्पकार

1990 के दशक की शुरुआत में, भारत के राजनीतिक परिदृश्य में एक गहरा बदलाव हो रहा था। 1991 में प्रधानमंत्री पी.वी. नरसिम्हा राव द्वारा शुरू की गई आर्थिक उदारीकरण की नीति ने देश के बाजारों को खोलना शुरू कर दिया था और आर्थिक वृद्धि के एक नए युग का मार्ग प्रशस्त किया था। हालांकि, इस बदलाव ने अमीर और गरीब के बीच बढ़ती असमानता को भी जन्म दिया, जिससे मौजूदा सामाजिक तनाव बढ़ गया। इस तेजी से बदलते माहौल में, मुलायम सिंह यादव हाशिए पर रहने वालों के अधिकारों के पक्षधर के रूप में उभरे, और खुद को एक ऐसे समाजवादी गठबंधन के शिल्पकार के रूप में स्थापित किया जो स्थापित सत्ता संरचनाओं को चुनौती देने का प्रयास करता था।

1992 में समाजवादी पार्टी का गठन एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर था, लेकिन मुलायम जानते थे कि वास्तविक बदलाव लाने के लिए, उन्हें समान विचारधारा वाले नेताओं और पार्टियों का एक व्यापक गठबंधन बनाना होगा। उन्होंने अन्य क्षेत्रीय नेताओं के साथ संपर्क बनाना शुरू किया, जो उनकी तरह समाजवादी सिद्धांतों और पिछड़े वर्गों के उत्थान के प्रति प्रतिबद्ध थे। इस अवधि में, मुलायम ने ऐसे गठबंधन बनाए जो उत्तर प्रदेश और इस प्रकार पूरे भारत की राजनीतिक गतिशीलता को फिर से परिभाषित करेंगे।

इस समय के दौरान मुलायम के प्रमुख सहयोगियों में से एक थे कांशीराम, जिन्होंने बहुजन समाज पार्टी (बीएसपी) की स्थापना की थी, जो मुख्य रूप से दलितों का प्रतिनिधित्व करती थी। समाजवादी पार्टी और बीएसपी के बीच का गठबंधन, भले ही यह जटिलताओं से भरा हुआ था, लेकिन यह एक रणनीतिक मास्टरस्ट्रोक था। पिछड़े वर्गों और दलितों—भारत के दो सबसे हाशिए पर रहने वाले समूहों—को एक साथ लाकर, मुलायम और कांशीराम ने एक ऐसी शक्तिशाली राजनीतिक ताकत बनाने का प्रयास किया जो उत्तर प्रदेश में ऊंची जातियों और कांग्रेस पार्टी के प्रभुत्व को चुनौती दे सके।

1993 का उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव इस गठबंधन के लिए एक अग्निपरीक्षा था। समाजवादी पार्टी-बीएसपी गठबंधन ने सामाजिक न्याय, धर्मनिरपेक्षता, और अल्पसंख्यक अधिकारों की रक्षा के मंच पर चुनाव लड़ा। मुलायम, जो अपनी जमीनी कनेक्शन के लिए जाने जाते थे, और कांशीराम, जिन्हें दलितों का सम्मान प्राप्त था, ने अपने-अपने आधार को एकजुट किया, और शोषितों के बीच एकता की आवश्यकता पर जोर दिया।

1993 के चुनावों के परिणाम मुलायम की रणनीति की पुष्टि थे। समाजवादी पार्टी-बीएसपी गठबंधन ने बड़ी संख्या में सीटें जीतीं, और भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) को स्पष्ट बहुमत से वंचित कर दिया। मुलायम सिंह यादव ने बीएसपी के समर्थन से दूसरी बार मुख्यमंत्री पद की शपथ ली। यह जीत सिर्फ एक चुनावी सफलता नहीं थी; यह विभाजन की राजनीति के खिलाफ एक शक्तिशाली बयान थी और शोषितों के एकजुट मोर्चे की क्षमता की पुष्टि थी।

मुख्यमंत्री के रूप में मुलायम के दूसरे कार्यकाल को उनकी सामाजिक कल्याण योजनाओं पर निरंतर ध्यान देने के लिए चिह्नित किया गया था। उन्होंने गरीबों की जीवन स्थितियों में सुधार के उद्देश्य से विभिन्न योजनाएँ शुरू कीं, जिनमें लड़कियों के लिए मुफ्त शिक्षा, हाशिए पर रहने वाले समुदायों के छात्रों के लिए छात्रवृत्ति, और ग्रामीण विकास के लिए बढ़ी हुई धनराशि शामिल थी। मुलायम ने बुनियादी ढांचे के विकास को भी प्राथमिकता दी, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में सड़कों और बिजली में सुधार पर ध्यान केंद्रित करते हुए, यह मानते हुए कि ये शहरी-ग्रामीण विभाजन को पाटने के लिए महत्वपूर्ण थे।

हालांकि, समाजवादी पार्टी और बीएसपी के बीच गठबंधन चुनौतियों से मुक्त नहीं था। मुलायम सिंह यादव और कांशीराम के बीच का संबंध जटिल था, जिसमें आपसी सम्मान था, लेकिन साथ ही महत्वपूर्ण वैचारिक और रणनीतिक मतभेद भी थे। जहां दोनों नेता सामाजिक न्याय के प्रति प्रतिबद्ध थे, वहीं उनके दृष्टिकोण अक्सर अलग हो जाते थे।

इसके बावजूद, भारतीय राजनीति में मुलायम सिंह यादव का प्रभाव बढ़ता रहा। समाजवादी पार्टी-बीएसपी गठबंधन बनाने और उसका नेतृत्व करने के अनुभव ने उन्हें गठबंधन की राजनीति की शक्ति दिखा दी थी, विशेषकर एक विविध और जटिल देश में जैसे भारत। मुलायम ने कांग्रेस पार्टी के प्रभुत्व और राष्ट्रीय स्तर पर भाजपा के बढ़ते प्रभाव को चुनौती देने के लिए एक व्यापक, अखिल-भारतीय समाजवादी और धर्मनिरपेक्ष ताकतों के गठबंधन के निर्माण पर ध्यान केंद्रित करना शुरू कर दिया।

मुलायम का राष्ट्रीय नेता के रूप में कद तब और मजबूत हो गया जब वह 1996 के आम चुनावों के बाद सत्ता में आई संयुक्त मोर्चा सरकार में एक प्रमुख खिलाड़ी बने, जो क्षेत्रीय और वामपंथी दलों का एक गठबंधन था। मुलायम को संयुक्त मोर्चा सरकार में रक्षा मंत्री के रूप में नियुक्त किया गया, जो राष्ट्रीय राजनीति में उनकी प्रविष्टि का प्रतीक था। रक्षा मंत्री के रूप में, मुलायम ने अपनी विशिष्ट व्यावहारिकता और लोगों के कल्याण पर ध्यान केंद्रित किया, भारत की सशस्त्र सेनाओं के आधुनिकीकरण की वकालत की, जबकि यह भी सुनिश्चित किया कि ग्रामीण पृष्ठभूमि के सैनिकों के हितों की रक्षा की जाए।

रक्षा मंत्री के रूप में अपने कार्यकाल के दौरान, मुलायम ने भारत के अस्थिर सुरक्षा माहौल, विशेष रूप से कारगिल युद्ध के बाद की चुनौतियों से निपटने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सशस्त्र बलों की क्षमताओं को बढ़ाने और सैन्य कर्मियों के कल्याण के समर्थन पर उनके जोर ने उन्हें राजनीतिक स्पेक्ट्रम में सम्मान दिलाया।

समाजवादी और धर्मनिरपेक्ष ताकतों के एक राष्ट्रीय गठबंधन के निर्माण के लिए मुलायम के प्रयास 1998 में राष्ट्रीय लोकतांत्रिक मोर्चा (राष्ट्ररीय लोकतांत्रिक मोर्चा) के गठन में परिणत हुए, जो विभिन्न क्षेत्रीय और वामपंथी दलों को एक बैनर के तहत लाने का प्रयास था। हालांकि यह मोर्चा अल्पकालिक था, इसने एकजुट विपक्ष के

विचार के प्रति मुलायम की अटूट प्रतिबद्धता का प्रदर्शन किया, जो भाजपा और कांग्रेस को एक विश्वसनीय विकल्प प्रदान कर सके।

जैसे-जैसे मुलायम सिंह यादव ने गठबंधन की राजनीति की जटिल दुनिया को नेविगेट किया, उनकी दृष्टि स्पष्ट रही: एक अधिक न्यायसंगत समाज का निर्माण करना जहां हाशिए पर रहने वालों की शासन में आवाज हो। सैफई के कुश्ती अखाड़ों से लेकर नई दिल्ली के रक्षा मंत्रालय तक का उनका सफर उनके लचीलापन, रणनीतिक कौशल, और सामाजिक न्याय के प्रति अटूट प्रतिबद्धता का प्रमाण था। चुनौतियों और असफलताओं के बावजूद, राजनीतिक दलों या जनता के बीच गठबंधन की शक्ति में मुलायम का विश्वास अडिग रहा।

मुलायम के जीवन के इस अध्याय में एक मास्टर रणनीतिकार और गठबंधन निर्माता के रूप में उनकी भूमिका पर प्रकाश डाला गया है, जिन्होंने समझा कि भारत जैसे विविध और जटिल देश में प्रगति केवल एकता और सामूहिक कार्रवाई के माध्यम से ही प्राप्त की जा सकती है। उनकी कहानी प्रेरणा देती है, क्योंकि वह तेजी से बदलती दुनिया में समानता और न्याय के संघर्ष के प्रतीक बने हुए हैं।

अध्याय: राष्ट्रीय मंच और राजनीति

मुलायम सिंह यादव का भारतीय राजनीति पर प्रभाव बढ़ता रहा, लेकिन उनके राजनीतिक जीवन की जटिलताएं भी बढ़ती गईं। उत्तर प्रदेश में एक महत्वपूर्ण व्यक्ति के रूप में स्थापित होने के बाद, मुलायम ने राष्ट्रीय स्तर पर अधिक ध्यान केंद्रित करना शुरू किया, जहां उनका अनुभव, रणनीतिक समझ, और भारत के सामाजिक-राजनीतिक ताने-बाने की गहरी समझ उन्हें एक मजबूत नेता के रूप में स्थापित करती थी। हालांकि वे राष्ट्रीय राजनीति की जटिलताओं को समझते गए

2000 के दशक की शुरुआत भारतीय राजनीति में महत्वपूर्ण बदलाव का दौर था। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में केंद्र में एक प्रमुख शक्ति के रूप में उभरी थी। दूसरी ओर, कभी भारतीय राजनीति की निर्विवाद नेता रही कांग्रेस पार्टी अपनी स्थिति को पुनः प्राप्त करने के लिए संघर्ष कर रही थी। इस बदलते परिदृश्य में, मुलायम सिंह यादव जैसे क्षेत्रीय नेताओं ने देश की राजनीतिक दिशा को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

2003 में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री के रूप में मुलायम की वापसी, राज्य में राजनीतिक अस्थिरता की एक संक्षिप्त अवधि के बाद, उनके करियर के एक नए चरण की शुरुआत थी। इस कार्यकाल को क्षेत्रीय चिंताओं को व्यापक राष्ट्रीय एजेंडे के साथ संतुलित करने के उनके प्रयासों के लिए जाना गया। मुलायम ने उत्तर प्रदेश में कानून और व्यवस्था में सुधार पर ध्यान केंद्रित किया, जो वर्षों से बिगड़ चुकी थी, और एक ऐसे राज्य में आर्थिक विकास को बढ़ावा देने का प्रयास किया जो औद्योगिक विकास और बुनियादी ढांचे के मामले में लंबे समय से पिछड़ा हुआ था।

इस अवधि के दौरान, मुलायम ने उत्तर प्रदेश से परे अपने प्रभाव को बढ़ाने के लिए अन्य क्षेत्रीय दलों और नेताओं के साथ गठबंधन बनाने का प्रयास किया, जो उनके धर्मनिरपेक्ष और समाजवादी भारत के दृष्टिकोण को साझा करते थे। उन्होंने थर्ड फ्रंट के गठन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जो गैर-कांग्रेसी, गैर-भाजपा दलों का एक गठबंधन था, जिसका उद्देश्य दोनों राष्ट्रीय दिग्गजों के लिए एक विकल्प प्रस्तुत करना था। मुलायम की नेतृत्व क्षमता और अनुभव ने उन्हें इस गठबंधन का नेतृत्व करने के लिए स्वाभाविक रूप से उपयुक्त बना दिया, और वे राष्ट्रीय राजनीतिक चर्चा के एक प्रमुख व्यक्ति बन गए।

हालांकि, थर्ड फ्रंट का राष्ट्रीय राजनीति पर प्रभाव सीमित था। जबकि इसने राष्ट्रीय संवाद में क्षेत्रीय आवाज़ों के लिए जगह बनाई, गठबंधन क्षेत्रीय हितों और व्यक्तित्वों के अलग-अलग होने के कारण एकजुटता और समरसता बनाए रखने में संघर्ष करता रहा। भाजपा के बढ़ते प्रभुत्व और सोनिया गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस के पुनरुत्थान ने गठबंधन को एकजुट रखने के मुलायम के प्रयासों को और जटिल बना दिया। इन चुनौतियों के बावजूद, मुलायम

एक महत्वपूर्ण खिलाड़ी बने रहे, और अक्सर उस समय के अस्थिर राजनीतिक माहौल में निर्णायक भूमिका निभाते रहे।

जैसे-जैसे मुलायम सिंह यादव का राष्ट्रीय कद बढ़ा, अखिलेश यादव, जिन्होंने विदेश में शिक्षा प्राप्त की थी धीरे-धीरे पार्टी के भीतर एक महत्वपूर्ण व्यक्ति के रूप में उभरे। अखिलेश के उदय को मुलायम द्वारा समाजवादी पार्टी को आधुनिक बनाने और उन युवा मतदाताओं को आकर्षित करने के लिए एक रणनीतिक कदम के रूप में देखा गया, जो तेजी से ऐसे नेताओं की तलाश कर रहे थे जो परंपरा और आधुनिकता के बीच की खाई को पाट सकें।

2012 में, मुलायम ने राज्य की राजनीति की अग्रिम पंक्ति से महत्वपूर्ण कदम पीछे हटाते हुए, उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनावों में अखिलेश को समाजवादी पार्टी के मुख्यमंत्री पद के उम्मीदवार के रूप में पदोन्नत करने का निर्णय लिया। यह निर्णय व्यावहारिक और प्रतीकात्मक दोनों था—व्यावहारिक इसलिए क्योंकि अखिलेश की युवा और आधुनिक दृष्टिकोण नई पीढ़ी के मतदाताओं के साथ मेल खाता था, और प्रतीकात्मक इसलिए क्योंकि इसने पार्टी के नेतृत्व में एक नए युग की शुरुआत की। अखिलेश की चुनावों में बाद की जीत और मुख्यमंत्री पद पर उनकी ताजपोशी मुलायम के लिए गर्व का क्षण था, जिन्होंने अपने बेटे में अपनी राजनीतिक विरासत की निरंतरता देखी।

मुलायम सिंह यादव की पिछड़े वर्गों, अल्पसंख्यकों और गरीबों के चैंपियन के रूप में विरासत बरकरार रही। भारतीय राजनीति में उनके योगदान, विशेष रूप से हाशिए पर पड़े लोगों के उत्थान और उच्च जातियों और अभिजात वर्ग के प्रभुत्व को चुनौती देने के उनके प्रयास, देश भर में लाखों लोगों के साथ प्रतिध्वनित होते रहे। भले ही उन्होंने सक्रिय राजनीति से एक कदम पीछे ले लिया हो, लेकिन उनके द्वारा स्थापित और पोषित पार्टी के फैसलों और कार्यों में मुलायम का प्रभाव महसूस किया गया।

जैसे-जैसे मुलायम अपने राजनीतिक करियर की संध्या में प्रवेश कर रहे थे, वे एक सम्मानित बुजुर्ग राजनेता बने रहे, जिनकी जीवन कहानी दृढ़ता की शक्ति, रणनीतिक गठबंधनों के महत्व, और राजनीति की दुनिया में पारिवारिक गतिशीलता को नेविगेट करने की जटिलताओं का प्रमाण थी। सैफई के कुश्ती अखाड़ों से लेकर लखनऊ और नई दिल्ली के सत्ता गलियारों तक की उनकी यात्रा में जीत और चुनौतियों दोनों का सामना करना पड़ा था, लेकिन इन सबके बावजूद, मुलायम अपने सामाजिक न्याय और समानता के मूल सिद्धांतों के प्रति सच्चे बने रहे।

मुलायम सिंह यादव के जीवन के इस अध्याय में राष्ट्रीय राजनीति और पारिवारिक गतिशीलता के बीच के जटिल अंतरसंबंध का पता लगाया गया है, और अगली पीढ़ी को नेतृत्व सौंपने के साथ-साथ उनके राजनीतिक करियर को परिभाषित करने वाले आदर्शों और मूल्यों को संरक्षित करने की चुनौतियों को उजागर किया गया है। जैसे-जैसे मुलायम की कहानी आगे बढ़ती गई, यह स्पष्ट हो गया कि उनकी विरासत न केवल उनके अपने कार्यों से बल्कि उनके नक्शेकदम पर चलने वाले लोगों के विकल्पों और निर्णयों से भी आकार लेगी।

अध्याय: समाजवादी दिग्गज की विरासत

जैसे-जैसे समय बीता, एक महान नेता के रूप में उनकी विरासत अब भी बरकरार रही। उनके लंबे करियर की संघर्ष और सफलताएँ उत्तर प्रदेश और पूरे भारत के राजनीतिक परिदृश्य पर अमिट छाप छोड़ चुकी थीं। भले ही वे धीरे-धीरे सार्वजनिक जीवन से पीछे हट रहे थे, लेकिन उन्होंने जिन सिद्धांतों की वकालत की—सामाजिक न्याय, धर्मनिरपेक्षता, और हाशिये पर खड़े लोगों का सशक्तिकरण—वे समाजवादी पार्टी और देश के व्यापक राजनीतिक विमर्श में केंद्रीय बने रहे।

अपने अंतिम वर्षों में, मुलायम एक सलाहकार और वरिष्ठ राजनेता की भूमिका में स्थानांतरित हो गए, जो समाजवादी पार्टी के भीतर अगली पीढ़ी के नेताओं को मार्गदर्शन दे रहे थे। उनके बेटे, अखिलेश यादव, जो पार्टी की बागडोर संभाल चुके थे और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री के रूप में सेवा कर चुके थे, अक्सर कठिन समय में अपने पिता की सलाह लेते थे। मुलायम की बुद्धिमत्ता और अनुभव अखिलेश को नेतृत्व की जटिलताओं को नेविगेट करने में अमूल्य थे।

मुलायम का स्थायी प्रभाव केवल उनके परिवार या पार्टी तक सीमित नहीं था; यह व्यापक राजनीतिक क्षेत्र में भी फैला हुआ था। भारतीय राजनीति में उनके योगदान, विशेष रूप से पिछड़े वर्गों और अल्पसंख्यकों के कारणों की वकालत में, राजनीतिक स्पेक्ट्रम में व्यापक रूप से मान्यता और सम्मान प्राप्त किया गया। विभिन्न दलों के नेता, जिनमें उनके पूर्व प्रतिद्वंद्वी भी शामिल थे, ने आधुनिक भारतीय राजनीति को आकार देने में मुलायम की भूमिका और समाजवाद और धर्मनिरपेक्षता के सिद्धांतों के प्रति उनकी अटूट प्रतिबद्धता को स्वीकार किया।

मुलायम की विरासत का एक प्रमुख पहलू विभिन्न सामाजिक समूहों के बीच एक व्यापक समर्थन गठबंधन बनाने और बनाए रखने की उनकी क्षमता थी। अपने पूरे करियर के दौरान, मुलायम ने विभिन्न जातियों, समुदायों और क्षेत्रीय हितों को समाजवादी पार्टी के बैनर तले सफलतापूर्वक एकजुट किया था। राजनीति के प्रति उनका जमीनी दृष्टिकोण, जिसमें लोगों के साथ सीधे जुड़ाव और उनकी तत्काल चिंताओं को संबोधित करने पर जोर दिया गया, ने उन्हें लाखों लोगों की वफादारी और विश्वास अर्जित किया।

भले ही भारत का राजनीतिक परिदृश्य नए दलों के उदय और पहचान की राजनीति के बढ़ते प्रभाव के साथ विकसित होता रहा, मुलायम की समावेशी और न्यायसंगत समाज की दृष्टि प्रासंगिक रही। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री के रूप में अपने कार्यकाल के दौरान उन्होंने जो नीतियां और कार्यक्रम लागू किए थे, विशेष रूप से शिक्षा, ग्रामीण विकास और सामाजिक कल्याण के क्षेत्रों में, वे उत्तर प्रदेश के लोगों को लाभान्वित करते रहे और भविष्य के नेताओं के लिए शासन का एक मानक स्थापित करते रहे।

मुलायम की विरासत समाजवादी पार्टी को आकार देने के तरीके में भी परिलक्षित होती थी। उनके नेतृत्व में, पार्टी उत्तर प्रदेश में एक क्षेत्रीय शक्ति से राष्ट्रीय राजनीति में एक महत्वपूर्ण खिलाड़ी बन गई थी। समाजवादी पार्टी का प्रभाव उत्तर प्रदेश की सीमाओं से परे फैला हुआ था, अन्य राज्यों में इसकी उपस्थिति थी और राष्ट्रीय विमर्श में इसकी आवाज़ थी। बदलती राजनीतिक वास्तविकताओं के अनुकूल होने की मुलायम की क्षमता, जबकि अपने मूल सिद्धांतों के प्रति सच्चे रहना, तेजी से बदलती दुनिया में पार्टी की प्रासंगिकता सुनिश्चित की थी।

जैसे-जैसे मुलायम सिंह यादव का स्वास्थ्य बिगड़ने लगा, उनके भारतीय राजनीति में योगदान की मान्यता बढ़ती गई। पूरे राजनीतिक स्पेक्ट्रम से श्रद्धांजलि दी गई, नेताओं और टिप्पणीकारों ने देश के राजनीतिक और सामाजिक ताने-बाने पर उनके प्रभाव पर विचार किया। मुलायम को अक्सर एक ऐसे नेता के रूप में वर्णित किया जाता था, जिन्होंने न केवल दबे-कुचले लोगों के अधिकारों के लिए लड़ाई लड़ी, बल्कि एक ऐसे नेता भी जिन्होंने आपातकाल और 1990 के दशक में सांप्रदायिक राजनीति के उदय जैसे चुनौतीपूर्ण समय में भारत के लोकतांत्रिक मूल्यों को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

मुलायम की विरासत उन मुद्दों के निरंतर महत्व में भी स्पष्ट थी, जिनकी उन्होंने वकालत की थी। सामाजिक न्याय, समानता और धर्मनिरपेक्षता के लिए संघर्ष दिन के राजनीतिक विमर्श के केंद्र में बने रहे। पिछड़े वर्गों, अल्पसंख्यकों और ग्रामीण आबादी द्वारा सामना की जाने वाली चुनौतियों ने राजनीतिक दलों की नीतियों और मंचों को आकार देना जारी रखा, जिसमें समाजवादी पार्टी भी शामिल थी। मुलायम के जीवन का कार्य इन चल रहे संघर्षों के लिए आधारशिला रख चुका था, और उनके बाद आने वाले लोगों की नीतियों और कार्यों में उनका प्रभाव देखा जा सकता था।

अपने जीवन के अंतिम वर्षों में, मुलायम सिंह यादव एक सम्मानित व्यक्ति बने रहे, न केवल अपनी पार्टी के भीतर बल्कि पूरे देश में। उनकी कहानी दृढ़ता, रणनीतिक सोच और सामाजिक न्याय के कारण के प्रति अटूट प्रतिबद्धता की शक्ति का प्रमाण थी। भले ही उन्होंने सक्रिय राजनीति से धीरे-धीरे पीछे हटना शुरू कर दिया, लेकिन उनकी विरासत भविष्य की पीढ़ियों के नेताओं और कार्यकर्ताओं को प्रेरित करती रही, जो भारत में समाजवाद और समानता की मशाल को आगे ले जाने की कोशिश कर रहे थे।

मुलायम का निधन भारतीय राजनीति में एक युग का अंत था, लेकिन उनका प्रभाव जीवित रहा। जिन मूल्यों की उन्होंने वकालत की, जिन गठबंधनों को उन्होंने बनाया और जिन लड़ाइयों को उन्होंने लड़ा, वे राष्ट्र की सामूहिक स्मृति का हिस्सा बन गए। उनका जीवन इस बात की याद दिलाने वाला था कि हाशिए पर खड़े लोगों के लिए खड़ा होना, विभिन्न समुदायों के बीच पुल का निर्माण करना और भारत जैसे विविध और जटिल देश में समाजवाद की स्थायी प्रासंगिकता कितनी महत्वपूर्ण है।

मुलायम सिंह यादव की विरासत केवल उन नीतियों में नहीं थी जिन्हें उन्होंने लागू किया या चुनावों में जीता; यह उन अनगिनत जीवनों में थी जिन्हें उन्होंने छुआ, जिन आंदोलनों को उन्होंने प्रेरित किया और जिन आदर्शों को उन्होंने बनाए रखा। सैफई के एक विनम्र गाँव से राजनीतिक शक्ति के शिखर तक की उनकी यात्रा दृढ़ता,

संकल्प और लोगों की शक्ति में गहरी जड़ें वाली विश्वास की कहानी थी। जैसे-जैसे भारत 21वीं सदी की चुनौतियों से जूझता रहा, मुलायम सिंह यादव के जीवन के सबक उतने ही प्रासंगिक बने रहे, जो राष्ट्र को अधिक समानता और न्याय के भविष्य की ओर मार्गदर्शन करते हैं।



अध्याय: भविष्य की संभावनाएं

मुलायम सिंह यादव के निधन के साथ ही उत्तर प्रदेश और भारत की राजनीतिक परिदृश्य को एक ऐसे व्यक्ति की विरासत को आत्मसात करने का अवसर मिला, जिन्होंने लगभग पांच दशकों तक देश के महत्वपूर्ण संघर्षों में अग्रणी भूमिका निभाई थी। हालांकि देश ने उनके योगदान को सराहा, लेकिन आगे की चुनौतियों का भी आभास हो रहा था। जिन लक्ष्यों के लिए मुलायम ने संघर्ष किया—सामाजिक न्याय, हाशिये पर खड़े लोगों का सशक्तिकरण, और धर्मनिरपेक्षता का संरक्षण—वे आज भी उतने ही महत्वपूर्ण थे, लेकिन उन्हें प्राप्त करने का मार्ग नई जटिलताओं और अनिश्चितताओं से भरा हुआ था।

समाजवादी पार्टी, अब अखिलेश यादव के नेतृत्व में, एक महत्वपूर्ण मोड़ पर खड़ी थी। पार्टी की नींव मुलायम के मूल्यों और दृष्टिकोण पर टिकी थी, लेकिन राजनीतिक माहौल अब काफी बदल चुका था। अखिलेश, पार्टी का आधुनिकीकरण करने और युवा मतदाताओं से जुड़ने के प्रयास कर रहे थे

अखिलेश यादव का नेतृत्व वादों और उथल-पुथल दोनों से भरा हुआ था। उनके मुख्यमंत्री कार्यकाल के दौरान बुनियादी ढांचे के विकास, शिक्षा और सामाजिक कल्याण में महत्वपूर्ण प्रगति हुई, लेकिन इसके साथ ही पार्टी में आंतरिक संघर्ष और सार्वजनिक रूप से खेली गई पारिवारिक कलह ने उनकी छवि को प्रभावित किया। अपने पिता के निधन के बाद नेतृत्व का भार उठाते हुए अखिलेश इस बात से भली-भांति अवगत थे कि उन्हें जो विरासत मिली है, वह एक ओर शक्ति का स्रोत थी, तो दूसरी ओर एक भारी जिम्मेदारी भी थी।

इन चुनौतियों का सामना करते हुए, अखिलेश यादव ने पार्टी के एजेंडे को फिर से परिभाषित करने का प्रयास किया, जबकि इसके मूल सिद्धांतों के प्रति वफादार बने रहे। उन्होंने समावेशी विकास की आवश्यकता पर जोर दिया, जिसमें शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल और रोजगार सृजन पर ध्यान केंद्रित किया गया। प्रौद्योगिकी और नवाचार के बढ़ते महत्व को स्वीकार करते हुए, अखिलेश ने डिजिटल साक्षरता और बुनियादी ढांचे के आधुनिकीकरण को पार्टी के मंच के प्रमुख घटकों के रूप में आगे बढ़ाया। फिर भी, जब उन्होंने पार्टी के लिए एक नया मार्ग तैयार करने की कोशिश की, तो अखिलेश अपने पिता की विरासत का सम्मान करने और उस पर निर्माण करने की आवश्यकता के प्रति सचेत रहे। इन मुद्दों को संबोधित करने के लिए एक सूक्ष्म और बहुआयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता थी, जिसमें सामाजिक न्याय के प्रति मुलायम की प्रतिबद्धता को आधुनिक युग के लिए नवाचारी समाधान के साथ जोड़ा गया हो।

इस संदर्भ में, मुलायम सिंह यादव की विरासत एक मार्गदर्शक और एक चुनौती दोनों के रूप में कार्य करती थी। उनका जीवन का कार्य उन लोगों को आवाज़ देने के बारे में था जिनकी आवाज़ नहीं सुनी गई थी, यथास्थिति को चुनौती देने के बारे में था, और एक अधिक न्यायपूर्ण और न्यायसंगत समाज बनाने के बारे में था। इस विरासत को आगे ले जाने का कार्य अखिलेश और समाजवादी नेताओं की नई पीढ़ी पर पड़ा, जिन्हें 21वीं सदी के भारत की वास्तविकताओं के लिए मुलायम की दृष्टि को अनुकूलित करने के तरीके खोजने पड़े।

समाजवादी पार्टी और भारत में व्यापक समाजवादी आंदोलन का भविष्य इस बात पर निर्भर करता था कि इसके नेता नवाचार करने में सक्षम हैं जबकि उन मूल्यों के प्रति वफादार हैं जिनकी वकालत मुलायम ने की थी। इसके लिए बदलती सामाजिक गतिशीलता की गहरी समझ, साहसी और कभी-कभी कठिन निर्णय लेने का साहस और समावेशिता, समानता और न्याय के सिद्धांतों के प्रति प्रतिबद्धता की आवश्यकता थी, जिन्होंने मुलायम के करियर को परिभाषित किया था।

जैसे-जैसे समय बीतता गया, मुलायम सिंह यादव की विरासत ने उन लोगों को प्रेरित करना जारी रखा जो सामाजिक न्याय के कारण में विश्वास करते थे। उनका जीवन दृढ़ संकल्प, लचीलापन और लोगों के प्रति गहरी प्रतिबद्धता की शक्ति का प्रमाण था। जबकि भारत का राजनीतिक परिदृश्य बदलता रहा, मुलायम के लिए जिन आदर्शों की उन्होंने लड़ाई लड़ी, वे उतने ही प्रासंगिक बने रहे, राष्ट्र को उस भविष्य की ओर मार्गदर्शन करते रहे जहां समानता और न्याय के सपने सभी के लिए साकार हो सकें।

जैसे ही मुलायम सिंह यादव की यात्रा समाप्त हुई, भारत ने उस व्यक्ति का मूल्यांकन करना शुरू किया जिसने इसके राजनीतिक परिदृश्य को गहराई से प्रभावित किया था। उनके निधन के बाद के दिनों और हफ्तों में, पूरे देश से श्रद्धांजलि की बाढ़ आ गई। राजनीतिक स्पेक्ट्रम के हर कोने से, उनके कट्टर समर्थकों से लेकर उनके सबसे कड़े विरोधियों तक, सभी ने उनके अदम्य साहस, सामाजिक न्याय के प्रति उनकी अटूट प्रतिबद्धता और भारतीय जनता की गहरी समझ की सराहना की।

उत्तर प्रदेश के लोग, जिनकी सेवा मुलायम ने इतनी निष्ठा से की थी, उनकी कमी को सबसे पहले महसूस करने वालों में से थे। राज्य के हृदय क्षेत्र में, जहां उनका प्रभाव सबसे अधिक महसूस किया गया था, हजारों लोग उन्हें श्रद्धांजलि देने के लिए एकत्र हुए। सैफई और उसके बाहर के गांवों से आए ग्रामीणों ने, जिनके जीवन को उनकी नीतियों और कार्यक्रमों ने छुआ था, उनके बारे में केवल एक राजनीतिज्ञ के रूप में नहीं बल्कि माटी के बेटे के रूप में बात की - एक ऐसा नेता जिसने उनके संघर्षों को समझा और उनके जीवन को बेहतर बनाने के लिए अथक प्रयास किया।

उनके निधन के बाद हुए स्मरणोत्सव और जुलूसों ने मुलायम द्वारा लोगों के साथ बनाए गए गहरे संबंधों की गवाही दी। उनकी विरासत केवल राजनीतिक उपलब्धियों की नहीं थी, बल्कि व्यक्तिगत संबंधों की थी जो दशकों के जमीनी स्तर पर जुड़ाव के माध्यम से बनाई गई थी। वह एक ऐसे नेता थे जिन्होंने जितना समय उत्तर प्रदेश के धूल भरे गांवों में बिताया था, उतना ही समय लखनऊ और नई दिल्ली के सत्ता गलियारों में भी बिताया था, और लोगों के प्रति यही निकटता उन्हें इतने लोगों के लिए प्रिय बना दिया था।

फिर भी, जब राष्ट्र ने उनके जीवन और योगदान पर विचार किया, तो उनके द्वारा छोड़े गए अधूरे कार्यों की भी एक बढ़ती हुई स्वीकृति थी। एक अधिक न्यायपूर्ण और न्यायसंगत समाज का मुलायम का सपना - एक ऐसा

समाज जिसमें पिछड़े वर्ग, अल्पसंख्यक और अन्य हाशिए पर रहने वाले समूह गरिमा और सुरक्षा के साथ रह सकें - एक आकांक्षा बनी हुई थी न कि वास्तविकता। उनके पूरे करियर के दौरान जिन चुनौतियों का उन्होंने सामना किया था, वे जातिगत भेदभाव से लेकर सांप्रदायिक तनाव तक, अभी भी कायम थीं, और कुछ हद तक, और अधिक गहरी हो गई थीं।

समाजवादी पार्टी के लिए, मुलायम का निधन एक युग के अंत को चिह्नित करता है। पार्टी उनके व्यक्तित्व से अभिन्न रूप से जुड़ी हुई थी, और उनके जाने के साथ ही, इसे तेजी से बदलते राजनीतिक वातावरण में खुद को फिर से परिभाषित करने का कठिन कार्य करना पड़ा। अखिलेश यादव, अब पूरी तरह से प्रभारी थे, उनके पास इन अनिश्चित समय में पार्टी को आगे बढ़ाने की जिम्मेदारी थी। उन्हें पार्टी के पारंपरिक आधार को नई पीढ़ी के मतदाताओं की मांगों के साथ सामंजस्य स्थापित करने की आवश्यकता थी, जबकि उनके पिता द्वारा समर्थित सिद्धांतों के प्रति वफादार बने रहे।

2022 का उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव इस बदलाव में एक महत्वपूर्ण क्षण था। अखिलेश ने भाजपा के खिलाफ एक कठोर प्रतियोगिता में समाजवादी पार्टी का नेतृत्व किया, जिसने राज्य में अपनी शक्ति मजबूत कर ली थी। चुनावों को तीव्र प्रचार द्वारा चिह्नित किया गया था, जिसमें अखिलेश ने बेरोजगारी, मुद्रास्फीति और COVID-19 महामारी से निपटने के सरकार के तरीके पर प्रकाश डाला। उन्होंने मतदाताओं को सामाजिक न्याय और धर्मनिरपेक्षता के प्रति पार्टी की लंबे समय से चली आ रही प्रतिबद्धता की याद दिलाते हुए मुलायम सिंह यादव की विरासत को भी जागृत करने का प्रयास किया।

मजबूत प्रदर्शन के बावजूद, समाजवादी पार्टी जीत से चूक गई। हालांकि, चुनाव परिणाम मुलायम के आदर्शों की हार का संकेत नहीं थे; बल्कि, उन्होंने पार्टी के विकास की आवश्यकता पर बल दिया, जबकि उनके दृष्टिकोण को अपने केंद्र में बनाए रखा। अखिलेश यादव ने परिणाम पर विचार करते हुए, पार्टी में उनके पिता द्वारा डाले गए मूल्यों के लिए संघर्ष जारी रखने की कसम खाई।

राष्ट्रीय स्तर पर, मुलायम की विरासत ने राजनीतिक प्रवचन को प्रभावित करना जारी रखा। पिछड़े वर्गों के अधिकारों की वकालत करने में उनकी भूमिका ने अन्य क्षेत्रीय नेताओं और दलों के लिए एक मिसाल कायम की थी, जिनमें से कई ने अपनी चुनौतियों का सामना करते हुए उनके उदाहरण को देखा। क्षेत्रीय दलों के गठबंधन का विचार, एक अवधारणा जिसे मुलायम ने तीसरे मोर्चे के गठन के माध्यम से समर्थन दिया था, दो प्रमुख राष्ट्रीय दलों के वर्चस्व के विकल्प के रूप में प्रासंगिक रहा। यद्यपि मुलायम के समय के दौरान तीसरे मोर्चे ने स्थायी सफलता प्राप्त नहीं की थी, लेकिन राष्ट्रीय राजनीति को प्रभावित करने वाले क्षेत्रीय शक्ति ब्लॉकों की धारणा बनी रही।

राजनीति से परे, सामाजिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में भी मुलायम का प्रभाव महसूस किया गया। विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा पर उनके जोर ने कई स्कूलों और कॉलेजों की स्थापना की, जो उत्तर प्रदेश के लोगों की

सेवा करना जारी रखते हैं। किसानों और श्रमिकों के अधिकारों के लिए उनकी वकालत ने कृषि संकट और श्रम अधिकारों के मुद्दों पर ध्यान आकर्षित किया, जिससे राज्य और राष्ट्रीय दोनों स्तरों पर नीतिगत परिवर्तन हुए।

जैसे-जैसे विद्वान और टिप्पणीकार मुलायम सिंह यादव के जीवन और विरासत का विश्लेषण करते गए, उन्होंने उनकी राजनीतिक यात्रा की जटिलता पर ध्यान दिया। वह एक व्यावहारिक व्यक्ति थे, जब आवश्यक हो तो कठिन निर्णय लेने और अप्रत्याशित गठबंधन बनाने के लिए तैयार थे, लेकिन वह गहरे विश्वासों वाले व्यक्ति भी थे, जो समाजवाद और धर्मनिरपेक्षता के आदर्शों के प्रति प्रतिबद्ध थे। उनका करियर सफलताओं और असफलताओं दोनों से चिह्नित रहा था, लेकिन इसके बावजूद, मुलायम ने हमेशा जनता की शक्ति में अपने मुख्य विश्वास के प्रति सच्चे रहे।

आने वाले वर्षों में, मुलायम की कहानी भारत के स्वतंत्रता के बाद के राजनीतिक विकास के व्यापक कथानक का हिस्सा बन गई। उन्हें एक ऐसे नेता के रूप में याद किया गया जो विनम्र शुरुआत से उठे और स्थापित व्यवस्था को चुनौती दी, जिन्होंने अपने प्रभाव का उपयोग हाशिए पर रहने वाले लोगों को ऊपर उठाने के लिए किया, और जिन्होंने एक ऐसी विरासत छोड़ी जो प्रेरित करती रही। उनके जीवन का जश्न किताबों, वृत्तचित्रों और अकादमिक अध्ययन में मनाया गया, जिनमें से प्रत्येक ने उस व्यक्ति के सार को पकड़ने की कोशिश की जिसे "मिट्टी का बेटा" कहा जाता था।

उत्तर प्रदेश के लोगों के लिए, मुलायम सिंह यादव की विरासत उनके दैनिक जीवन में जीवित रही। उन्होंने जो स्कूल और अस्पताल स्थापित किए थे, जिन सड़कों और बुनियादी ढांचा परियोजनाओं की उन्होंने वकालत की थी, और जिन सामाजिक कल्याण कार्यक्रमों को उन्होंने लागू किया था, वे राज्य के लोगों को लाभान्वित करना जारी रखते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों के विकास के लिए, महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए, और अल्पसंख्यक अधिकारों की रक्षा के लिए उनकी प्रतिबद्धता ने एक स्थायी प्रभाव छोड़ा जो आने वाली पीढ़ियों तक महसूस किया जाएगा।

जैसे-जैसे राष्ट्र आगे बढ़ता गया, मुलायम सिंह यादव के जीवन के सबक उतने ही प्रासंगिक बने रहे। उनकी कहानी लचीलापन के महत्व की याद दिलाने वाली थी, प्रतिकूलता के सामने अपने सिद्धांतों के प्रति सच्चे रहने की आवश्यकता की, और लोगों की गहरी समझ में निहित नेतृत्व की शक्ति की। उनकी विरासत आशा और दृढ़ संकल्प की थी, एक अधिक न्यायपूर्ण और न्यायसंगत समाज की संभावना में विश्वास की, और उस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए चल रहे संघर्ष की प्रतिबद्धता की।

अंततः, मुलायम सिंह यादव सिर्फ एक राजनीतिज्ञ से कहीं अधिक थे; वह भारतीय लोकतंत्र की स्थायी भावना का प्रतीक थे—एक ऐसी भावना जो बहुसंख्यक लोगों की आवाज़ पर फलती-फूलती है, और जो सभी चुनौतियों के बावजूद, सभी के लिए बेहतर भविष्य का निर्माण करने का प्रयास करती है।

अध्याय: मिट्टी का बेटा

मुलायम सिंह यादव की मृत्यु के बाद के वर्षों में भारतीय राजनीति में राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर महत्वपूर्ण परिवर्तन देखने को मिले। उनके जाने से जो शून्य उत्पन्न हुआ, उसे न केवल समाजवादी पार्टी बल्कि व्यापक राजनीतिक परिदृश्य में भी महसूस किया गया। समाजवाद, धर्मनिरपेक्षता और जमीनी स्तर पर सक्रियता में निहित मुलायम की अनूठी राजनीति ने कई क्षेत्रीय और राष्ट्रीय खिलाड़ियों की रणनीतियों और विचारधाराओं को आकार दिया था। जैसे-जैसे भारत नई चुनौतियों और अवसरों से जूझ रहा था, मुलायम सिंह यादव की विरासत देश के बदलते राजनीतिक परिदृश्य को समझने के लिए एक संदर्भ बिंदु बन गई।

अखिलेश यादव के नेतृत्व में समाजवादी पार्टी उत्तर प्रदेश के राजनीतिक माहौल की जटिलताओं को समझने का प्रयास करती रही। हालिया चुनावों में मिली असफलताओं के बावजूद, अखिलेश पार्टी को पुनर्जीवित करने और इसकी अपील को पारंपरिक आधार से परे विस्तारित करने के लिए प्रतिबद्ध रहे। युवाओं और शहरी मतदाताओं के बढ़ते महत्व को पहचानते हुए, उन्होंने पार्टी की छवि को आधुनिक बनाने का प्रयास किया, नए विचारों और नीतियों को पेश किया जो युवा और अधिक आकांक्षी मतदाताओं के साथ मेल खाते थे।

अखिलेश द्वारा किए गए महत्वपूर्ण परिवर्तनों में से एक राजनीति के प्रति अधिक समावेशी दृष्टिकोण की ओर बदलाव था। जहां मुलायम ने पिछड़े वर्गों, मुसलमानों और अन्य हाशिए पर पड़े समूहों का गठबंधन सफलतापूर्वक बनाया था, वहीं अखिलेश ने इस आधार को व्यापक बनाने की आवश्यकता को पहचाना। उन्होंने गैर-यादव ओबीसी, दलितों और यहां तक कि उन ऊंची जातियों के वर्गों तक पहुंच बनाना शुरू किया, जो भाजपा की राजनीति से मोहभंग महसूस कर रहे थे। यह रणनीतिक कदम एक अधिक विविध और प्रतिनिधि गठबंधन बनाने के उद्देश्य से उठाया गया था, जो राज्य में भाजपा के प्रभाव का मुकाबला कर सके।

अखिलेश के तहत शासन के प्रति पार्टी का दृष्टिकोण भी विकसित हुआ। मुख्यमंत्री के रूप में अपने पिछले कार्यकाल के दौरान आई चुनौतियों से सीख लेते हुए, उन्होंने अपने प्रशासन के प्रमुख सिद्धांतों के रूप में सुशासन, पारदर्शिता और जवाबदेही पर जोर दिया। विशेष रूप से शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल और शहरी नियोजन के क्षेत्रों में बुनियादी ढांचे के विकास को पार्टी के एजेंडे में केंद्रीय स्थान मिला। अखिलेश की सरकार ने कई प्रमुख परियोजनाओं की शुरुआत की, जिनमें प्रमुख शहरों में मेट्रो रेल सिस्टम, प्रमुख क्षेत्रों को जोड़ने वाले एक्सप्रेसवे और शहरी और ग्रामीण आबादी के बीच अंतर को पाटने के उद्देश्य से डिजिटल साक्षरता कार्यक्रम शामिल थे।

हालांकि, समाजवादी पार्टी को जिन चुनौतियों का सामना करना पड़ा, वे केवल उत्तर प्रदेश तक ही सीमित नहीं थीं। पूरे भारत में, जिन क्षेत्रीय दलों ने कभी अपने-अपने राज्यों में शक्तिशाली ताकतों के रूप में काम किया था, वे समान मुद्दों से जूझ रहे थे। एक अखिल भारतीय पार्टी के रूप में भाजपा का उदय पारंपरिक राजनीतिक

समीकरणों को बाधित कर चुका था, जिससे क्षेत्रीय नेताओं को अपनी रणनीतियों पर पुनर्विचार करने के लिए मजबूर होना पड़ा। कई लोगों के लिए, मुलायम सिंह यादव की विरासत ने गठबंधन बनाने, जमीनी स्तर पर लामबंदी करने और लोगों से जुड़े रहने के महत्व में बहुमूल्य सबक प्रदान किया।

राष्ट्रीय स्तर पर, राजनीतिक प्रवचन धर्मनिरपेक्षता और समाजवाद के आदर्शों के बीच के तनाव से आकार लेना जारी रखा, जिनका मुलायम ने समर्थन किया था, और बढ़ती बहुसंख्यक राष्ट्रवाद की लहर से। भाजपा का वर्चस्व, कांग्रेस और अन्य विपक्षी दलों की कमजोरियों के साथ, भारत के धर्मनिरपेक्ष और लोकतांत्रिक ढांचे के क्षरण के बारे में चिंताओं को जन्म दिया। इस संदर्भ में, समावेशी और बहुलवादी भारत का मुलायम का दृष्टिकोण नई प्रासंगिकता प्राप्त कर गया, जो विभाजन और बहिष्कार की राजनीति के प्रतिरूप के रूप में कार्य करता है।

अन्य क्षेत्रीय दलों के साथ गठबंधन बनाने के समाजवादी पार्टी के प्रयासों ने भी राष्ट्रीय दलों के वर्चस्व के खिलाफ एकजुट मोर्चा बनाने के मुलायम के प्रयासों की गूंज उठाई। अखिलेश यादव ने 2024 के आम चुनाव के लिए विपक्षी दलों को एकजुट करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, एक ऐसा गठबंधन बनाने की कोशिश की जो राष्ट्रीय स्तर पर भाजपा को चुनौती दे सके। ये प्रयास, हालांकि हमेशा सफल नहीं हुए, लेकिन सामूहिक कार्रवाई की शक्ति में मुलायम के विश्वास और देश के शासन में क्षेत्रीय आवाजों की भागीदारी की आवश्यकता के प्रति पार्टी की प्रतिबद्धता को रेखांकित किया।

जैसे-जैसे 2024 के आम चुनाव नजदीक आ रहे थे, भारत में राजनीतिक माहौल और अधिक तेज होता गया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा कार्यालय में लगातार तीसरे कार्यकाल की मांग कर रही थी, जो उसकी शक्ति को और मजबूत करेगी। समाजवादी पार्टी सहित विपक्ष को अपनी दृष्टि को भारत के भविष्य के लिए भाजपा के राष्ट्रवाद और विकास के विमर्श का मुकाबला करने के कठिन कार्य का सामना करना पड़ा।

उत्तर प्रदेश में, समाजवादी पार्टी ने एक ऐसे अभियान पर ध्यान केंद्रित किया जो समावेशी विकास, सामाजिक न्याय और अल्पसंख्यक अधिकारों की रक्षा की आवश्यकता पर जोर देता था। मुलायम की विरासत का आह्वान करते हुए, अखिलेश यादव ने समानता और निष्पक्षता के सिद्धांतों में निहित शासन की दृष्टि को स्पष्ट किया। उन्होंने शहरी और ग्रामीण भारत के बीच बढ़ती खाई को पाटने, युवाओं के लिए अवसर प्रदान करने और आर्थिक विकास के लाभों को समाज के सबसे हाशिए पर पड़े वर्गों तक पहुंचाने की आवश्यकता के बारे में बात की।

चुनाव परिणाम, समाजवादी पार्टी की अपेक्षाओं से कम होते हुए भी, फिर भी भारतीय राजनीति में एक महत्वपूर्ण क्षण था। विशेष रूप से उत्तर प्रदेश जैसे प्रमुख राज्यों में विपक्ष का प्रदर्शन इस बात का संकेत था कि भाजपा का प्रभुत्व अचूक नहीं था। समाजवादी पार्टी, हालांकि राज्य में भाजपा को बेदखल नहीं कर पाई, फिर भी एक मजबूत और अधिक एकीकृत शक्ति के रूप में उभरी, जो मुलायम सिंह यादव की एक न्यायपूर्ण और न्यायसंगत भारत की दृष्टि के लिए संघर्ष जारी रखने के लिए तैयार थी।

आने वाले वर्षों में, विभिन्न विचारधाराओं और देश के भविष्य के लिए दृष्टिकोणों के बीच चल रहे संघर्षों से आकार लेते हुए, राजनीतिक परिदृश्य विकसित होता रहा। हालाँकि, मुलायम सिंह यादव की विरासत सामाजिक न्याय और लोकतंत्र की शक्ति में विश्वास रखने वालों के लिए प्रेरणा का एक निरंतर स्रोत बनी रही। सैफई की धूल भरी गलियों से लेकर लखनऊ और नई दिल्ली के सत्ता गलियारों तक की उनकी जीवन यात्रा ने यह याद दिलाया कि सच्चे नेतृत्व का मतलब लोगों की सेवा करना, हाशिए पर पड़े लोगों के लिए खड़ा होना और सभी के लिए बेहतर भविष्य के लिए लड़ना है।

जैसे-जैसे भारत आगे बढ़ा, मुलायम सिंह यादव के जीवन के सबक नेताओं और नागरिकों दोनों के साथ गूंजते रहे। उनकी विरासत आशा, लचीलेपन और एक अधिक न्यायपूर्ण और न्यायसंगत समाज की संभावना में एक अटूट विश्वास की थी। भारत जैसे विविध और जटिल देश में, जहां असमानता और बहिष्कार की चुनौतियाँ हमेशा मौजूद थीं, समावेशी और लोकतांत्रिक भारत के उनके दृष्टिकोण ने भविष्य के लिए एक मार्गदर्शक प्रकाश की पेशकश की।

इस प्रकार, जब राष्ट्र ने उनके जीवन और योगदान पर विचार किया, तो यह स्पष्ट हो गया कि मुलायम सिंह यादव का प्रभाव आने वाली पीढ़ियों के लिए महसूस किया जाएगा। उनकी कहानी केवल भारतीय राजनीति के इतिहास का एक अध्याय नहीं थी; यह मानव आत्मा की स्थायी शक्ति, जो सही है उसके लिए खड़े होने के महत्व और इस विश्वास का प्रमाण थी कि अंततः, लोगों के पास अपना भाग्य तय करने की सच्ची शक्ति होती है।

अध्याय: विरासत जीवित है

समय बीतने के साथ, मुलायम सिंह यादव का भारतीय राजनीति पर प्रभाव बना रहा, भले ही राष्ट्र नई चुनौतियों और अवसरों के युग में आगे बढ़ता गया। उनका जीवन, जो सामाजिक न्याय, धर्मनिरपेक्षता, और जमीनी सशक्तिकरण के सिद्धांतों के प्रति गहरी प्रतिबद्धता से चिह्नित था, न केवल उनके अनुयायियों के लिए बल्कि उन लोगों के लिए भी प्रेरणा का स्रोत बना रहा जो भारतीय लोकतंत्र की जटिलताओं को समझने की कोशिश कर रहे थे।

अंततः, मुलायम सिंह यादव की विरासत बहुआयामी थी। वे एक ऐसे नेता थे जिन्होंने विनम्र शुरुआत से उठकर भारतीय राजनीति के सबसे प्रभावशाली व्यक्तियों में से एक बनने तक का सफर तय किया था। सैफई के कुश्ती अखाड़ों से लेकर उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री कार्यालय तक उनकी यात्रा उनकी दृढ़ता, लोगों की गहरी समझ, और भारतीय राजनीति के अक्सर उथल-पुथल भरे जलधाराओं को पार करने की क्षमता का प्रमाण थी।

लेकिन उनके राजनीतिक उपलब्धियों से परे, मुलायम की सच्ची विरासत उन जीवनों में निहित थी जिन्हें उन्होंने छुआ और उन समुदायों में जिन्हें उन्होंने उठाया। उनके नीतियों और पहल, विशेष रूप से पिछड़ी जातियों, अल्पसंख्यकों, और ग्रामीण जनसंख्या के सशक्तिकरण के उद्देश्य से, उत्तर प्रदेश और उसके परे के सामाजिक-आर्थिक परिदृश्य पर एक अमिट छाप छोड़ गई। जिन स्कूलों, कॉलेजों, अस्पतालों, और बुनियादी ढांचे के परियोजनाओं को उन्होंने प्रोत्साहित किया था, वे लोगों की सेवा करते रहे, उनके विकास और सामाजिक समानता के प्रति स्थायी प्रतिबद्धता को प्रतिबिंबित करते हुए।

समाजवादी पार्टी, जिसे उन्होंने स्थापित और पोषित किया, उनकी स्थापित मूल्यों द्वारा निर्देशित, भारतीय राजनीति में एक प्रमुख खिलाड़ी बनी रही। अखिलेश यादव के नेतृत्व में, पार्टी ने मुलायम की दृष्टि को आगे बढ़ाने का प्रयास किया, इसे तेजी से बदलते समाज की जरूरतों के अनुरूप ढाला। भले ही राजनीतिक परिदृश्य मुलायम के दौर से नाटकीय रूप से बदल गया था, लेकिन वे मूल सिद्धांत—समानता, न्याय, और हाशिए पर पड़े लोगों का सशक्तिकरण—जितने तब प्रासंगिक थे, उतने ही आज भी प्रासंगिक बने रहे।

राष्ट्रीय स्तर पर, मुलायम सिंह यादव को एक ऐसे नेता के रूप में याद किया गया जिन्होंने हमेशा लोगों के हितों को सर्वोपरि रखा। यथास्थिति को चुनौती देने की उनकी तत्परता, राजनीतिक विभाजनों के पार गठबंधन बनाने की उनकी क्षमता, और सामाजिक न्याय के कारण के प्रति उनकी गहरी प्रतिबद्धता ने उन्हें स्वतंत्रता के बाद के भारत के सबसे महत्वपूर्ण व्यक्तियों में से एक बना दिया। उनका जीवनवृत्त यह बताने का एक शक्तिशाली उदाहरण था कि एक अकेला, दृढ़ निश्चयी व्यक्ति एक राष्ट्र के इतिहास के पाठ्यक्रम पर कितना प्रभाव डाल सकता है।

जैसे-जैसे भारत भविष्य की ओर देख रहा था, मुलायम सिंह यादव के जीवन के सबक और भी अधिक प्रासंगिक होते गए। एक ऐसा देश जो असमानता, ध्रुवीकरण, और तेजी से सामाजिक परिवर्तन के मुद्दों से जूझ रहा था, उसमें उनकी समावेशिता, संवाद, और सामूहिक कार्रवाई की शक्ति पर जोर देने वाले विचारों ने 21वीं सदी की चुनौतियों का सामना करने के लिए एक ब्लूप्रिंट प्रदान किया। साधारण लोगों की असाधारण बदलाव लाने की क्षमता में उनका विश्वास नई पीढ़ियों के नेताओं और कार्यकर्ताओं को प्रेरित करता रहा।

मुलायम सिंह यादव के जीवन का अंतिम अध्याय लिखा जा सकता है, लेकिन उनकी कहानी खत्म नहीं हुई थी। लाखों लोगों के दिलों और दिमागों में जिन्होंने उन्हें सराहा, उनकी विरासत जीवित रही—एक ऐसी विरासत जो दृढ़ता, साहस, और लोकतंत्र और सामाजिक न्याय के आदर्शों के प्रति अटल प्रतिबद्धता की थी। उनका जीवन मानव आत्मा की स्थायी शक्ति का प्रमाण था, और उनका प्रभाव आने वाले वर्षों तक महसूस किया जाता रहेगा।

जैसे-जैसे राष्ट्र आगे बढ़ा, मुलायम सिंह यादव की स्मृति एक मार्गदर्शक प्रकाश के रूप में कार्य करती रही, जो भारत को उन मूल्यों की याद दिलाती रही जिन्होंने इसे एक जीवंत और दृढ़ लोकतंत्र बनाया था। उनकी विरासत एक कार्रवाई की पुकार थी, एक अनुस्मारक कि अधिक न्यायपूर्ण और समान समाज के लिए संघर्ष अभी भी जारी है, और यह हर नागरिक की जिम्मेदारी है कि वह उस संघर्ष को जारी रखे। इस प्रकार, मुलायम सिंह यादव का जीवन और विरासत भारत के भविष्य को आकार देने में योगदान करते रहेंगे, यह सुनिश्चित करते हुए कि उन्होंने जिन आदर्शों के लिए खड़ा किया, वे राष्ट्र की प्रगति और समृद्धि की यात्रा के केंद्र में बने रहें।

और इसलिए, जैसे-जैसे इतिहास के पृष्ठ पलटते गए, मुलायम सिंह यादव की कहानी भारत के बड़े आख्यान का एक अभिन्न हिस्सा बन गई—एक ऐसे नेता की कहानी, जिसने अपने जीवन के कार्यों के माध्यम से, राष्ट्र की आत्मा पर एक अमिट छाप छोड़ी। उनकी विरासत, जो इस विश्वास में निहित थी कि सच्ची शक्ति लोगों की सेवा में निहित है, जीवित रहेगी, आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करेगी और भारत को एक उज्जवल, अधिक न्यायपूर्ण भविष्य की ओर ले जाएगी।


नेताजी
अमर रहें

देश की आजादी के लिए छोटे-बड़े, अमीर-गरीब सभी ने एक साथ संघर्ष किया। इसलिए अब सभी को सम्मान और अधिकार भी एक समान रूप से मिलना चाहिए और यह केवल समाजवादी व्यवस्था में ही संभव है। दीन-दुखियों के आंसू पोंछना समाजवाद का प्रमुख लक्ष्य है।

मुलायम सिंह यादव
संस्थापक, समाजवादी पार्टी



लाल टोपी से भाजपा के नेता परेशान हो गए हैं। भाजपा को लाल टोपी से अपने लिए खतरा लग रहा है। लाल टोपी भाजपा के कुशासन के खिलाफ रेड अलर्ट है। लाल टोपी व्यवस्था परिवर्तन में अहम योगदान देगी। भविष्य समाजवादियों का है।

मुलायम सिंह यादव
संस्थापक-संरक्षक, समाजवादी पार्टी



सामाजिक न्याय की लड़ाई समाजवादी पार्टी ही लड़ सकती है और सभी को अधिकार दिला सकती है। समाजवादी पार्टी में बड़ी संख्या में युवा हैं। वे निराश हुए बिना जनता से जुड़े मुद्दों पर संघर्ष जारी रखें और हर स्तर पर पार्टी को मजबूत करने में जुट जाएं।

मुलायम सिंह यादव

संस्थापक , समाजवादी पार्टी



सांप्रदायिक ताकतों की विभाजनकारी राजनीति से सावधान रहने की जरुरत है। समाजवादी विचारधारा ही ऐसी ताकतों को रोक सकती है। समाजवादी पार्टी के युवा कार्यकर्ता समाज को बांटने वाली इन ताकतों के खिलाफ लोकतांत्रिक तरीके से अपनी वैचारिक लड़ाई जारी रखें।

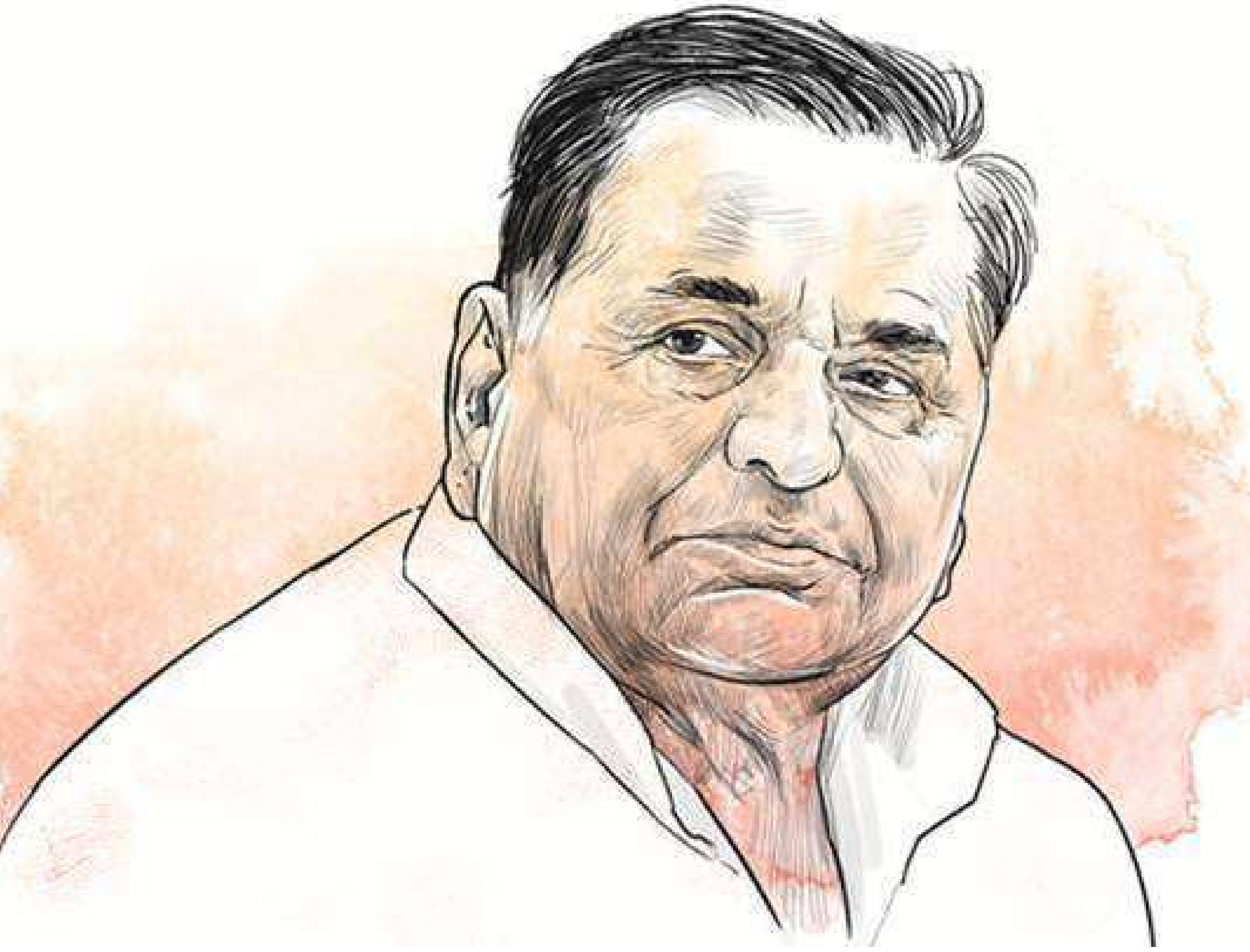
मुलायम सिंह यादव
संस्थापक, समाजवादी पार्टी

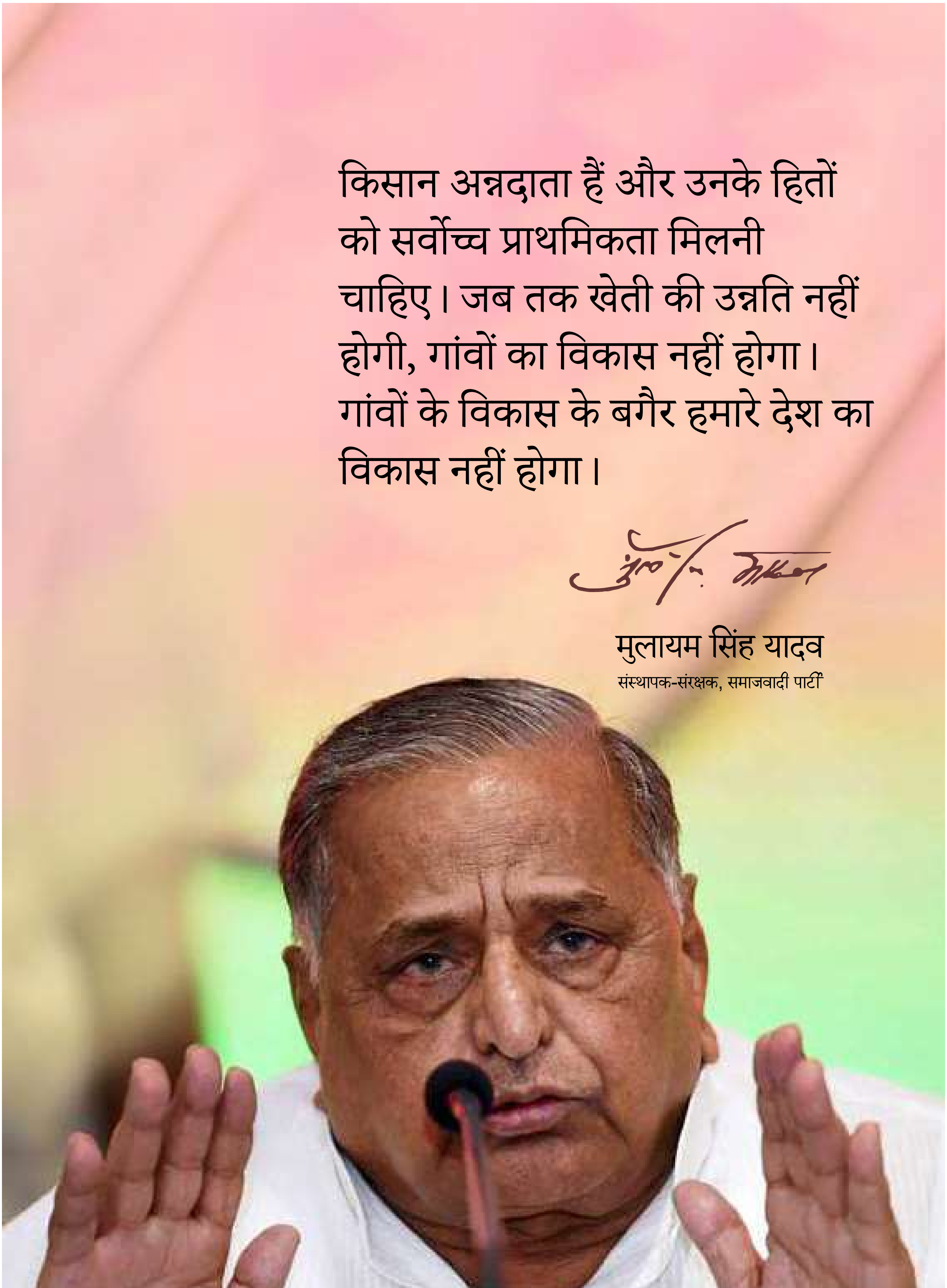


समाजवादी पार्टी की नीति है किसानों को प्राथमिकता दी जाए। उन्हें सस्ते दामों पर खाद और बीज उपलब्ध कराया जाए। सिंचाई की उचित व्यवस्था हो ताकि पैदावार बढ़े। फसलों को उचित मूल्य दिलाना सुनिश्चित हो। इसी तरह नौजवानों के लिए नौकरी का इंतजाम किया जाना चाहिए। युवाओं को नौकरी व रोजगार देना केंद्र व प्रदेश सरकार की जिम्मेदारी होती है। सरकारों की जवाबदेही तय होनी चाहिए।

मुलायम सिंह यादव

संस्थापक, समाजवादी पार्टी

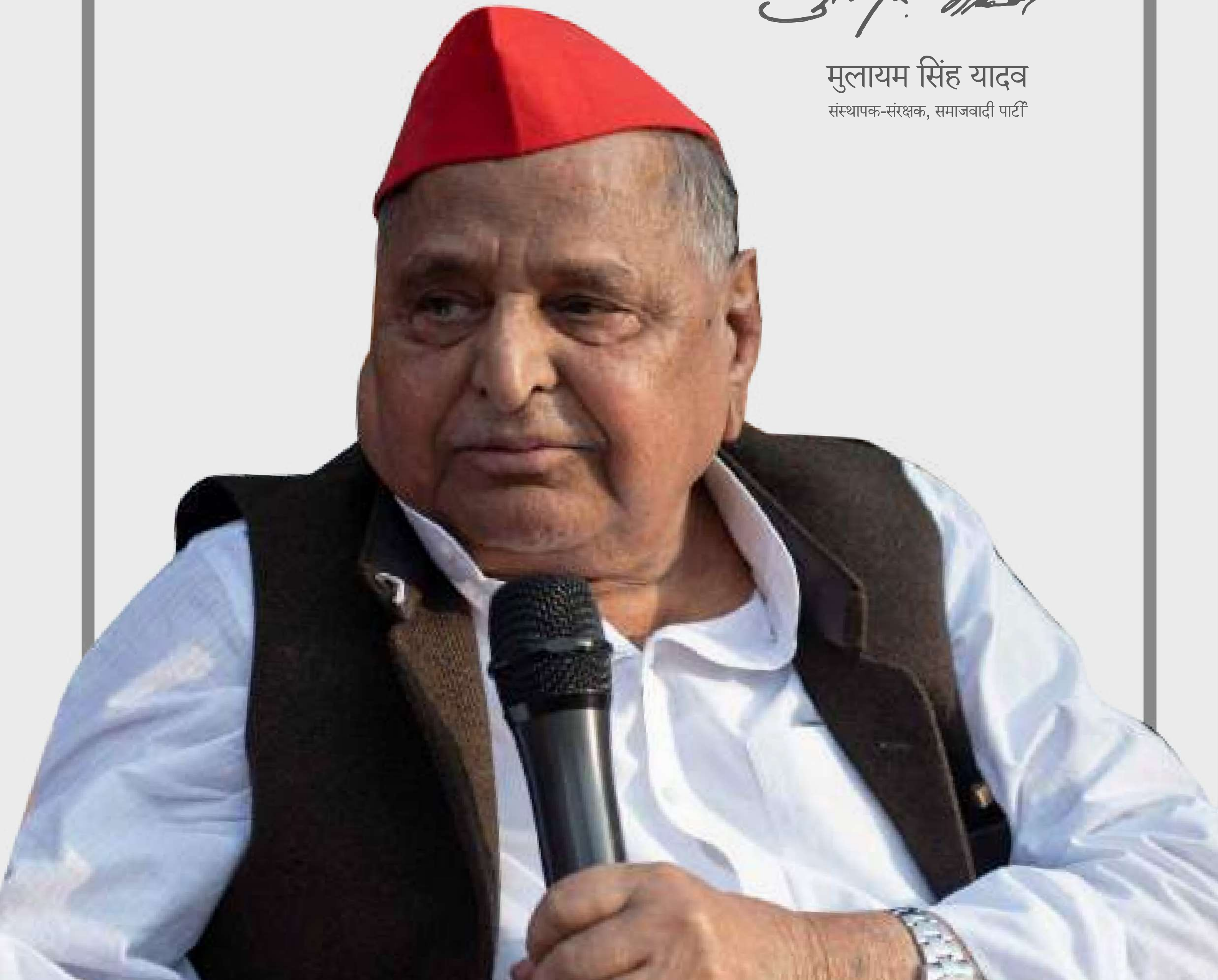



किसान अन्नदाता हैं और उनके हितों को सर्वोच्च प्राथमिकता मिलनी चाहिए। जब तक खेती की उन्नति नहीं होगी, गांवों का विकास नहीं होगा। गांवों के विकास के बगैर हमारे देश का विकास नहीं होगा।
मुलायम सिंह यादव
संस्थापक-संरक्षक, समाजवादी पार्टी

समाजवादी आंदोलन भेदभाव मिटाने के लिए है। समाजवादी पार्टी को यह दायित्व निभाते रहना है। हमें महिलाओं, युवाओं, गरीबों और किसानों की बेहतरी के लिए काम करना होगा। सभी वर्गों ने समाजवादी पार्टी का साथ दिया है। हमें सभी को साथ लेकर चलना है।

मुलायम सिंह यादव

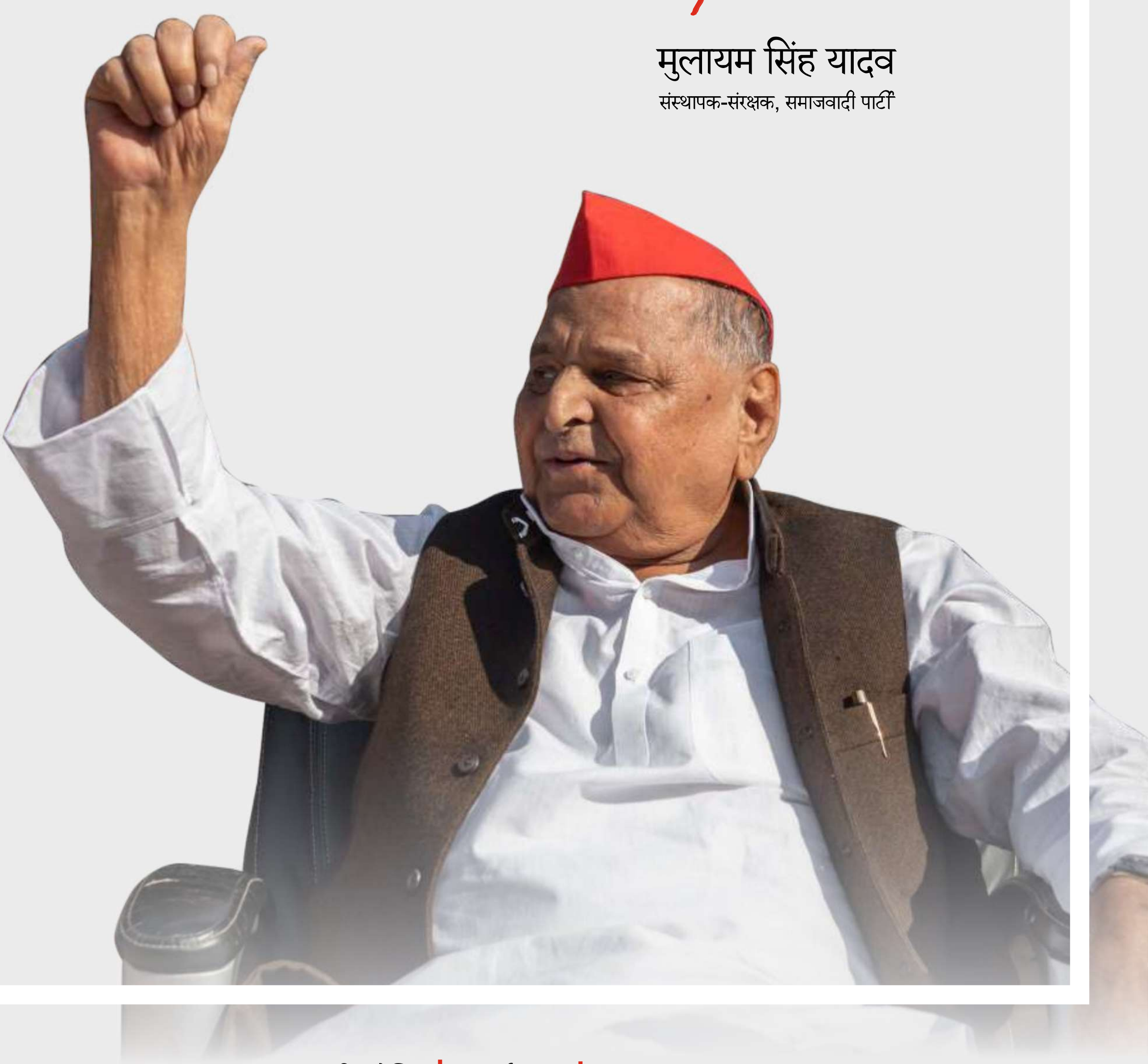
संस्थापक-संरक्षक, समाजवादी पार्टी



समाजवादी पार्टी के सदस्यता अभियान को सभी नेताओं और कार्यकर्ताओं को मिलकर सफल बनाना है। युवाओं और महिलाओं को बड़ी संख्या में पार्टी से जोड़ें। समाजवादी पार्टी ही सामाजिक न्याय की लड़ाई लड़ सकती है और सभी को अधिकार दिला सकती है। दुनिया के जितने दुख-दर्द हैं वे समाजवादी व्यवस्था से ही दूर हो सकते हैं, दूसरा और कोई रास्ता नहीं है।

मुलायम सिंह यादव

संस्थापक-संरक्षक, समाजवादी पार्टी



समाजवादी पार्टी ही सभी को अधिकार दिला सकती है। बढ़ती महंगाई और बेरोजगारी जैसी समस्याएं समाजवादी व्यवस्था से ही दूर हो सकती हैं, दूसरा और कोई रास्ता नहीं है। समाजवादी व्यवस्था ही सामाजिक न्याय की लड़ाई लड़ सकती है।

मुलायम सिंह यादव
संस्थापक, समाजवादी पार्टी



गांधी ने हमें जो रास्ता दिखाया है वही देश के लिए सही रास्ता है। गांधीवादी रास्ते पर चलकर हमें डा. लोहिया, आचार्य नरेन्द्र देव और जयप्रकाश नारायण के समाजवादी सिद्धांतों को साकार करना है।

मुलायम सिंह यादव

संस्थापक-संरक्षक, समाजवादी पार्टी



समता और संपन्नता समाजवाद का मूल मंत्र है। समाज के सब लोगों को विकास के अवसर मिलें इसके लिए समाजवादियों को बढ़-चढ़कर काम करना होगा। सिर्फ नारे लगाने से समाजवाद नहीं आएगा, बल्कि समाजवादी सिद्धांतों को समझना और अपनाना होगा। समाजवादी विचारधारा को फैलाने की जिम्मेदारी सबसे ज्यादा युवा पीढ़ी पर है।



मुलायम सिंह यादव

संस्थापक-संरक्षक, समाजवादी पार्टी

गांधी ने हमें जो रास्ता दिखाया है वही देश के लिए सही रास्ता है। गांधीवादी रास्ते पर चलकर हमें समाजवादी सिद्धांतों को साकार करना है। दुनिया के जितने दुख-दर्द हैं वे समाजवादी व्यवस्था से ही दूर हो सकते हैं, दूसरा और कोई रास्ता नहीं है।

मुलायम सिंह यादव

संस्थापक-संरक्षक, समाजवादी पार्टी



समाजवादी पार्टी के युवा कार्यकर्ताओं को वैचारिक रूप से और प्रखर बनाने में प्रशिक्षण शिविरों का अत्यंत महत्व है। यही कारण है कि अपने स्थापना काल के शुरुआती वर्षों से ही सपा में प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन होता रहा है। समाजवादी आंदोलन को सतत गतिमान बनाए रखने के लिए प्रशिक्षण बेहद जरूरी है।

मुलायम सिंह यादव

संस्थापक, समाजवादी पार्टी



समाजवादी पार्टी कभी बूढ़ी नहीं होगी। पार्टी में नौजवानों की बड़ी तादाद है और भविष्य में पार्टी इनके ही हाथों में होगी। परिवर्तन की राजनीति की समाजवादी पार्टी की परंपरा आगे भी जारी रहेगी। नौजवान समाजवादी सिद्धांतों व साहित्य को जरूर पढ़ें।

मुलायम सिंह यादव

संस्थापक-संरक्षक, समाजवादी पार्टी



किसी में भेद नहीं करना चाहिए। चाहे वह औरत-मर्द हों या गोरे-काले। क्षेत्रीयता के आधार पर भी भेद नहीं करना चाहिए। नौजवान समाजवादियों को समाजवादी पार्टी की विचारधारा, डा. राम मनोहर लोहिया के सभी भाषणों को पढ़ना चाहिए क्योंकि उनको जनता के बीच में बोलना होता है। वे जितना पढ़ेंगे, उतना अच्छा बोलेंगे।



मुलायम सिंह यादव

संस्थापक-संरक्षक, समाजवादी पार्टी





समाजवादी पार्टी ही
सामाजिक न्याय की लड़ाई
लड़ सकती है और सभी को
अधिकार दिला सकती है।
जनता से जुड़े मुद्दों पर संघर्ष
जारी रखना होगा।
समाजवादी पार्टी में बड़ी
संख्या में युवाओं का होना
उत्साहवर्धक है। वे निराश हुए
बिना हर स्तर पर पार्टी को
मजबूत करने में जुट जाएं।

मुलायम सिंह यादव
संस्थापक-संरक्षक, समाजवादी पार्टी

जातीय जनगणना जरूरी है क्योंकि यह एक बड़े सामाजिक बदलाव की वाहक बनेगी। इसके जरिए कई दशकों का अन्याय दूर होगा। इससे उन पिछड़ी और अनुसूचित जातियों का सम्मान सुनिश्चित हो सकेगा जो देश की स्वतंत्रता के बाद आज तक उपेक्षित रहने के लिए अभिशप्त हैं।

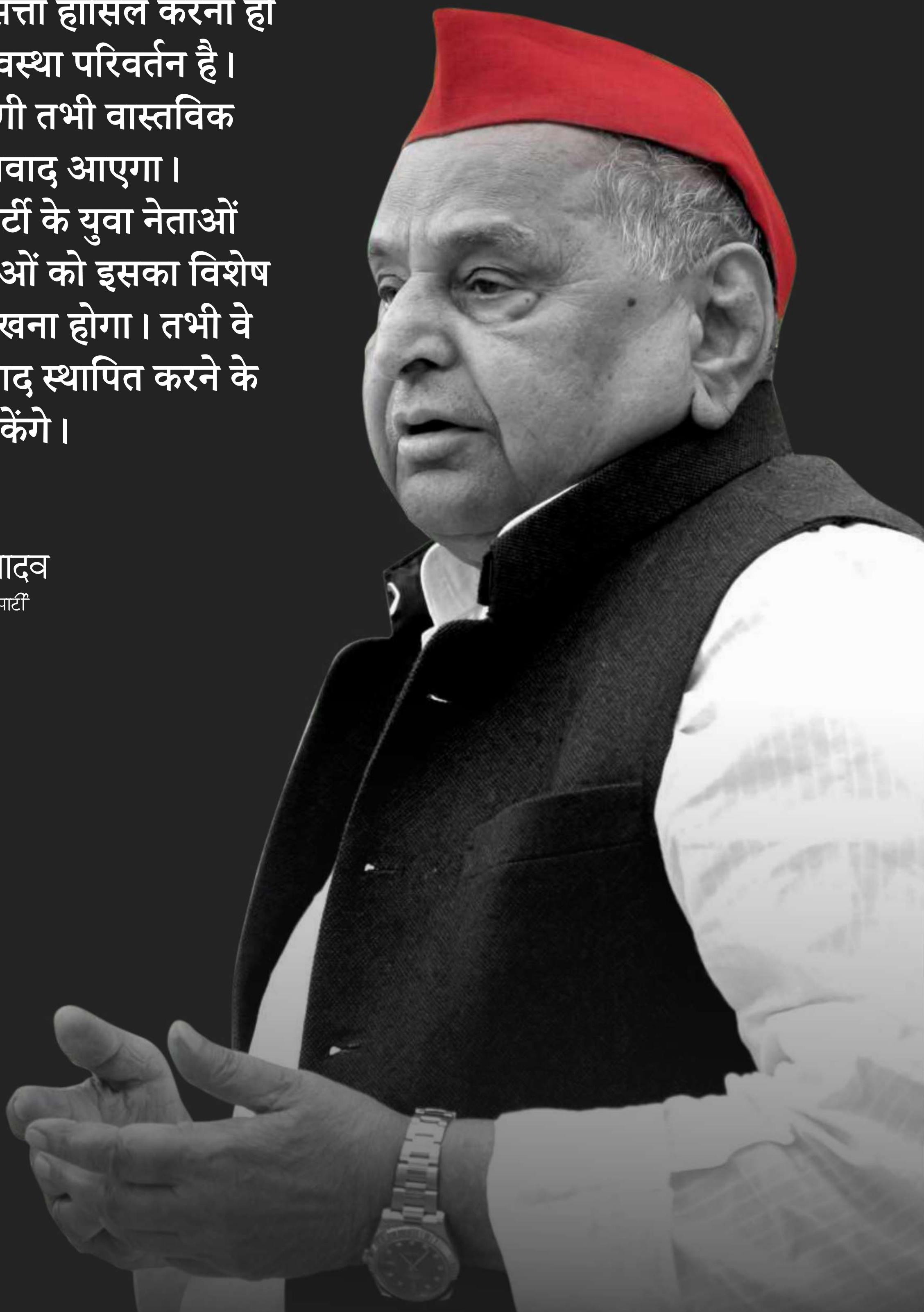
मुलायम सिंह यादव

संस्थापक , समाजवादी पार्टी



समाजवादी विचारधारा का मुख्य उद्देश्य केवल सत्ता हासिल करना ही नहीं बल्कि व्यवस्था परिवर्तन है। व्यवस्था बदलेगी तभी वास्तविक अर्थों में समाजवाद आएगा। समाजवादी पार्टी के युवा नेताओं और कार्यकर्ताओं को इसका विशेष रूप से ध्यान रखना होगा। तभी वे सच्चा समाजवाद स्थापित करने के लक्ष्य को पा सकेंगे।

मुलायम सिंह यादव
संस्थापक, समाजवादी पार्टी



देश में बदलाव की राजनीति चल रही है और समाजवादी पार्टी के युवा कार्यकर्ताओं को चाहिए कि वे देश में परिवर्तन की चल रही इस राजनीति को कामयाब बनाएं। मुझे उम्मीद है कि युवा इसे सफल बनाएंगे। आम लोगों को समाजवादी पार्टी से बहुत उम्मीदें हैं। लोग जो आशा करते हैं, उन आशाओं को पूरा करने की कोशिश करना समाजवादियों का दायित्व है।

मुलायम सिंह यादव

संस्थापक, समाजवादी पार्टी



डॉक्टर राम मनोहर लोहिया के विचारों से ही देश का भला होगा। लोहिया जी के विचारों के प्रचार-प्रसार से लोक मन में राजनीतिक चेतना जगेगी। खेती-किसानी, बेरोजगारी व आर्थिक विषमता से जुड़ी समस्याओं का समाधान डा. लोहिया की प्रस्थापनाओं से ही संभव होगा।



मुलायम सिंह यादव

संस्थापक-संरक्षक, समाजवादी पार्टी

यूपी में लड़ाई दो पार्टियों सपा और भाजपा के बीच है। इसके अलावा अब कोई नहीं है। यूपी विधानसभा चुनाव से यह बात साफ हो गई है कि उत्तर प्रदेश में केवल समाजवादी पार्टी और भाजपा हैं। सपा के कार्यकर्ता और नेता 2024 की लड़ाई के लिए तैयार रहें।

मुलायम सिंह यादव
संस्थापक-संरक्षक, समाजवादी पार्टी



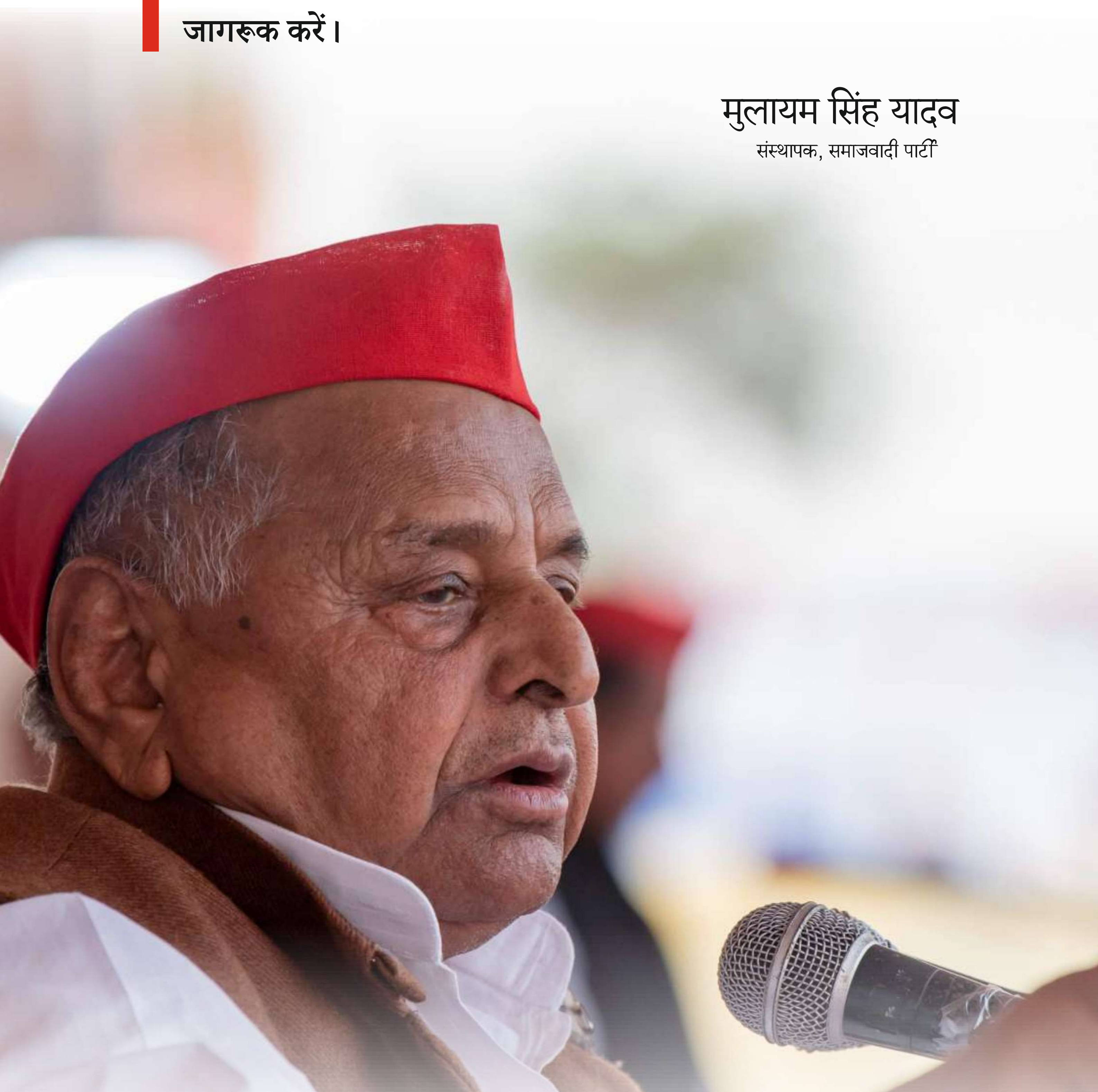
उत्तर प्रदेश की राजनीति में मुकाबला दो पार्टियों सपा और भाजपा के बीच है। इसके अलावा अन्य कोई दल नहीं है। 2022 के विधानसभा चुनाव के नतीजों से भी स्पष्ट हुआ कि उत्तर प्रदेश में केवल समाजवादी पार्टी और भाजपा मुकाबले में हैं। आगे भी ऐसा ही होगा और सपा ही भाजपा को परास्त करेगी। समाजवादी पार्टी के कार्यकर्ता और नेता हर चुनावी लड़ाई के लिए तैयार रहें।

मुलायम सिंह यादव
संस्थापक, समाजवादी पार्टी



समाजवादी नीतियों से ही सामाजिक न्याय के लक्ष्य को हासिल किया जा सकता है। समाजवादी पार्टी का संगठन मजबूत है और वही उत्तर प्रदेश में भाजपा को हरा सकता है। पार्टी के कार्यकर्ता गांव-गांव जाकर भाजपा सरकार की जन विरोधी नीतियों के खिलाफ जनता को जागरूक करें।

मुलायम सिंह यादव
संस्थापक, समाजवादी पार्टी



परिवर्तन की लहर है। इसमें युवाओं की बड़ी भूमिका होगी। समाजवादी विचारधारा को फैलाने की सबसे ज्यादा जिम्मेदारी युवा पीढ़ी पर है। समाजवादी आंदोलन भेदभाव मिटाने के लिए है। हमें सभी को साथ लेकर चलना है।

मुलायम सिंह यादव
संस्थापक-संरक्षक, समाजवादी पार्टी



किसान हमारे देश के अन्नदाता हैं और उनके हितों को सर्वोच्च प्राथमिकता देनी होगी। जब तक खेती की उन्नति नहीं होगी, तब तक गांवों का विकास नहीं होगा। गांवों के विकास के बगैर हमारे देश का विकास नहीं होगा। भारत की आत्मा गांवों में ही बसती है।

मुलायम सिंह यादव

संस्थापक, समाजवादी पार्टी



केन्द्र व राज्य सरकार के पास इतनी बड़ी मशीनरी होती है तब जाति के आधार पर जनगणना कराने में क्या परेशानी है। देश की जनसंख्या बढ़ गई है और जाति के आधार पर पूरा आरक्षण नहीं मिल रहा है इसलिए जाति जनगणना जरूरी है।

मुलायम सिंह यादव
संस्थापक, समाजवादी पार्टी



सभी को विकास के अवसर मिलें इसके लिए समाजवादियों को बढ़-चढ़कर काम करना होगा। सिर्फ नारे लगाने से समाजवाद नहीं आएगा, बल्कि समाजवादी सिद्धांतों को समझना और अपनाना होगा। समाजवादी विचारधारा को फैलाने की जिम्मेदारी सबसे ज्यादा युवा पीढ़ी पर है।



मुलायम सिंह यादव

संस्थापक-संरक्षक, समाजवादी पार्टी



हर तरफ महंगाई और कुशासन का बोलबाला है। वर्तमान सरकार की इस बारे में कोई नीति नहीं। समाज में बराबरी लाने के बजाए विषमता की खाई को बढ़ाया जा रहा है। इन हालातों को बदलना जरूरी है। समाजवादी पार्टी शुरू से परिवर्तन की राजनीति करती रही है। इसमें नौजवानों की बहुत बड़ी जिम्मेदारी है।

मुलायम सिंह यादव

संस्थापक-संरक्षक, समाजवादी पार्टी



श्रद्धांजलि



नेता जी आज भी प्रेरणा के रूप में हम सबके बीच हैं। मेरे अस्तित्व का आधार वही रहे हैं और हमेशा रहेंगे। मेरे मुख्यमंत्री बनने व राष्ट्रीय अध्यक्ष बनने में सबसे बड़ा आशीर्वाद मुझे उनका ही मिला था।

नेताजी धरती पर उतरकर संघर्ष करते हुए, चोट खाते हुए ही धरतीपुत्र बने। उन्होंने समाजवादी मूल्यों के साथ जन-जन के लिए जो सामाजिक-आर्थिक और राजनीतिक लड़ाई लड़ी, हम उसे हमेशा जारी रखेंगे। हमारा ये संकल्प ही उनको सच्ची श्रद्धांजलि है।

समाजवादी आंदोलन भेदभाव मिटाने के लिए है। समाजवादी पार्टी को यह दायित्व निभाते रहना है। हमें महिलाओं, युवाओं, गरीबों और किसानों की बेहतरी के लिए काम करना होगा। सभी वर्गों ने समाजवादी पार्टी का साथ दिया है। हमें सभी को साथ लेकर चलना है।

मुलायम सिंह यादव

संस्थापक-संरक्षक, समाजवादी पार्टी



दलित, ओबीसी, आदिवासी व अल्पसंख्यक समुदाय की महिलाओं को आरक्षण दिए बिना समाज से गैर बराबरी, विषमता खत्म नहीं की जा सकती। लोकतंत्र की मजबूती, एकता-सद्भावना व देश की शक्ति बढ़ाने के लिए यह जरूरी है।

मुलायम सिंह यादव
संस्थापक, समाजवादी पार्टी



नेताजी अमर रहें



22 नवंबर 1939 - 10 अक्टूबर 2022

प्रथम पुण्यतिथि पर

श्रद्धांजलि

पूरी दुनिया में परिवर्तन की लहर है। समाजवादी पार्टी शुरू से परिवर्तन की राजनीति करती रही है। नौजवान ही माहौल बनाते हैं। नौजवानों की बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। नौजवान ही सपा का भविष्य हैं। सपा के कार्यक्रमों में नौजवानों की बड़ी भीड़ जुटती है। यह देख कर खुशी होती है।



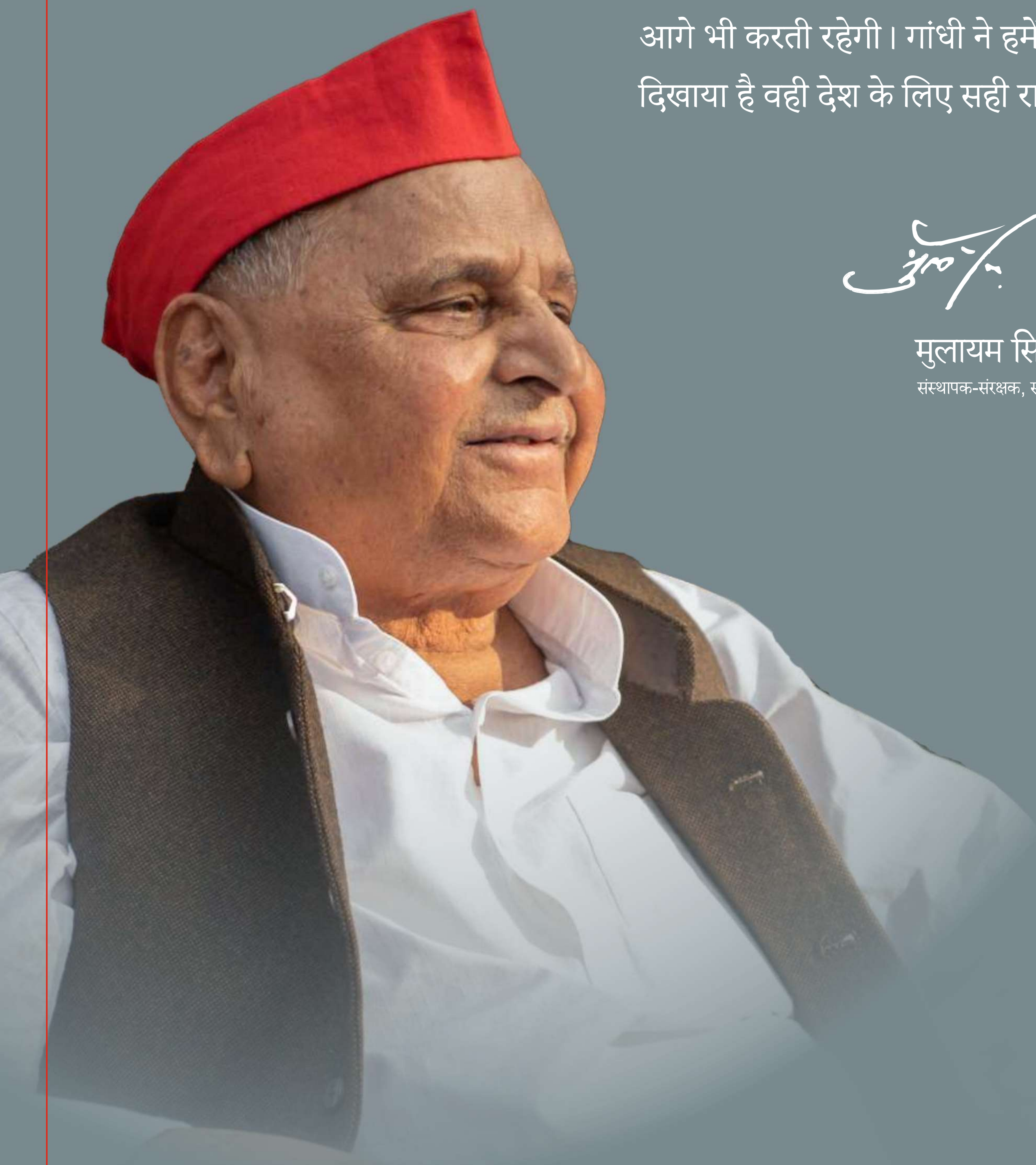
मुलायम सिंह यादव

संस्थापक-संरक्षक, समाजवादी पार्टी

सांप्रदायिक ताकतें माहौल खराब कर चुनावी लाभ लेने की कोशिश में लगी रहती हैं। समाजवादियों की जिम्मेदारी है कि वे जनता को साथ लेकर इन ताकतों के मंसूबों को नाकाम करें। समाजवादी पार्टी ने हमेशा सांप्रदायिक सौहार्द बनाए रखने का पूरा प्रयास किया है और आगे भी करती रहेगी। गांधी ने हमें जो रास्ता दिखाया है वही देश के लिए सही रास्ता है।

मुलायम सिंह यादव

संस्थापक-संरक्षक, समाजवादी पार्टी



सांप्रदायिक शक्तियां माहौल बिगाड़ कर चुनावी लाभ लेने की कोशिश में लगी रहती हैं। समाजवादियों का यह दायित्व है कि वे जनता के सहयोग से इन शक्तियों के मंसूबों को नाकाम करें। समाजवादी पार्टी ने हमेशा सांप्रदायिक सौहार्द बनाए रखने की पूरी कोशिश की है और आगे भी करती रहेगी। गांधी जी का दिखाया अहिंसा का रास्ता ही देश के लिए सही रास्ता है।

मुलायम सिंह यादव
संस्थापक, समाजवादी पार्टी



युवा ही देश का भविष्य हैं। युवा ही क्रांति लाते हैं। युवाओं की स्वाभाविक पसंद समाजवादी पार्टी है इसलिए सपा के युवा कार्यकर्ताओं को समाजवादी विचारधारा का प्रचार-प्रसार करना चाहिए। यही विचारधारा सामाजिक न्याय को सुनिश्चित कर सकती है। समाज से विषमता समाप्त कर समानता लाना ही समाजवादी पार्टी का ध्येय है।

मुलायम सिंह यादव
संस्थापक, समाजवादी पार्टी



हमारा लक्ष्य है समाजवाद, लोकतंत्र और धर्मनिरपेक्षता। इस लक्ष्य को पाने के लिए एक बड़े सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक परिवर्तन की जरूरत है।

मुलायम सिंह यादव

संस्थापक-संरक्षक, समाजवादी पार्टी



वर्तमान सरकार में कुशासन का बोलबाला है। महंगाई, भ्रष्टाचार पर काबू पाने की इनकी कोई नीति ही नहीं है। न गरीबी के खिलाफ कोई संकल्प है। समाज में बराबरी लाने के बजाए विषमता की खाई को बढ़ाया जा रहा है। समाजवादियों के सामने हालात बदलने की बड़ी जिम्मेदारी है।

मुलायम सिंह यादव
संस्थापक-संरक्षक, समाजवादी पार्टी



समाजवादी पार्टी संघर्षों की पार्टी है। देश पर जब भी चुनौती आई समाजवादी पार्टी ने हमेशा उसका मुकाबला किया। समाजवादी पार्टी के कार्यकर्ता चुनौतियों के सामने हमेशा डट कर खड़े होते हैं। देश के लिए सभी को एक होना पड़ेगा। देश को बांटने वाली ताकतों से सावधान रहने की जरूरत है।

मुलायम सिंह यादव
संस्थापक-संरक्षक, समाजवादी पार्टी



समाजवादी सिद्धांतों को समझने और अपनाने से ही समाजवाद आएगा। सिर्फ नारे लगाने से समाजवाद नहीं आएगा। समाजवादियों को इसके लिए बढ़-चढ़कर काम करना होगा कि सभी को समान अवसर मिले। युवा पीढ़ी पर समाजवादी विचारधारा के विस्तार का बड़ा दारोमदार है।

मुलायम सिंह यादव

संस्थापक, समाजवादी पार्टी



देश पर जब भी चुनौती आई समाजवादी पार्टी ने हमेशा उसका मुकाबला किया। हमारी पार्टी किसान आंदोलन के दौरान उनके साथ खड़ी रही। देश के लिए सभी को एक होना पड़ेगा। समाजवादी पार्टी के कार्यकर्ता चुनौतियों के सामने हमेशा डट कर खड़े होते हैं।



मुलायम सिंह यादव

संस्थापक-संरक्षक, समाजवादी पार्टी

भारत की सुरक्षा को सबसे बड़ा खतरा चीन से है और सरकार चीन की मंशा को लेकर किसी तरह की गफलत में न रहे। चीन कभी भी भारत का दोस्त नहीं बन सकता। पाकिस्तान की तुलना में चीन ज्यादा बड़ा खतरा है।

मुलायम सिंह यादव

संस्थापक, समाजवादी पार्टी



उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी ही भाजपा को हरा सकती है। सपा के पास मजबूत संगठन है। पार्टी के युवा कार्यकर्ता गांव-गांव जाकर भाजपा सरकार की जनविरोधी नीतियों के खिलाफ जनता को जागरूक करें। समाजवादी नीतियों से ही सामाजिक न्याय के लक्ष्य को हासिल किया जा सकता है।

मुलायम सिंह यादव

संस्थापक, समाजवादी पार्टी



समाजवादी पार्टी परिवर्तन की राजनीति करती है। नौजवानों भविष्य में पार्टी तुम्हारे हाथों में होगी, समाजवादी सिद्धांतों और साहित्य को पढ़ो। किसान, नौजवान और व्यापारी ही देश को शक्तिशाली बनाते हैं।

मुलायम सिंह यादव

संस्थापक-संरक्षक, समाजवादी पार्टी



भारत की सुरक्षा को सबसे बड़ा खतरा चीन से है और सरकार उसे हल्के में न लें। चीन कभी भी भारत का दोस्त नहीं बन सकता। पाकिस्तान की तुलना में चीन ज्यादा बड़ा खतरा है। तिब्बत को सौंपना भारत की बड़ी भूल थी।

मुलायम सिंह यादव

संस्थापक-संरक्षक, समाजवादी पार्टी



किसान अन्नदाता हैं और उनके हितों को सर्वोच्च प्राथमिकता मिलनी चाहिए। जब तक खेती की उन्नति नहीं होगी, गांवों का विकास नहीं होगा। लेकिन जहां देश के अन्य सारे धंधे फायदे में हैं वहीं किसान घाटे में है। जब तक देश का किसान सुखी नहीं होगा तब तक देश संपन्न और महान नहीं बन सकता।



मुलायम सिंह यादव

संस्थापक-संरक्षक, समाजवादी पार्टी

जाति आधारित जनगणना उन पिछड़ी और दलित जातियों के लिए सम्मान का जरिया बनेगी जिन्हें आजादी के बाद आज तक उपेक्षित किया गया है। जातिगत जनगणना से इन जातियों को अपना हक मिलेगा और उनकी पहचान भी बनेगी।

मुलायम सिंह यादव

संस्थापक , समाजवादी पार्टी



श्रद्धांजलि



नेता जी आज भी प्रेरणा के रूप में हम सबके बीच हैं। मेरे अस्तित्व का आधार वही रहे हैं और हमेशा रहेंगे। मेरे मुख्यमंत्री बनने व राष्ट्रीय अध्यक्ष बनने में सबसे बड़ा आशीर्वाद मुझे उनका ही मिला था।

नेताजी धरती पर उतरकर संघर्ष करते हुए, चोट खाते हुए ही धरतीपुत्र बने। उन्होंने समाजवादी मूल्यों के साथ जन-जन के लिए जो सामाजिक-आर्थिक और राजनीतिक लड़ाई लड़ी, हम उसे हमेशा जारी रखेंगे। हमारा ये संकल्प ही उनको सच्ची श्रद्धांजलि है।

अखिलेश यादव



धरतीपुत्र

की यात्रा गगन तक



उदय प्रताप सिंह

श्री मुलायम सिंह यादव जी से मेरी पहली भेंट 1958 में हुई थी, जब मैं जैन इंटर कॉलेज में बतौर एक प्रवक्ता नियुक्त हुआ था। मैं जब पहले दिन 11वीं के विद्यार्थियों की क्लास लेने पहुँचा तो कक्षा में बहुत ज्यादा विद्यार्थी नहीं थे कक्षा में लगभग 17 से 18 विद्यार्थी ही कुल थे क्योंकि पहला दिन था तो उस दिन मैंने कक्षा के सभी विद्यार्थियों से उनका परिचय किया एवं स्वयं का भी उन्हें परिचय दिया।

शिक्षा की दृष्टि से ये बेहद जरूरी है कि विद्यार्थी एवं शिक्षक के बीच में एक मधुर सम्बन्ध का आदान प्रदान हो क्योंकि इससे विद्यार्थियों की शिक्षक से असहजता भी खत्म हो जाती है।

जब मैंने बच्चों की तरफ ध्यान से देखा तो मुझे मुलायम सिंह उन सभी विद्यार्थियों में सबसे अलग नज़र आए। उनकी पोशाक धोती-कुर्ता के साथ ही गाँधी टोपी थी।

जब परिचय का कार्यक्रम शुरू हुआ तब सबने अपने-अपने विषय में जानकारी दी लेकिन मुलायम सिंह के विषय में अधिक जानकारी देने लगे। उनके साथी रामरूप यादव ने मुझे विस्तार से बताया कि गुरूजी हम इन्हें एमएलए कह कर पुकारते हैं अन्य विद्यार्थी उन्हे नेताजी आदि नामों से पुकारा करते थे और क्योंकि मैं इनके साथ रहता हूँ और बड़ा हूँ इसलिए विद्यार्थी मुझे एमपी साहब कहते हैं।

नेताजी के नाम से सम्बोधित करने का कारण तब विद्यार्थियों ने बताया। घटना कुछ यूं थी कि ज़ब लोहिया जी ने किसानों के लिए सिंचाई से सम्बंधित मुद्दे पर जेल भरो आंदोलन का आह्वान किया तब कम उम्र में भी मुलायम सिंह ने बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया था जब मुलायम सिंह अपनी गिरफ़्तारी देने पहुँचे तब वहाँ अधिकारियों ने उन्हें नाबालिग होने के करण जेल नहीं भेजा और उन्हें छोड़ दिया गया फिर उन्होंने अधिकारियों से बात की और कहा कि अगर मेरी गिरफ़्तारी नहीं हो सकती है तो मेरे विरोध को देखते हुए इस आंदोलन में मेरा नाम तो आ सकता है? इसी घटना ने नेताजी का सम्बोधन दिया।

समाज से बहिष्कार :- एक बार मुलायम सिंह ने किसी जाटव लड़के के घर मित्रतावश भोजन ग्रहण कर लिया था जिसके चलते मुलयाम सिंह को उनके परिवार समेत समाज ने बहिष्कृत कर दिया। मुलायम सिंह और उनके परिवार ने इसकी तनिक भी परवाह नहीं की थी।

अगर बात करें उनके गाँव सैफई की तो उस गाँव में एक दूसरे का सहयोग करने की भावना प्रदेश के अन्य हिस्सों से बहुत अधिक थी और क्योंकि मुलायम सिंह की परवरिश उसी गाँव में हुई थी तो सहयोग करने की भावना उनमें बचपन से ही अपार थी इसलिए इन पर एक कहावत बिल्कुल सही बैठती है.. "होनहार बिरवान के होत चिकने पात" अर्थात् मुलायम सिंह में नेतागिरी के सभी गुण बचपन से ही विद्यमान थे वे दूसरों के दुखों को समझते थे उनकी मदद करते थे उनके सुख में भले न पहुँचें पर दुःख में एक परिवार के सदस्य की तरह ही उपस्थित रहते थे।

वे अपने विरोधियों के भी दुःख में शामिल होते थे उसी का परिणाम है आज उनके न रहने पर उनके विरोधी भी बड़ी संख्या में उनके गाँव घर सैफई जाकर उन्हें श्रद्धांजलि



अर्पित कर रहे हैं। किसी भी व्यक्ति के मन को मोह लेने की अद्भुत कला मुलायम सिंह में हमेशा से थी।

1960 में मुलायम सिंह 12वीं की परीक्षा उत्तीर्ण कर जैन इंटर कॉलेज करहल से चले गए और केके डिग्री कॉलेज इटावा से बीए उत्तीर्ण किया और ए.के. कॉलेज शिकोहाबाद से बी.टी. उत्तीर्ण कर के जैन इंटर कॉलेज में हमारे अध्यापक साथी बन गए।

यादव महासभा के कार्यक्रम का सफल प्रबंधन :- मुलायम सिंह के अंदर एक संगठात्मक क्षमता थी जो सर्वविदित थी। एक उदाहरण दे रहा हूँ जिससे आप इनकी क्षमता का आंकलन कर सकते हैं।

1966 में इटावा में एक अखिल भारतीय यादव महासभा की बैठक का आयोजन हुआ। रेवाड़ी के राजा राव वीरेंद्र सिंह उसके अध्यक्ष थे क्योंकि उस कार्यक्रम की व्यवस्था की जिम्मेदारी मुलायम सिंह पर थी। उन्हें स्वागत समिति का अध्यक्ष बना दिया गया था।

उस कार्यक्रम की इतनी बढ़िया व्यवस्था मुलायम सिंह ने की थी जिसके कारण वे अपने अंत समय तक अखिल भारतीय यादव महासभा से जुड़े रहे और सबके आदर का पात्र भी रहे क्योंकि उसी इटावा की सभा में काका कालेरकर की सिफारिशों को लागू करने का प्रस्ताव पास किया गया था।

पहली बार विधायक बनने की कहानी :- जसवंतनगर से विधायक नत्थू सिंह पहलवानी के बड़े प्रशंसक व्यक्ति थे एक दिन वे एक कुश्ती में बतौर अतिथि के रूप में पहुँचे जहाँ मुलायम सिंह का मुकाबला एक अपने से बड़े पहलवान से था। ये दंगल की फाइनल कुश्ती थी जिसे गांव में झंडे की कुश्ती कहा जाता है और उसकी बड़ी प्रतिष्ठा मानी जाती है। मुलायम सिंह ने न केवल वो कुश्ती जीती बल्कि अपने प्रतिद्वंदी और सारी जनता का हृदय भी जीत लिया जब उन्होंने उससे हाथ मिला कर गले लगा लिया। नत्थू सिंह इस घटना से बहुत प्रभावित हुए जिसमें उन्होंने मुलायम सिंह की शारीरिक शक्ति और हृदय का बड़प्पन दोनों को देखा। उस घटना के बाद 1967 के विधानसभा चुनाव के दौरान अपने चुनाव क्षेत्र जसवंतनगर से मुलायम सिंह का विधायक का टिकट पार्टी से दिलवा दिया और स्वयं करहल क्षेत्र से विधायकी का चुनाव लड़े। इस चुनाव में मुलायम सिंह के पास साधन के नाम पर केवल एक साइकिल थी जो बाद में उनकी पार्टी का चुनाव चिन्ह बनी।

चौधरी चरण सिंह से संपर्क :- यद्यपि

मुलायम सिंह उस चुनाव के बाद ज्यादा दिन विधायक नहीं रहे लेकिन उन्होंने चौधरी चरण सिंह का इस कदर भरोसा जीता कि चौधरी चरण सिंह ने सार्वजानिक घोषणाएं कर दीं कि मुलायम सिंह मेरे राजनीतिक उत्तराधिकारी हैं।

मुलायम सिंह में एक बड़ा गुण यह भी था कि वे आपकी किसी बात से सहमत नहीं होंगे तब वे उस बात पर अपनी असहमति तो करेंगे लेकिन अपने सम्बन्धों पर आंच नहीं आने देंगे।

बसरेयर कांड :- बसरेयर कांड में पुलिस ने एक दलित महिला और उसके पुत्र को किसी जुर्म में गिरफ्तार किया और उन पर अत्याचार किये। दोनों के कपड़े उतार कर एक कोठरी में बंद कर दिया। ये किसी माँ के अपमान की इंतहा थी इस घटना से जनता में आक्रोश फैल गया और विधायक होने के नाते मुलायम सिंह ने उस प्रदर्शन का नेतृत्व संभाला। एक बड़ी संख्या में अपने लोगों को इकठ्ठा कर के दोनों बेकसूरों को छुड़ाने के लिए थाने पर हमला कर दिया उस घटना में पुलिस ने भीड़ पर गोली चलाई कुछ लोग मारे गए और तमाम लोग घायल हुए जिनमें मुलायम सिंह भी थे। पुलिस ने उनके खिलाफ मुकदमा दायर कर जेल में डाल दिया। वे ढाई साल तक जेल में रहे। उस मुक़दमे में कोर्ट ने पुलिस के सारे अधिकारियों को दोषी करार दिया और दलित माँ बेटे पर अत्याचार की निंदा की और मुलायम सिंह को बाइज्जत बरी किया।

मुलायम सिंह का राजनैतिक कद इस घटना से बहुत ऊँचा हो गया और वे जनता का विश्वास जीतने में सफल रहे। हाईकोर्ट के इस फैसले के बाद भी मुलायम सिंह को जेल से रिहा नहीं किया गया क्योंकि तब तक आपातकाल की घोषणा हो चुकी थी और मुलायम सिंह को नत्थू सिंह के निकट होने के अपराध में गिरफ़्तार कर लिया गया।

आपातकाल के बाद 1977 में आम चुनाव हुए। उत्तर प्रदेश में मुलायम सिंह विशाल बहुमत से जीत कर पुनः विधायक बने और चौधरी चरण सिंह के कृपापात्र मुलायम सिंह थे ही अतः राम नरेश यादव की सरकार में उनको सहकारिता जैसा महत्वपूर्ण मंत्रालय का कैबिनेट मंत्री बनाया गया।

कुश्ती के मैदान में मुलायम सिंह की शारीरिक शक्ति और हृदय का बड़प्पन दोनों देखकर न सिर्फ राजनीतिक गुरू नत्थू सिंह प्रभावित हुए बल्कि जनता भी मुरीद हो गई

मुलायम सिंह ने उस भरोसे को जिससे उनको मंत्री बनाया गया था उसे कायम रखा और पहली बार उत्तर प्रदेश में सहकारी समितियों के चुनाव संपन्न कराए जिसकी तारीफ़ विपक्ष के नेता पूर्व सहकारिता मंत्री एनडी तिवारी ने सार्वजनिक रूप से की।

मंत्री बनने के बाद भी मुलायम सिंह की सहजता और जन साधारण से संपर्क रखने की प्रवृत्ति में कोई बदलाव नहीं आया। वे अपने विधानसभा क्षेत्र में अभी भी साइकिल से शादियों में आया जाया करते थे।

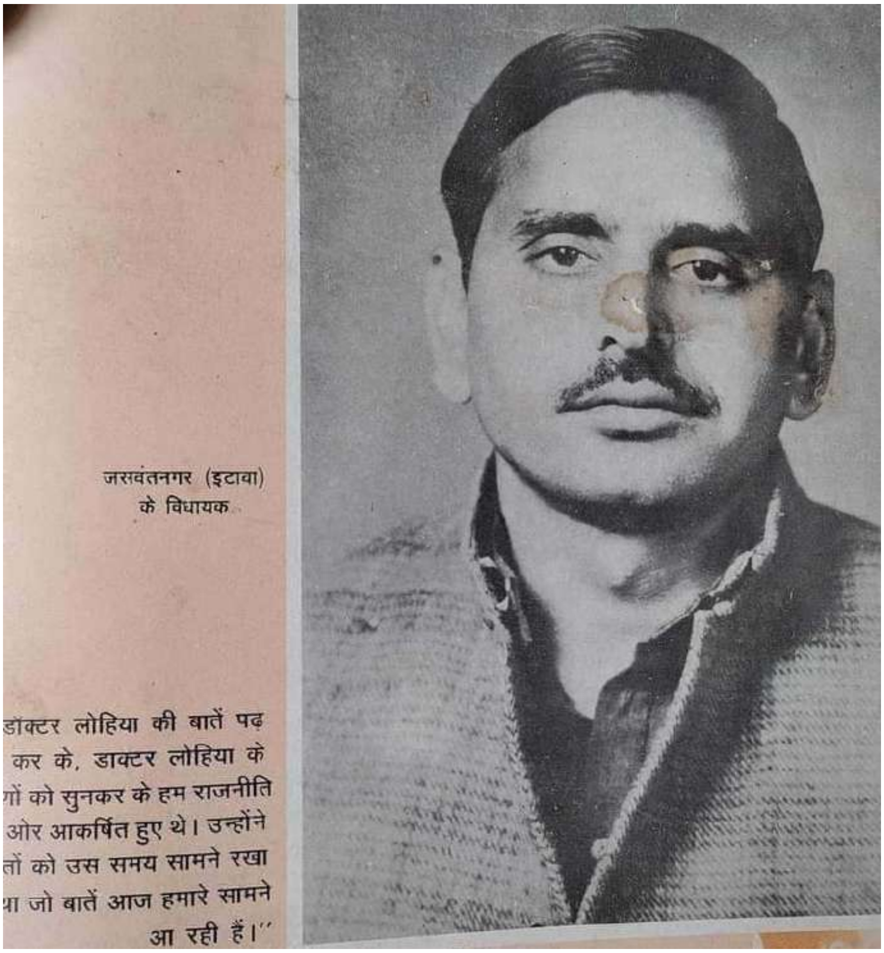
लोहिया जी का सिद्धांत था कांग्रेस हटाओ और देश बचाओ जबकि उनके निधन के बाद मुलायम सिंह ने यह कहना प्रारम्भ किया कि कांग्रेस और बीजेपी का मतदाता, धनदाता एक ही है इसलिए कांग्रेस को इतना कमजोर मत करना कि बीजेपी सत्ता में आ जाए जो एक सांप्रदायिक और समाजवाद विरोधी पार्टी है।

आपातकाल के बाद देश की राजनीति में एक बड़ा महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ क्योंकि आपातकाल के बाद जितने भी कांग्रेस से विमुख संगठन थे वे सब एक हो गए।

कुछ समय में ही इंदिरा गाँधी के निधन के बाद देश की सहानुभूति कांग्रेस के पक्ष में चली गई और फिर राजीव गाँधी जीत गए। इस चुनाव में जनता दल एवं सभी दलों का मिलाजुला संगठन चुनाव जीतने में असफल रहा। जनता दल से प्रधानमंत्री वीपी सिंह जी , चंद्रशेखर जी, गुजराल जी, देवगौड़ा जी , चौधरी चरण सिंह जी, मोरार जी देसाई इत्यादि नेता रहे लेकिन फिर भी जनता दल कमजोर हो गया।

इसके बाद बिखराव शुरू हो गया और उस बिखराव में सबसे ज्यादा नुकसान समाजवादी पार्टी का हुआ उस समय हिंदुस्तान के प्रत्येक हिस्से में गाँधी, लोहिया के समाजवादी समर्थक थे।

जयप्रकाश नारायण, आचार्य नरेंद्र देव, डॉ॰ राममनोहर लोहिया, कमलादेवी चट्टोपाध्याय, यूसुफ मेहर अली, अच्युत पटवर्धन और अशोक मेहता आदि उल्लेखनीय नेताओं के समर्थकों ने मुलायम सिंह पर बिखरे समाजवादियों को एकत्रित करने का दबाव डाला जिसके फलस्वरूप 1992 में पूरे भारत के सभी उपेक्षित समाजवादी नेताओं को एकत्रित करके मुलायम सिंह ने समाजवादी पार्टी का गठन कर दिया और समाजवाद की नई परिभाषा



लिखी। जानते हैं समाजवाद क्या है?

समाजवाद- जैसे अंधेरे का इलाज उजाला है उसी प्रकार पूँजीवाद का और उससे जन्मी सामाजिक विषमता का एक मात्र इलाज समाजवाद है। जैसे एकतन्त्रवाद या साम्राज्यवाद का चोली दामन का साथ है, वे एक दूसरे के पूरक हैं, उसी प्रकार लोकतंत्र और समाजवाद का अंतरंग संबन्ध है। एक के बिना दूसरे का अस्तित्व सम्भव नहीं है। रूस सबसे बड़ा समाजवादी देश था पर लोकतंत्र के अभाव में लौह यवनिका के चलते विघटित हो गया।

समाजवाद सार्वजनिक संस्थाओं को अधिकाधिक जिम्मेदारी के पक्ष में रहता है जनसुविधाओं की जिम्मेदारी निजी हाथों में देने से आर्थिक विषमता और बेरोज़गारी बढ़ने का कारण बन जाती है। समाजवाद सत्ता के विकेन्द्रीयकरण का समर्थक होता है जो सार्वजनिक संस्थाओं के पक्ष में इसलिए रहता है कि इससे आर्थिक लाभ की पूंजी सरकार के पास रहती है जो अंततोगत्वा जनहित में व्यय होता है। निजीकरण से अमीर गरीब की खाई और बेरोजगारी दोनों बढ़ती है।

पूंजी और सत्ता का तालमेल अलोकतांत्रिक और जनहित के विरुद्ध होता है और अगर इसमें धर्म का भी तालमेल हो तो लोकतंत्र के विपरीत स्थिति पैदा होती है यह एकतन्त्रवाद और सत्ता के केंद्रीकरण का कारक होता है।

आरएसएस और बीजेपी और उनकी सरकार की विचारधारा संविधान का शुरू से विरोध करती रही है । न वह सत्ता का विकेंद्रीयकरण के पक्ष में है न समाजवाद के। अपनी जातीय और धार्मिक श्रेष्ठता के सिद्धांत के चलते धर्मनिरपेक्षता की मनसा, वाचा, कर्मणा विरोधी है और भारत की मिलीजुली संस्कृति की दुश्मन है

वैश्विक पूँजीवाद और साम्राज्यवाद में शब्दों का अंतर है।

इसीलिए समाजवादी विचारधारा और बीजेपी की सोच में 36 का विपरीत आंकड़ा है। जितना समाजवाद सामाजिक विद्रूपता, विसंगति, विषमता के विरुद्ध है उतनी ही यथास्थितिवादी यह सरकार है तो ये सोच मुलायम सिंह की रही है।

मन मोहक व्यक्तित्व :- मुलायम सिंह का सबसे अच्छा और हृदय को जीत लेने वाला फैसला तब हुआ जब पहली बार समाजवादी पार्टी ने चुनाव लड़ा किन्तु मुलायम सिंह ने चंद्रशेखर के मुकाबले में अपना कोई भी प्रत्याशी नहीं उतारा उसके बाद चुनावी माहौल में चंद्रशेखर के लिए उनके प्रचार में जाकर उनके लिए वोट भी माँगा। ये बड़प्पन सिर्फ मुलायम सिंह में था और इसी लोकतांत्रिक प्रवृत्ति की सराहना उनके विरोधी भी हमेशा से करते थे।

मुलायम सिंह कांग्रेस के खिलाफ थे उसके बाद भी उन्होंने रायबरेली और अमेठी में सोनिया जी के खिलाफ कभी अपना कोई प्रत्याशी नहीं उतारा था क्योंकि ये लोकतान्त्रिक परंपरा को मानते थे जिससे लोकतंत्र में सभी पार्टियां मज़बूत रहें यह गुण जो उनमें था ये बहुत कम नेताओं में होता है। विरोध में भी सहमत और सहमत में भी असहमत ये गुण उनमें हमेश से विद्यमान था।

मुलायम सिंह ने बैकवर्ड एवं अल्पसंख्यकों को मुख्यधारा से जोड़ने के लिए एवं उनके हक़ और अधिकारों के लिए पूरी ताकत से काम किया इस कारण उनपर अन्य विपक्षी दल एवं नेता उंगलियां भी उठाते रहे हैं।

एक बार एक पत्रकार ने मुलायम सिंह से

पूछा कि आप यादवों एवं मुस्लिमों के लिए ज्यादा काम करते हैं जबकि अन्य धर्म, जाति के लोगो की चिंता नहीं करते हैं क्यों?

जवाब में मुलायम सिंह ने कहा कि जनेश्वर मिश्र, मोहन सिंह, बद्री विशाल पित्ती, वृजभूषण तिवारी, रेवती रमण सिंह, भगवती सिंह, बेनी प्रसाद वर्मा, कपिल देव सिंह (राष्ट्रीय महासचिव) इत्यादि नाम गिनाकर उन्होंने कहा आप बताओ मेरी पार्टी में इन सब नेताओं के कद का क्या कोई दूसरा यादव या बैकवर्ड नेता है?

मुलायम सिंह पर एक और आरोप हमेशा से लगाया जाता रहा है कि वे अपराधियों को संरक्षण देते हैं जिसमें मीडिया ने सवाल करते हुए पहला नाम फूलन देवी का लिया उस सवाल का जवाब देते हुए मुलायम सिंह ने कहा कि हम लोहिया जी को मनाने वाले लोग हैं और लोहिया जी हमेशा कहा करते थे कि "भारतीय नारी द्रौपदी जैसी हो जिसने कि कभी भी किसी पुरुष से दिमागी हार नहीं खाई" और एक और बात कही थी कि "इस देश की औरतों के लिए आदर्श सावित्री नहीं, द्रौपदी होनी चाहिए" तो हम लोहिया जी को मानने वाले लोग हैं और फूलन देवी, जिनके साथ घोर अन्याय हुआ था उनको मैंने मुख्यधारा से जोड़ा और उन्हें सांसद बनाया उन्हें समाज में सिर उठा कर जीने का अधिकार देने के लिए ही मेरा ये कदम था।

जब मीडिया को ये जवाब मिला तो उन्होंने आगे पुनः सवाल करते हुए कहा कि इनके अलावा भी बहुत से अपराधियों का साथ आप देते हैं तब मुलायम सिंह ने कहा कि जनेश्वर मिश्र, मोहन सिंह, उदय प्रताप सिंह, चौधरी हरि मोहन सिंह इत्यादि नेता पार्टी में हैं, आप बता दीजिये अगर उनपर एक भी मुक़दमे हों और इन सभी के कद का कोई एक नेता बताओ जिस पर आपराधिक मुक़दमे दर्ज हों? तो इससे आप उनके कौशल को समझ सकते हैं।

वे उत्तर देने में बिल्कुल झिझकते नहीं थे और कोई कैसा भी सवाल उनसे कर ले उससे वे कभी चिढ़ते नहीं थे और न उसके लिए मन में कोई खटास रखते थे वे कह देते थे कि अब आपके पास जानकारी कम है तो हम क्या कर सकते हैं जो सच था मैंने आप को बता दिया और जानकारी देकर आपके ज्ञान में वृद्धि की है। ऐसी बातें चलते चलते बोलते थे जिसमें माहौल खुशनुमा हो जाता था और किसी को बुरा भी नहीं लगता था।

समाजवादी पार्टी बनने के बाद एक समय ऐसी स्थिति आ गई थी कि जल्दी ही समाजवादी पार्टी राष्ट्रीय पार्टी बनने जा रही है जब उत्तर प्रदेश में लोकसभा के चुनाव संपन्न हुए जिसमें उस समय समाजवादी पार्टी ने 39 सीटें जीतीं इसके साथ ही, 8 मध्य प्रदेश, उत्तराखंड, बिहार, कर्नाटक, महाराष्ट्र राज्यों में भी पार्टी के सदस्य जीत कर आए।

अयोध्या विवाद का सच :- उसके बाद अयोध्या विवाद जैसे मामले से मुलायम सिंह को काफी नुकसान हुआ पर इस घटना की सच्चाई आज मैं बताता हूँ। पूरी घटना के विषय में मुझे लगता है सभी सत्य नहीं जानते हैं। अयोध्या में हुआ गोली कांड दुखदाई जरूर था। उसका दुःख सबको है। यूपी सरकार को सुप्रीम कोर्ट का आदेश था कि किसी को भी उस विवादित ढांचे को नुकसान करने न दिया जाए और अयोध्या में यथास्थिति बनाए रखी जाए।



राज्यपाल श्री मोहम्मद उस्मान आरिफ से मुख्यमंत्री पद की शपथ लेते हुए (1989)

फिल्म अभिनेता दिलीप कुमार व राज बब्बर का साथ



तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री चन्द्रशेखर के साथ



बसपा अध्यक्ष श्री कांशीराम के साथ



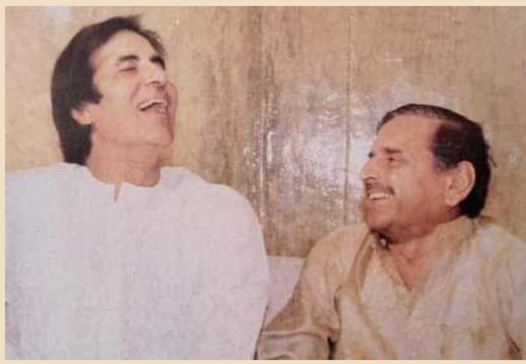


हवाई यात्रा में पत्रावलियों पर दृष्टिपात

तत्कालीन प्रधानमंत्री चौ० चरण सिंह के साथ। बीच में हैं प्रदेश के तत्कालीन सूचना राज्य मंत्री श्री सत्यदेव त्रिपाठी

''चौधरी साहब सीधी-सीधी बात करते थे। खेती और उद्योगों का टकराव नहीं है। खेती के बिना उद्योग नहीं चल सकते, लेकिन उद्योगों के बिना खेती चल सकती है। वह कहा करते थे कि शहरों बिना गाँवों में खुशहाली आ सकती है,





फिल्म अभिनेता अमिताभ बच्चन के साथ





पूर्व मुख्यमंत्री श्री नारायण दत्त तिवारी के जन्म-दिवस समारोह में

एक जनसभा में



इसीलिए यूपी सरकार के निर्देश यूपी पुलिस को थे कि वहाँ पर किसी को जाने न दिया जाए पर जब बड़ी संख्या में लोगों ने वहाँ अफरातफरी जैसा माहौल बना दिया और जबरदस्ती अंदर घुसने लगे, पुलिस वालों के संग हाथपाई पर उतर आए तब पुलिस यथास्थिति बनाने के लिए और सुप्रीम कोर्ट के आदेश का पालन करते हुए ही गोली चलाई जिसमें 17 लोगों की जान गई थी लेकिन बीजेपी ने इसको बढ़ा चढ़ाकर बहुत झूठा प्रचार किया।

इस घटना से कुछ दिन पूर्व मुलायम सिंह ने कुछ साधुओं को गिरफ्तार कर लिया था। उन्हें छोड़ने के लिए वीपी सिंह ने उप गृहमंत्री राम लाल राही को लखनऊ भेजा। यदि मुलायम सिंह उन्हें छोड़ दें तो साधुओं से बातचीत के माध्यम से अयोध्या समस्या का हल निकाल लें लेकिन मुलायम सिंह ने उनकी कोई बात नहीं मानी।

उसके बाद में वीपी सिंह ने मुझे संतोष भारतीय (सांसद) के माध्यम से बुलवाया और मुलायम सिंह से उन साधुओं को छोड़ने के लिए मुझे लखनऊ भेजा।

मैं गया और मुलायम सिंह से सारा घटनाक्रम बताया तो मुलायम सिंह ने हमसे कहा कि वे साधु अगर मैंने छोड़ दिये तो वो सब अंडरग्राउंड हो जायेंगे और मेरे लिए समस्या खड़ी कर देंगे लेकिन जब मैंने उनसे बातचीत की और कहा कि आप प्रधानमंत्री की बात मानिये वर्ना इतिहास में लिखा जाएगा कि मुलायम सिंह के हठ के कारण बातचीत का रास्ता नहीं खुल पाया। कुछ देर के बाद उन्होंने मेरी बात मान ली और साधुओं को छोड़ दिया और इस बात की सूचना टेलीफोन पर प्रधानमंत्री जी को स्वयं दे दी लेकिन मुलायम सिंह का अंदेशा सही निकला, सब साधु अंडरग्राउंड हो गए और गोलीकांड की भूमिका तैयार कर दी।

समाजवाद का मानना है कि धर्म को राजनीति से दूर रखना चाहिए और ये बात सिर्फ मुलायम सिंह ही नहीं लोहिया जी, गाँधी जी स्वयं कहा करते थे।

जब पहली बार समाजवादी पार्टी ने चुनाव लड़ा किन्तु चंद्रशेखर के मुकाबले में मुलायम सिंह ने अपना प्रत्याशी नहीं उतारा। चंद्रशेखर के लिए प्रचार में जाकर उनके लिए वोट भी माँगा। ये बड़प्पन सिर्फ मुलायम सिंह में था

हिंदी भाषा के ध्वजवाहक :- मुलायम सिंह का हिंदी भाषा को लेकर मत बिल्कुल स्पष्ट था। वे हमेशा से हिंदी के पक्षधर रहे हैं। मैं अपना व्यक्तिगत अनुभव आप को बताता हूँ जब मैं पहली बार 1989 में मैनपुरी से सांसद बना तो लोकसभा जाने से पहले मुलायम सिंह ने मुझसे कहा कि गुरूजी आप वहाँ सदन में इंग्लिश में अपनी बात मत कहियेगा वहाँ भी आप को उसी भाषा का प्रयोग करना है जिस भाषा में आपने जनता से वोट मांगे हैं। जब आप हिंदी में बात करेंगे तब आपकी बात को पूरा सदन और देश की जनता अच्छे से समझ पाएगी। अंग्रेजी का प्रयोग आप तभी करियेगा जब कोई हिंदी जानने वाला न हो और वह आपसे कहे कि मुझे इसका मतलब इंग्लिश में बता दीजिये तभी आप इंग्लिश का प्रयोग करियेगा अन्यथा हिंदी का ही प्रयोग आपसे अपेक्षित है। मैंने उनकी बात पर अपनी सहमति दी और जब तक मैं सदन में रहा हिंदी का ही प्रयोग करता रहा।

अब्दुल कलाम साहब :- एक वाकया और है। स्मृति शेष अब्दुल कलाम साहब का उन से मेरी पहली भेंट तत्कालीन रक्षा मंत्री (चिरस्मरणीय) मुलायम सिंह के कार्यालय के प्रतीक्षालय में हुई थी जहाँ हम दोनों अंदर से बुलावे की प्रतीक्षा में बैठे थे। सूचना पहुँचते ही मुलायम सिंह स्वयं बाहर निकले और हम दोनों को स्नेहपूर्ण ढंग से अन्दर लेकर गए। मैं एक तरफ़ बैठकर, उन दोनों की रक्षा मन्त्रालय सम्बन्धित बातें सुन रहा था। कुछ देर बाद मुलायम सिंह ने बड़े सम्मानपूर्वक उनका परिचय मुझसे कराया और कहा कि यह देश के गौरव विख्यात वैज्ञानिक श्री अब्दुल कलाम साहब हैं। मेरा भी परिचय उन्हें देते हुए बताया कि इस समय यह राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग के सदस्य, हिन्दी के बड़े कवि हैं और हँसते हुए कहा मुझे इन्टर क्लास में इंग्लिश भी पढ़ाई है। फिर मुलायम सिंह कलाम साहब की तरफ़ मुखातिब हुए, कलाम साहब आप हिन्दी खूब समझते हैं बोल भी सकते हैं। सरकारी कामकाज आप बेशक अँग्रेजी में करें क्योंकि आपका तकनीक का मामला है पर आपसे मेरा एक निवेदन है कि आप अपने हस्ताक्षर हिन्दी में करें तो मुझे बड़ी





श्री नेल्सन मंडेला तथा तत्कालीन राज्यपाल श्री सत्यनारायण रेड्डी के साथ (1991)



प्रसन्नता होगी।

कलाम साहब उस समय मुस्कुराते हुए विदा लेकर चले गए। बात आई गई हो गई। कुछेक सालों बाद जब एक बार आदरणीय कलाम साहब सैफई पधारे तो उन्होंने अपने भाषण में कबूल किया कि मुझे हिन्दी सीखने की प्रेरणा मुलायम सिंह ने दी।

मुलायम सिंह इंग्लिश के खिलाफ नहीं थे पर वे सरकारी नौकरी में उसकी अनिवार्यता जरूर हटाना चाहते थे। एक बार पीसीएस से उन्होंने अंग्रेजी की अनिवार्यता हटा दी उसके बाद जब पीसीएस की परीक्षा हुई तब उसमें सबसे ज्यादा चयन ग्रामीण क्षेत्र के बच्चों का हुआ। मुलायम सिंह का मानना था कि कोई भी बच्चा किसी भी चीज को अपनी भाषा में जल्दी समझता है बजाये किसी और भाषा के इसीलिए मुलायम सिंह सिर्फ हिंदी ही नहीं भारत के अलग अलग प्रांतो में बोली जाने वाली भाषा को भी उस क्षेत्र में अधिक तरजीह देने की बात कहा करते थे।

उसके कुछ समय बाद ही सूचना प्रौद्योगिकी का विस्फोट हो गया जिसमें मोबाइल, कम्प्यूटर, टैबलेट, टीवी, इंटरनेट इत्यादि इन सब के आने से भाषा कोई भाषा नहीं रही इनके आने पर मैंने एक बयान दिया था कि " हिंदी का भविष्य बहुत उज्ज्वल है लेकिन हिंदी का स्वरूप बदल जाएगा" तो इन सब की बात अलग है पर जितना इंग्लिश का विरोध और हिंदी भाषा का पक्ष मुलायम सिंह ने लिया किसी अन्य नेता ने नहीं लिया।

वक़्त बदलता है और वक़्त के हिसाब से जितनी भी देश की जीवित पार्टियां हैं वे अपनी विचारधारा भी बदल लेती हैं। एक समय था जब हम सब विरोध कर रहे थे कि सत्ता परिवर्तित हो कांग्रेस हटे पर अब आज हमारा मुद्दा है कि बीजेपी हटाओ भले कांग्रेस से समझौता करना पड़े। देश की गंगा जमुनी तहजीब का जितना नुकसान बीजेपी ने किया है उतना इतिहास में किसी भी पार्टी ने नहीं किया है। इस गंगा जमुनी तहजीब की अगर देश के किसी नेता ने सबसे ज्यादा रक्षा की है तो वो मुलायम सिंह हैं।

आज उनके न रहने पर इसी व्यक्तित्व के कारण ही देश में बच्चों से लेकर बुजुर्गों एवं पक्ष से लेकर विपक्ष एवं साथी से लेकर विरोधी तक दुःखी हैं। मुलायम सिंह की लोकप्रियता का जो सबसे बड़ा कारण था वो उनका जनता से जुड़ाव था।

साहित्यकारों का सम्मान :- एक घटना और मैं बताता हूँ। बृजेन्द्र अवस्थी और उर्मिलेश



जी साहित्यकार थे उनके गुज़र जाने की खबर जब मैंने मुलायम सिंह को दी तो मुलायम सिंह ने उनका अंतिम संस्कार राज्य सम्मान के साथ करवाया। ये जानते हुए भी कि वो बीजेपी के प्रसंशक थे दोनों ही साहित्यकार मेरे अंतरंग थे।

मुलायम सिंह ने सभी को सम्मान दिया चाहे वह कलाकार, साहित्यकार, कवि, कुश्ती, समाजसेवा, मीडिया, खिलाड़ी, नृत्यकार, बिरहा गायक हो या राजनीति आदि क्षेत्रों में काम कर रहा हो। इन लोगों को यश भारती जैसा सम्मान दे कर उनके सम्मान को बढ़ाया।

मुलायम सिंह एक और बात कहा करते थे कि वे लोक कलाओं को बढ़ावा देंगे इसके साथ ही गांव के खेलों में भी खोखो, कबड्डी, कुश्ती इत्यादि खेलों को अधिक महत्व देंगे जबकि क्रिकेट को कम देंगे। मुलायम सिंह का फ़िल्मी गानों से कोई सम्बन्ध नहीं था जबकि वे लोक गीतों को बहुत पंसद करते थे।

इतिहास की इकलौती ऐसी सरकार मुलायम सिंह की थी जिसमें 6 साहित्यकारों को मंत्री का दर्जा प्राप्त था जिसमें नीरज जी, सोम ठाकुर, कैलाश गौतम , उदय प्रताप सिंह, सरिता शर्मा, सुनील जोगी आदि थे जिनका सम्मान बढ़ाया था। कलाकारों के जीवन को सुंदरता और सरलता प्रदान करने के लिए यशभारती सम्मान भी दिया।

मुलायम सिंह /आडवाणी जी :- जब मुलायम सिंह बोलने पर उतर आते थे तो बिल्कुल साफ बात करने में हिचकिचाते नहीं थे। मैं संसद भवन के सेन्ट्रल हॉल में बैठा हुआ था मुलायम सिंह लखनऊ से सीधे आए थे। संयोगवश आडवाणी जी भी उस समय सेन्ट्रल हॉल में मौजूद थे।

आडवाणी जी कि रथयात्रा समाप्त हो चुकी थी। मुलायम सिंह ने आते ही आडवाणी जी से सादर नमस्कार किया उसी समय अडवाणी जी ने चुटकी ली "अब हम गिरफ्तार होने को तैयार हैं इस बात के जवाब में मुलायम सिंह ने हँस कर कहा कि आप फिर से कोई वैसा काम करेंगे तब हम आपको जरूर गिरफ्तार करेंगे इस बात के होते ही दोनों लोग हँसने लगे पर मैं जो बात कह रहा हूँ कि आडवाणी जी से ये बात कहना अपने आप में बड़ी बात है क्योंकि आडवाणी जी भी देश के बड़े नेताओं में से एक हैं।

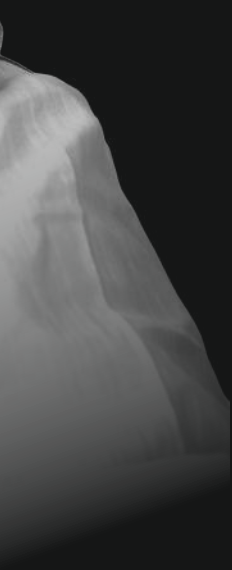
अटल जी :- ऐसे ही मुलायम सिंह की अटल जी से बहुत निकटता थी। सदन में एक बार मुलायम सिंह ने कहा उस समय मैं भी दर्शकों में उपस्थित था कि अगर आप पर आरएसएस का मुखौटा नहीं होता तो मैं आपको अपनी पार्टी का अध्यक्ष बना लेता हम आपकी योग्यता की इतनी इज्जत करते हैं।

मुलायम सिंह जैसे नेता सदियों में कहीं जन्म लेते हैं। मैं उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

फोटो स्रोत : गूगल



22 नवंबर 1939 - 10 अक्टूबर 2022



नेताजी अमर रहें

दुष्यंत कबीर

भारत में पिछड़ों और वंचितों के सबसे सशक्त व्यक्तित्व नेताजी श्री मुलायम सिंह यादव नहीं रहे। भारतीय राजनीति में यह एक युग का अवसान है।

समाजवादी आंदोलन को मजबूत करने के लिए आजीवन संघर्ष करते रहने वाले नेता जी का निधन भारतीय राजनीति के लिए भारी क्षति है। नेताजी को भावपूर्ण नमन एवं श्रद्धांजलि।

बल्कि एक संपूर्ण विचार थे। एक ऐसा विचार जिसने लंबे समय तक न सिर्फ उत्तर प्रदेश बल्कि भारत की राजनीति में अपना अहम योगदान किया है। करीब तीन दशक पहले समाजवादी पार्टी का गठन करने के बाद उन्होंने पार्टी को उन ऊंचाइयों तक पहुंचाया जहां उनकी एक शानदार विरासत पार्टी को निरंतर आगे ले जाने के लिए कृत संकल्प है।

नेताजी मुलायम सिंह यादव का जन्म 22 नवंबर 1939 को इटावा जिले के सैफई गांव में मूर्ति देवी व सुघर सिंह यादव के किसान परिवार में हुआ।





श्रद्धेय नेताजी
22 नवंबर 1939 - 10 अक्टूबर 202




1939 - 10 अक्टूबर 2022
चुनाव चिन्ह



श्रद्धेय नेता
22 नवंबर 1939 - 10


जी
2022


POLICE



वे अपने पांच भाई-बहनों में रतन सिंह यादव से छोटे व अभयराम सिंह यादव, शिवपाल सिंह यादव, राजपाल सिंह और कमला देवी से बड़े थे। राजनीति में आने से पूर्व श्री मुलायम सिंह यादव आगरा विश्वविद्यालय से राजनीति विज्ञान में स्नातकोत्तर और बी टी करने के बाद इन्टर कालेज में प्रवक्ता नियुक्त हुए।

प्रजा सोशलिस्ट पार्टी के बाद डॉ. राम मनोहर लोहिया ने संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी बना ली थी। श्री मुलायम सिंह यादव उस पार्टी के सक्रिय सदस्य बन चुके थे। वे क्षेत्र के गरीबों, किसानों की बात करते और उनकी आवाज उठाते। वे सियासत, पढ़ाई और कुश्ती के अपने तीनों शौक में बराबर समय दे रहे थे। जसवंतनगर में एक कुश्ती के दंगल में युवा मुलायम सिंह पर विधायक नत्थू सिंह की नजर पड़ी। उन्होंने देखा कि मुलायम ने एक पहलवान को पल भर में चित कर दिया। नत्थू उनके मुरीद हो गये और अपना शागिर्द बना लिया।

समय अपनी रफ्तार से चलता रहा। इस बीच वह साल आ गया जब मुलायम सिंह यादव के नेताजी बनने की कहानी शुरू हुई।

वर्ष 1967 का विधानसभा चुनाव हो रहा था। मुलायम के राजनीतिक गुरू नत्थू सिंह तब जसवंतनगर के विधायक थे। उन्होंने अपनी सीट से मुलायम सिंह को मैदान में उतारने का फैसला लिया। डा. लोहिया से पैरवी की और उनके नाम पर मुहर लग गयी। अब मुलायम सिंह जसवंतनगर विधानसभा सीट से सोशलिस्ट पार्टी के उम्मीदवार थे। नाम की घोषणा होते ही मुलायम सिंह चुनाव प्रचार में जुट गये। तब उनके पास प्रचार के लिए कोई संसाधन नहीं था। ऐसे में वे साइकिल चलाते और गांव-

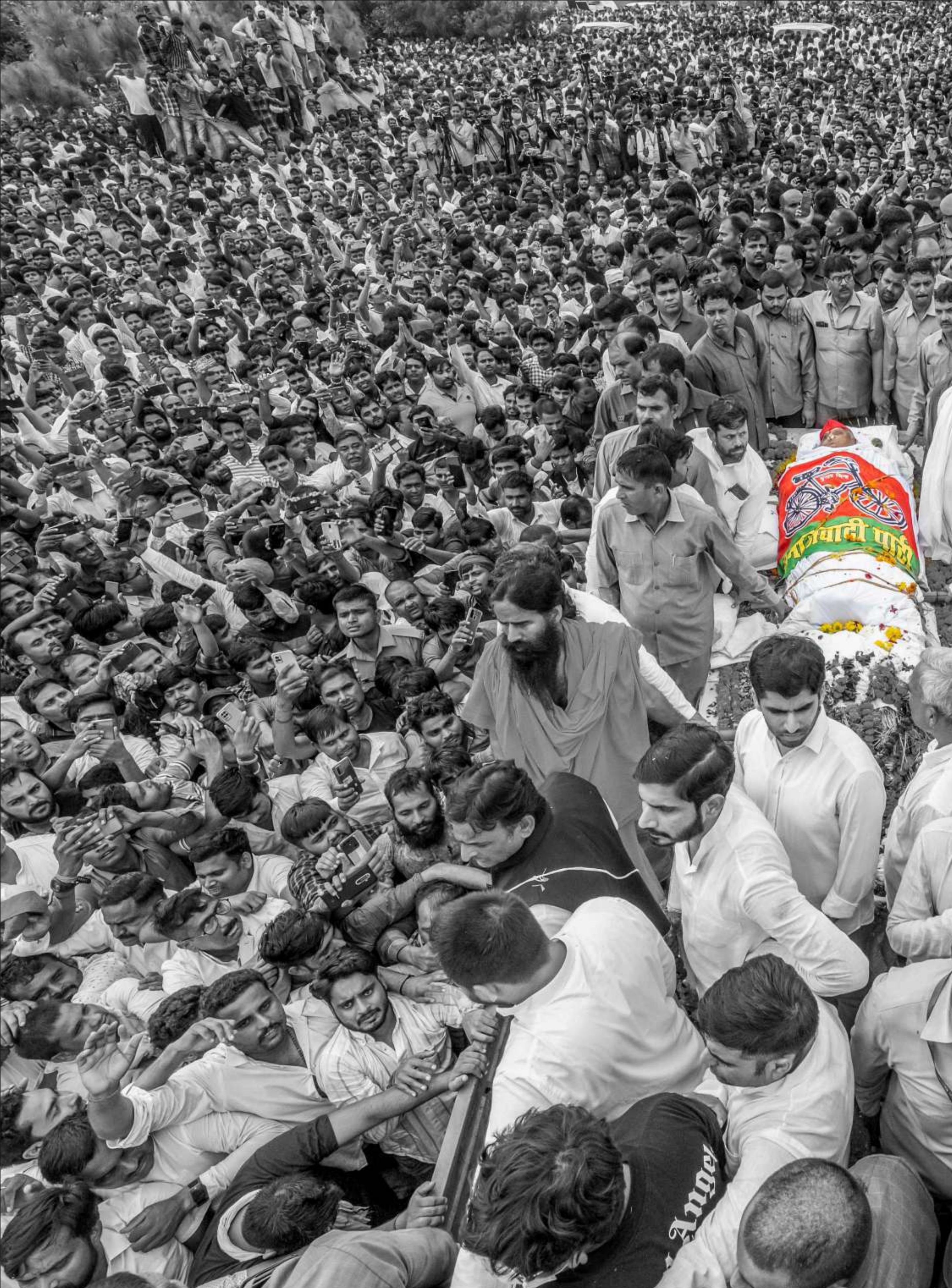






















गांव जाते। उनके पास चुनाव लडने के लिए पैसे नहीं थे। ऐसे में उन्होंने लोगों से मिलकर एक वोट, एक नोट का नारा दिया। वे चंदे में एक रुपया मांगते और उसे ब्याज सहित लौटाने का वादा करते।



इस बीच चुनाव प्रचार के लिए एक पुरानी अंबेस्डर कार खरीदी गई। गाड़ी तो आ गयी लेकिन उसके लिए ईंधन यानी तेल की व्यवस्था कैसे हो, तब लोगों ने फैसला लिया कि हम हफ्ते में एक दिन एक वक्त शाम को खाना खाएंगे। उससे जो अनाज बचेगा,उसे बेचकर अंबेस्डर में तेल भराएंगे। इस तरह कार के लिए पेट्रोल का इंतजाम हुआ। लोगों के समर्थन से सियासत के अखाड़े की पहली लड़ाई मुलायम सिंह जीत गये और सिर्फ 28 साल की उम्र में प्रदेश के सबसे कम उम्र के विधायक बने, और यहां से शुरू हुआ उनके नेताजी बनने का सफ़र।



1967 में वे पहली बार विधायक बने और 1977 में प्रदेश में सहकारिता एवं पशुपालन मंत्री बने। वे 5 दिसंबर 1989 को पहली बार उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री बने। वे तीन बार मुख्यमंत्री रहे। वे देश के रक्षा मंत्री भी रहे। रक्षा मंत्री रहते हुए उन्होंने ऐसा निर्णय लिया इसे आज भी भारतीय सेना और उनके परिजन याद रखते हैं। दरअसल नेताजी ने यह निर्णय लिया कि शहीद होने वाले जवानों के पार्थिव शरीर को पूरे सम्मान के साथ उनके पैतृक स्थान तक पहुंचाया जाएगा जिसकी व्यवस्था भारतीय सेना करेगी। आज नेताजी भले ही हम सबके बीच न हों लेकिन उनके इस निर्णय को याद किया जाता रहेगा।

तीन बार 5 दिसंबर 1989 से 24 जनवरी 1991 तक, 5 दिसम्बर 1993 से 3 जून 1996 तक और 29 अगस्त 2003 से 11










POLICE
POLICE






नेता जी का हर सपना
हमारा अपना है
श्रद्धेय धरती पुत्र
की
संगम यात्रा
भावपूर्ण श्रद्धांजलि


जल पुलिस
प्रयागराज
PRISM
श्रद्धेय नेताजी
22 नवम्बर 1939 – 10 अक्टूबर 2022


श्रद्धेय नेताजी
(22 नवम्बर 1939 – 10 अक्टूबर 2022)
श्रद्धांजलि






श्रद्धेय नेताजी

































मई 2007 तक उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री के रूप में अपने इन कार्यकाल में नेताजी ने सामाजिक न्याय और समतामूलक समाज की स्थापना करने के लिए दर्जनों फैसले लिए। नेताजी ने उत्तर प्रदेश में पिछड़ा वर्ग, अल्पसंख्यक एवं दलित समाज के सामाजिक स्तर को ऊपर करने के लिए विशेषकर महत्वपूर्ण कार्य किया। जाति और धर्म का भेद न करने वाले नेताजी ने सामाजिक न्याय स्थापित करने के साथ ही उत्तर प्रदेश के विकास को भी तेज गति से निरंतर आगे बढ़ाया।

नेताजी अमर रहें!



समाजवाद के लिए समर्पित नेताजी



राजेन्द्र चौधरी
पूर्व कैबिनेट मंत्री, उप्र सरकार

श्रद्धेय श्री मुलायम सिंह यादव जी का हमारा साथ बहुत लम्बे समय तक रहा। किसानों-गरीबों को लेकर वे हमेशा संवेदनशील रहे। गांव-किसान और खेती को लेकर उन पर चौधरी चरण सिंह जी के विचारों की गहरी छाप थी। श्री मुलायम सिंह यादव का संघर्ष और किसानों, गरीबों के प्रति समर्पण भाव देख कर चौधरी साहब नेता जी पर भरोसा करते थे।

5 दिसम्बर 1989 से 24 जनवरी 1991 तक, 5 दिसम्बर 1993 से 3 जून 1995 तक और 29 अगस्त 2003 से 13 मई 2007 तक उत्तर प्रदेश के तीन बार मुख्यमंत्री रहे। इसके अतिरिक्त वे केन्द्र सरकार में रक्षा मंत्री भी रह चुके हैं। उत्तर प्रदेश में सामाजिक सद्भाव को बनाए रखने में श्री मुलायम सिंह ने साहसिक योगदान किया। श्री मुलायम सिंह यादव की पहचान एक धर्मनिरपेक्ष नेता की रही है। उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी सबसे बड़ी पार्टी है।

राजनीति की दुनिया में श्री मुलायम सिंह यादव को सम्मान से नेताजी कहा जाता है। लोकतंत्र, संविधान और धर्मनिरपेक्षता के प्रति श्री मुलायम सिंह यादव की निष्ठा अटूट थी। तमाम बाधाएं आईं लेकिन वे कभी मुलायम सिंह यादव को अपने सामाजिक न्याय, धर्मनिरपेक्षता और लोकतांत्रिक मार्ग से विचलित नहीं कर पाईं।

हम लोगों ने एक साथ 45 वर्षों से अधिक समय तक समाजवादी विचारों और चौधरी चरण सिंह द्वारा बताए रास्ते पर चलते हुए किसानों-गरीबों के लिए संघर्ष किया।

नेताजी लोक दल और फिर समाजवादी पार्टी की मजबूती के लिए अनवरत काम करते रहे। जब चौधरी चरण सिंह जी ने नेताजी को 1980 में लोक दल उत्तर प्रदेश का प्रदेश अध्यक्ष बनाया तो चौधरी साहब ने मुझे भी प्रदेश महामंत्री की जिम्मेदारी दी थी।

आपातकाल में नेताजी ने जेल की यातना सही। वे इटावा जेल में रहे। आपातकाल में मेरठ जेल से रिहाई के बाद मैं गाजियाबाद से 1977 में विधायक निर्वाचित हुआ था। नेताजी जनता पार्टी की सरकार में सहकारिता मंत्री बने। श्री मुलायम सिंह यादव ने अपने प्रथम मंत्रित्वकाल में सहकारिता को नया लोक कल्याणकारी स्वरूप दिया। 1977 में सत्तारूढ़ जनता पार्टी के युवा संगठन "युवा जनता" उत्तर प्रदेश का प्रदेश अध्यक्ष रहते हुए मुझे नेताजी दिशा निर्देश देते थे।

उसके बाद से उनके अंतिम समय तक हमने एक विचारधारा और एक लक्ष्य के लिए काम किया। अब उस विचारधारा की मशाल श्री अखिलेश यादव जी के हाथों में है। वे मजबूती के साथ समाजवादी आंदोलन को आगे बढ़ाने का काम कर रहे हैं।

1980 के बाद से नेताजी के साथ संगठन में हरस्तर पर सहयोगी रहकर हमने समाजवादी आंदोलन को आगे बढ़ाने की दिशा में काम किया। 1987 में क्रान्ति रथ लेकर जब श्री मुलायम सिंह यादव निकले तो मैंने पश्चिमी उत्तर प्रदेश में उनकी कई सभाएं कराने की जिम्मेदारी निभाई। उनकी मेहनत और संघर्ष से किसानों, गरीबों, पिछड़ों, दलितों, अल्पसंख्यकों में भरोसा जागा। कांग्रेस की यथास्थितिवाद के खिलाफ श्री मुलायम सिंह यादव एक विकल्प बनकर उभरे। 1989 के आम विधानसभा चुनाव में पहले क्रांति रथ यात्रा से पूरे प्रदेश में परिवर्तन की जमीन तैयार हुई। मैं उन तमाम राजनीतिक घटनाओं में सहयोगी और साक्षी रहा।

नेताजी दृढ़ निश्चयी, मेहनती और बेहद लोकतांत्रिक थे। इरादों के पक्के थे। उनके फैसलों में राष्ट्रहित और सामाजिक एकता सर्वोपरि रहती थी। वे नफा-नुकसान से परे रहकर फैसले लेते थे। डॉ0 राम मनोहर लोहिया और डॉ0 भीमराव अम्बेडकर, चौधरी चरण सिंह और जयप्रकाश नारायण के विचारों के वे सच्चे अनुयायी थे। जीवनभर उन्हीं के विचारों पर चलते रहे। जाति-धर्म और भेदभाव से दूर नेताजी हर जाति, धर्म, वर्ग को साथ लेकर चले और सबका साथ दिया।

वे गरीबों, किसानों, वंचितों, शोषितों के उत्थान को लेकर हमेशा चिंतित रहते थे। हर वर्ग की राजनीतिक भागीदारी के वे प्रबल पक्षधर रहे। श्री मुलायम सिंह यादव ने प्रदेश में पहली बार दलितों को सत्ता में भागीदारी देने की पहल की थी। यद्यपि उस दिशा में बात आगे नहीं बढ़ सकी। जहां तक सांप्रदायिक शक्तियों से लड़ने की बात है तो श्री मुलायम सिंह यादव से बड़ा कोई और योद्धा नहीं रहा। अगड़ों, पिछड़ों को साथ लेकर दलितों और अल्पसंख्यकों को जोड़कर उन्होंने उत्तर प्रदेश की राजनीति को बदल दिया था।

सन् 2012 में समाजवादी पार्टी को उत्तर प्रदेश के विधानसभा चुनाव में पूर्ण बहुमत मिला। यह पहली बार हुआ था कि उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी अपने बूते सरकार बनाने की स्थिति में थी। नेताजी के सुपुत्र और समाजवादी पार्टी के तत्कालीन प्रदेश अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने बसपा की सरकार के खिलाफ साइकिल यात्राएं की और भ्रष्टाचार का मुद्दा जोरशोर से उठाया। प्रदेश के सामने उन्होंने विकास का एजेंडा रखा। श्री अखिलेश यादव के विकास के वायदों से प्रभावित होकर पूरे प्रदेश में उनको व्यापक जनसमर्थन मिला। चुनाव के बाद नेतृत्व का सवाल उठा तो नेताजी ने वरिष्ठ साथियों से विमर्श के बाद श्री अखिलेश यादव को उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री पद की जिम्मेदारी दी। श्री अखिलेश यादव ने नेताजी के बताए रास्ते पर चलते हुए उत्तर प्रदेश को विकास के पथ पर आगे बढ़ाया है।

यही वजह है कि आज समाजवादी पार्टी उत्तर प्रदेश में तो बड़ी ताकत है ही, उत्तर प्रदेश के बाहर कई राज्यों में भी समाजवादी पार्टी को लोकप्रियता मिल रही है। सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्र में नेताजी का बहुमूल्य योगदान है। श्री मुलायम सिंह यादव जी के निधन से समाजवादी आंदोलन की निश्चय ही बड़ी क्षति हुई है। ऐसी स्थिति में समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव पर समाजवादी विचारधारा को आगे दूर तक ले जाने की जिम्मेदारी है।

जिस तरह श्री अखिलेश यादव जी डटे हैं, विश्वास है कि समाजवादी विचारधारा उनकी अगुवाई में निरंतर मजबूत होते हुए ऊंचाइयों के शिखर पर पहुंचेगी। हम सब समाजवादी साथियों की जिम्मेदारी है कि वे नेताजी के बताए रास्ते पर चलते हुए श्री अखिलेश यादव को संबल दें, उनके हाथ जितने ही मजबूत होंगे, समाजवाद में भी उतनी ही धार आएगी।

श्रद्धेय नेताजी के प्रति विनम्र श्रद्धांजलि।



बड़ी विरासत के स्तंभ



अरुण कुमार त्रिपाठी
वरिष्ठ पत्रकार

मुलायम सिंह यादव की पार्थिव देह भले अग्नि को समर्पित हो गई लेकिन सामाजिक न्याय और धर्मनिरपेक्षता के लिए उनका संघर्ष कभी नष्ट नहीं होने वाला है। भारत का इतिहास जब तक रहेगा और इस दुनिया में नफरत की ताकतों से लड़ने वाले जब तक रहेंगे तब तक मुलायम सिंह का नाम अमर रहेगा। उनका साहस और संघर्ष का जज़्बा और तमाम विरोधी ताकतों के साधने की क्षमता सभी को समझ में आती थी। सभी उसके कायल थे।

मुलायम सिंह जो लड़ाई लड़े और जिस लड़ाई को आगे लेकर जाना है वह अभी खत्म नहीं हुई है। लोकतांत्रिक राजनीति में सत्ता पाने की जरूरत होती है लेकिन उनका कुल संघर्ष सत्ता पाने तक ही सीमित नहीं था। जो लोग यह सोचते हैं कि दिल्ली और उत्तर प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी की दोबारा सरकार से मुलायम सिंह अप्रासंगिक हो गए हैं वे भूल कर रहे हैं। न तो देश में सबका साथ सबका विकास हुआ है और न ही उत्तर प्रदेश में रामराज्य आया है। यह असत्य और घृणा के आधार पर निर्मित बहुसंख्यक वोट बैंक के आधार पर

हासिल की गई सत्ता है जिसके पाये इतने टिकाऊ नहीं हैं जितना दावा हो रहा है।

आने वाले समय में जब भी इन ताकतों के विरुद्ध निर्णायक लड़ाई लड़ी जाएगी उस समय मुलायम सिंह एक प्रेरणा की तरह से खड़े रहेंगे। यही वजह है कि महज तीन बार अधूरे कार्यकाल के लिए मुख्यमंत्री और एक बार देश के रक्षा मंत्री रहने वाले मुलायम सिंह को इस तरह से पेश किया जाता है जैसे वे सत्ता पर स्थायी रूप से विराजमान थे और उसके साधनों का दुरुपयोग करते रहे।

इसकी वजह वे शक्तियां हैं जिनसे उनका मुकाबला था। उनका मुकाबला उन जातिवादी ताकतों से था जो अनुदार, कट्टर और सांप्रदायिक हैं। यह वही संघर्ष है जिसे डा राम मनोहर लोहिया हिंदू बनाम हिंदू के रूप में प्रस्तुत करते थे। डा लोहिया कहते थे इस देश में उदार हिंदू और कट्टर हिंदू की लड़ाई पांच हजार साल से चल रही है लेकिन उसका निर्णय अभी तक नहीं हुआ है। भारत और विशेषकर उत्तर प्रदेश उस कठिन लड़ाई में बुरी तरह उलझा हुआ है।

मुलायम सिंह, डा लोहिया द्वारा वर्णित उसी लड़ाई को लड़ रहे थे। उसी लड़ाई को लड़ते हुए 1989 में उन्हें अयोध्या में उपद्रवी तत्वों को काबू करने के लिए गोली भी चलवानी पड़ी। आज इतिहास इस बात का गवाह है कि मुलायम सिंह ने उन ताकतों से लड़ने का संकल्प लिया और 1993 में वही गठजोड़ बनाया जिसके लिए डा लोहिया ने 37 साल पहले डा भीमराव अंबेडकर के साथ प्रयास किया था। हालांकि तब वह गठजोड़ नहीं हो सका था लेकिन मुलायम ने वह काम कर दिखाया और उसका परिणाम भी प्राप्त किया। तभी सपा और बसपा के तालमेल के बाद फैजाबाद हवाई अड्डे पर नारा लगा कि मिले मुलायम कांशीराम-हवा में उड़ गए जयश्रीराम।

मुलायम सिंह ने उन ताकतों से लड़ने का संकल्प लिया और 1993 में वही गठजोड़ बनाया जिसके लिए डा लोहिया ने 37 साल पहले डा भीमराव अंबेडकर के साथ प्रयास किया था। लेकिन मुलायम ने वह काम कर दिखाया और उसका परिणाम भी प्राप्त किया

डा लोहिया ने कहा था कि डा अंबेडकर के होने से यह यकीन होता था कि एक दिन इस देश से जाति व्यवस्था समाप्त हो जाएगी। उसी तरह मुलायम और कांशीराम का यह गठजोड़ अगर बना रहता तो तय था कि सांप्रदायिकता और जातिवाद पर लगाम लगती और वे पराजित होते। उनके पराजय का मतलब न तो किसी को दबाना-कुचलना था और न ही किसी से बदला लेना था बल्कि सद्भाव के साथ सामाजिक परिवर्तन का मार्ग प्रशस्त करना था।

भाजपा के विरुद्ध बने गठजोड़ के पतन के पीछे वे ऐतिहासिक शक्तियां काम कर रही थीं जिसके बारे में स्वामी धर्मतीर्थ ने हिस्ट्री आफ हिंदू इम्पीरियलिज्म में उल्लेख किया है। उनका कहना है कि इस देश में जब भी सामाजिक परिवर्तन की पहल हुई है तो उसे पलट देने के लिए गहरी साजिश रची गई । इसलिए भारत में सामाजिक परिवर्तन हमेशा छला जाता रहा है। मंडल आयोग भी उसका प्रमाण है।

लंबे समय से ठंडे बस्ते में पड़ी मंडल आयोग की रिपोर्ट जिन स्थितियों में लागू हुई वह घटना सभी को विदित है। निश्चित तौर पर उससे लालू प्रसाद और मुलायम सिंह सामाजिक तौर पर मजबूत हुए और देश के अन्य पिछड़ा वर्ग की लम्बे समय से लंबित मांग पूरी हुई।

ठीक उसी वक्त भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष लालकृष्ण आडवाणी ने रथ यात्रा निकाल कर देश को धार्मिक आधार पर ध्रुवीकृत कर दिया। ऐसे समय में रथ यात्रा का उद्देश्य जाहिरा तौर पर भले ही कुछ और था मगर जो मीमांसा हुई उससे यही निष्कर्ष निकला कि इसका तात्कालिक लक्ष्य सामाजिक परिवर्तन की धार को कुंद करने और सांप्रदायिकता के माध्यम से सामाजिक न्याय को पटकनी देने का ही था।

उनकी राह में दलित और पिछड़ा वर्ग की एकता यानी मुलायम और कांशीराम की एकता एक बड़ी बाधा थी और सपा बसपा की सरकार गिराकर और मायावती की



सरकार बनाकर उन्होंने उसे भी मिटा दिया।

समाजवादियों ने बांधी गांठ पिछड़ा पावै सौ में साठ' का नारा लगाते हुए मात्र तेरह साल की उम्र में गिरफ्तारी देने वाले मुलायम सिंह इन साजिशों को समझते थे इसलिए उन्होंने एक सच्चे पहलवान और सच्चे समाजवादी की तरह से हारने के बाद लड़ने और लड़ने के बाद फिर जीतने का सिलसिला जारी रखा। वे तीसरी बार 2003 में मुख्यमंत्री बने और चौथी बार 2012 में समाजवादी पार्टी को पूर्ण बहुमत हासिल हुआ तो अखिलेश यादव को सत्ता सौंपी।

दरअसल मुलायम सिंह यादव, महात्मा गांधी, लोहिया, जयप्रकाश और चरण सिंह की विरासत के मजबूत स्तंभ थे। दिखाने के लिए भारतीय जनता पार्टी ने

आज जब देश नए सिरे से सांप्रदायिकता और फासीवाद से लड़ रहा है तो मुलायम सिंह की विरासत बहुत प्रेरक हो सकती है

भले 1980 में अपने संविधान में गांधीवादी समाजवाद को शामिल कर लिया हो लेकिन वास्तव में गांधीवादी समाजवादी तो मुलायम सिंह और उनके समाजवादी साथी ही कहे जाएंगे।

डा लोहिया ने साफ शब्दों में लिखा है कि महात्मा गांधी की हत्या उसी हिंदू बनाम हिंदू की लड़ाई का परिणाम थी जो लंबे समय से इस देश में चल रही है। गांधी को सिर्फ इसलिए नहीं गोली मारी गई कि वे मुसलमानों की रक्षा की बात कर रहे थे बल्कि उन्हें इसलिए भी गोली मारी गई क्योंकि वे इस देश से अस्पृश्यता और जाति व्यवस्था को मिटाने के लिए सबसे बड़े आंदोलन की कमान संभाले हुए थे।

इतिहास गवाह है कि मुलायम सिंह भी उन्हीं शक्तियों के निशाने पर थे। मुलायम सिंह जब लखनऊ के कालिदास मार्ग पर अपने आवास में बैठक कर प्रदेश के सांप्रदायिक तनाव को नियंत्रित कर रहे थे तो अचानक दिल्ली से आए कमांडो ने उनका आवास घेर लिया था। उन्होंने तत्कालीन प्रधानमंत्री चंद्रशेखर को फोन किया कि यह क्या है? इस पर चंद्रशेखर का कहना था कि उनकी जान को खतरा है। बावजूद इसके मुलायम सिंह बिना डरे

हुए डटे रहे और प्रदेश में सांप्रदायिकता की आंधी से निपटने के लिए उसी तरह रैलियां करते रहे जैसे महात्मा गांधी करते थे।

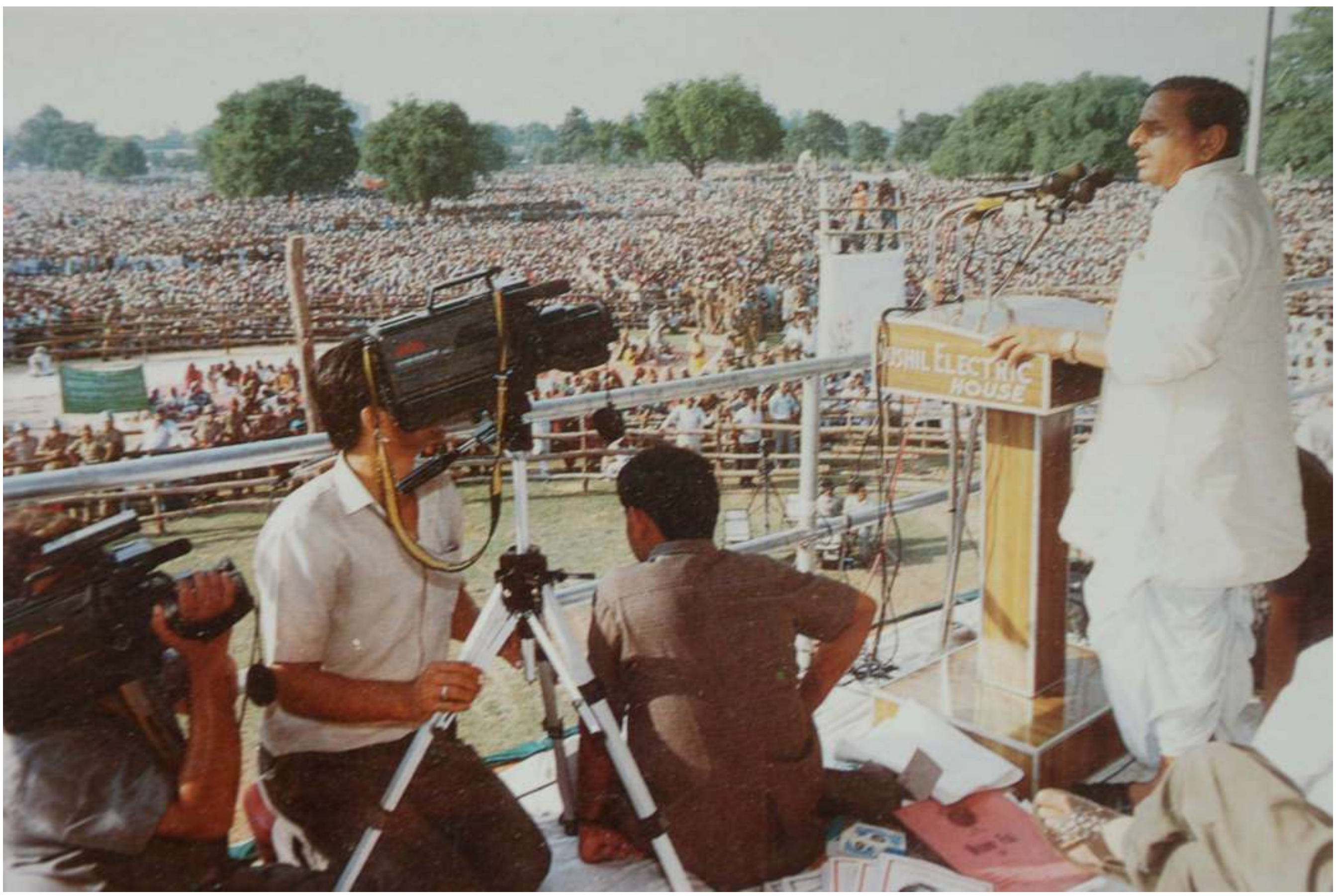
मुलायम सिंह लोगों को समझाते रहे कि इस देश के मुसलमान और हिंदुओं में कोई फर्क नहीं है। जो मुसलमान इस देश में हैं उनका उन आक्रांताओं से कोई लेना देना नहीं जो देश को लूटकर चले गए। उन्होंने अपनी रैलियों में यह बात भी कही कि इस देश के सारे मुस्लिम शासक वैसे क्रूर और अत्याचारी नहीं थे जैसा बताया जाता है। उनमें से कई शासक बहुत उदार थे और अपने शासन में हिंदुओं को पूरी भागीदारी देते थे।

मुलायम सिंह की इसी वीरता के कारण मद्रास(चेन्नई) में हुई राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद की बैठक में उनका नायक की तरह से स्वागत हुआ। राजीव गांधी, चंद्रशेखर, ज्योति बसु, करुणानिधि, शरद पवार और हरकिशन सिंह सुरजीत सभी ने उनका समर्थन किया और मदद करने का भरोसा दिया। आज जब देश नए सिरे से सांप्रदायिकता और फासीवाद से लड़ रहा है तो मुलायम सिंह की वह विरासत बहुत प्रेरक हो सकती है।

वे डा लोहिया के समाजवादी विचारों को लागू करने का भरसक प्रयास करते थे। डा लोहिया ने जेल, फावड़ा और वोट का कार्यक्रम दिया था। वे उस पर खरे उतरते थे। चाहे नागरिक अधिकारों के लिए आपातकाल का संघर्ष हो, चाहे किसानों के लिए रामकोला की लड़ाई हो या फिर चीन के विरुद्ध आंदोलन का मामला हो, वे संघर्षों में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेते थे।

1967 में जब वे पहली बार विधानसभा पहुंचे तो उसी साल दूसरी बार डा लोहिया संसद में पहुंचे थे। फर्रुखाबाद लोकसभा क्षेत्र से डा लोहिया चुने गए थे और उसी का एक क्षेत्र जसवंतनगर भी था। वहां से मुलायम सिंह चुने गए थे। मुलायम सिंह ने वहां से डाक्टर साहब को 10,000 वोटों की लीड दिलाई थी।

रचनात्मक कार्यक्रम चलाने में भी मुलायम सिंह का कोई सानी नहीं है। आज भी लखनऊ में डा लोहिया और जनेश्वर मिश्र के नाम पर बने पार्क उसके प्रमाण हैं। उन्हीं की प्रेरणा से मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने आगरा लखनऊ एक्सप्रेस वे और लखनऊ मेट्रो का रिकार्ड समय में निर्माण कराया। भूमि सेना का गठन भी डा लोहिया के बताए गए रचनात्मक कार्यक्रम का विस्तार था। जयप्रकाश नारायण के नाम पर





संग्रहालय का निर्माण भी उसी का हिस्सा रहा है।

वोट की राजनीति में सपा ने 2004 में लोकसभा की 36 सीटें हासिल करके अपनी प्रभावशाली ताकत बनाई। उसके बाद 2009 में उसकी लोकसभा सीटें भले 23 पर आ गई हों लेकिन 2012 में विधानसभा में 224 सीटें पाकर सपा ने प्रदेश में अपने दम पर पूर्ण बहुमत की सरकार बनाई।

एक सच्चे समाजवादी के तौर पर मुलायम सिंह को डा लोहिया की सप्तक्रांति और जेपी की संपूर्ण क्रांति का लक्ष्य पाना चाहिए था पर वे वैसा नहीं कर सके लेकिन नवउदारवाद की गंभीर चुनौती के सामने अगर वे अपने को संवैधानिक मूल्यों की रक्षा तक केंद्रित रख सके तो यह भी कोई

रक्षा मंत्री के रूप में वे चीन के खतरे के प्रति सेना को तैयार करते रहे और बाद में भी लगातार सतर्क करते रहे। वे तिब्बत के सवाल को मजबूती से उठाते थे और चाहते थे कि भारत सरकार को तिब्बत के जायज हक के लिए खड़ा होना चाहिए।

छोटी बात नहीं है। नवउदारवाद की यह आंधी समाजवादी व्यवस्थाओं को पूरी दुनिया में ध्वस्त कर रही है। पूर्वी यूरोप में सोवियत संघ की समाजवादी व्यवस्था के साथ ही रोमानिया, पोलैंड, चेकोस्लोवाकिया, हंगरी, पूर्वी जर्मनी सभी देशों की समाजवादी व्यवस्थाएं ध्वस्त हो गईं। सोवियत संघ टूट गया।

उसी के कारण पश्चिम बंगाल में तीन दशक से चली आ रही वाममोर्चा सरकार ध्वस्त हो गई। त्रिपुरा की सरकार चली गई। केरल की सरकार भी जैसे तैसे खिंच रही है। ऐसे में मुलायम सिंह से यह अपेक्षा रखना कि वे समाजवाद को ले आएंगे कुछ ज्यादा बड़ी अपेक्षा है लेकिन बुर्जुआ लोकतंत्र की सीमाओं में उनसे समाजवादी एजेंडा को लागू करने के लिए



उनसे जो बना उन्होंने करने की कोशिशें कीं। अंग्रेजी की जगह पर हिंदी को लाने के लिए समाजवादी कटिबद्ध थे और मुलायम सिंह ने उसके लिए लगातार अभियान चलाया। हालांकि उसी के लिए अंग्रेजी प्रेस उनका मजाक भी उड़ाता रहा लेकिन वे विचलित नहीं हुए। उसी के साथ उन्होंने उर्दू को भी राज्य की दूसरी सरकारी भाषा का दर्जा देने का प्रयास किया।

रक्षा मंत्री के रूप में वे चीन के खतरे के प्रति सेना को तैयार करते रहे और बाद में भी लगातार सतर्क करते रहे। वे तिब्बत के सवाल को मजबूती से उठाते थे और चाहते थे कि भारत सरकार को तिब्बत के जायज हक के लिए खड़ा होना चाहिए। यह विश्व व्यवस्था के हित में है और भारत का भी हित इसी में है। मुलायम नव उदारवादी अर्थव्यवस्था के खिलाफ भी प्रतिरोध जताते रहे। उनकी पार्टी के प्रस्ताव लगातार बहुराष्ट्रीय कंपनियों के विरुद्ध होते थे।

उन्होंने पूंजीवादी और सांप्रदायिक समय में समाजवादी और धर्मनिरपेक्ष ताकतों को एकजुट करने की कोशिश की लेकिन उन शक्तियों से भी नफरत नहीं रखी जिनसे लड़ रहे थे। यानी विचारों पर दृढ़ लेकिन व्यवहार में लचीलापन रखा।

मुलायम सदैव लोकतंत्र के लिए लड़े, समाजवाद के लिए लड़े और संविधान के लिए लड़े। आज अखिलेश यादव भी वही कर रहे हैं। वास्तव में उनका समाजवाद परिवारवाद में नहीं संघर्ष में यकीन करता था। यही उनकी विरासत है। मुलायम सिंह आजादी के अमृत महोत्सव में विदा हुए हैं लेकिन हमें यह याद दिलाते हुए गए हैं कि इस आजादी की हर कीमत पर रक्षा करनी है।



ऐसे थे मुलायम



अरविन्द मोहन
लेखक, वरिष्ठ पत्रकार

ऐसा कम ही दिखता है कि किसी शख्स की अंतिम यात्रा में जनसैलाब उमड़ पड़े। आंखों में आंसुओं का सैलाब दिखे, उसकी जुदाई के गम में लोगबाग तड़प उठें। विरोधी-समर्थक की खाई पट जाए। नेताजी यानी मुलायम सिंह यादव के दुनिया से रुखसत होने पर जिस तरह सब गमगीन हुए, उसने नेताजी के अतीत के पन्नों पर गौर करने के लिए मजबूर कर दिया।

आखिर क्या था उस काया में जिसके सब दीवाने थे, सब क़ायल थे। कुछ खास न होता तो अंतिम यात्रा के बाद भी सबकी जुबां पर मुलायम सिंह यादव का नाम न होता। सब गमगीन थे और हैं भी। शायद इसे ही कहते हैं शान से रुखसत होना। अतीत के झरोखे से देखने पर पता चलता है कि आखिर क्यों सबके लिए इतने खास थे मुलायम सिंह यादव।

मुलायम ने यह आदर और मान किसी पद पर बैठने भर से नहीं हासिल किया था। जीवन भर की लड़ाई, सिद्धांतों के चुनाव, सही फैसलों पर टिकने और कभी बुनियादी उसूलों से समझौता न करने के चलते यह सब हासिल किया था। अपनी जन पक्षधर राजनीति, समाजवादी और गाँधीवादी उसूलों पर चलकर हासिल किया था।

तीन बार उत्तर प्रदेश जैसे बड़े प्रदेश का मुख्यमंत्री और केंद्र में मंत्री बनने वाले

मुलायम सिंह का एक बार प्रधानमंत्री बनाना भी तय लग रहा था। जीवन के अनेक अवसरों पर सफल तो कभी असफल होने का अनुभव लेते मुलायम आगे बढ़ते गए। धूल झाड़कर नई लड़ाई के लिए तैयार हुए।

सिद्धांत के तौर पर कोई बात कहना, मुट्ठी भर तपे तपाये कार्यकर्ताओं के साथ कोई पोजीशन लेना, किताबी लेखन में शुद्धता बरतना एक बात है और व्यवहार में उसे उतारना या अमल करना एकदम दूसरी बात। मुलायम की राजनीति का ज्यादातर हिस्सा व्यावहारिक मोर्चे पर बीता था। जब 1990 में संघ परिवार अपनी पूरी ताकत से अयोध्या में लगा हुआ था। कोई कायदा कानून मानने को तैयार न था तब मोर्चे पर मुलायम ही थे जिन्हे कानून व्यवस्था की रखवाली से लेकर संविधान और राष्ट्रीय आंदोलन की विरासत की रखवाली करनी थी।

मुलायम और उनके लोगों ने उत्तर प्रदेश के हर गाँव, शहरों की हर गलियों में सांप्रदायिक शक्तियों से लोहा लिया। ऐसे सिद्धांतों की रखवाली का जिम्मा अकेले मुलायम और उनके साथियों पर नहीं डाला जा सकता। सांप्रदायिक राजनीति को तेज करके देश की सत्ता हथियाने वाले लोग और मुसलमानों को दोयम दर्जे का नागरिक बना देने वाले लोग इसके लिए ज्यादा जिम्मेदार हैं। न्याय-अन्याय की लड़ाई में न्याय के पक्ष में खड़े मुलायम इसी चलते बड़ा बनाकर निकले। सिर्फ मुसलमानों के मन में ही नहीं सेक्युलर राजनीति के हर पक्षधर के मन में।

बहुत सामान्य किसान, पिछड़ी जाति और पिछड़े गाँव में पैदा मुलायम को राजनीति में भी किसी सुरक्षा के साथ काम करने का अवसर नहीं मिला। उनके नेताओं ने वैचारिक सफाई कराई, चरित्र निर्माण किया लेकिन चुनावी और सत्ता की लड़ाई में साधन से लेकर किसी भी किस्म की मदद नहीं की। मुलायम ने बाद के दिनों में ऐसा अवसर अपने पुत्र अखिलेश से लेकर न जाने कितनों को दिए बल्कि की लोग तो उनकी राजनैतिक कमाई पर ही फलते-फूलते रहे।

1967 की विधायकी से लेकर 1977 की सरकार में जूनियर मंत्री रहते ही यह समझ आ गया कि सत्ता की राजनीति में कैसे कैसे लोग बैठे हैं जिन्होंने गाहे-बगाहे दांव-पेंच से उन्हें चित करना चाहा पर इस खेल में मुलायम जीते, बचे और सबसे आगे तक आए तो जरूर उन्होंने लोहिया, राजनारायण, जनेश्वर की व्यावहारिक





राजनीति को विस्तार दिया।

मुलायम सिंह ने देश में सबसे लंबे समय तक समाजवादी विचारधारा की पार्टी चलाने का रिकार्ड बनाया है और पार्टी आज भी मजबूत स्थिति में है और चलती जा रही है। पुराने समाजवादी आंदोलन का रिकार्ड आपसी लड़ाई और टूट-फूट का भी है। मुलायम की सपा में बड़ी फूट नहीं हुई और पार्टी निरंतर मजबूत होती गई।

अपनी पहली सरकार के समय मुलायम सिंह ने अपनी राजनैतिक शिक्षा को जमीन पर उतारने की काफी कोशिश की। सांप्रदायिकता से लड़ाई और पिछड़ों के पक्ष में खड़े होने वाला पहलू तो प्रबल था और सबको याद रहा लेकिन इसी दौर में अंग्रेजी की विदाई हुई, मुलायम ने खुद दक्षिण भारत के दौरे किए-जनता दल के विस्तार के लिए। तमिलनाडु में उनके दौरे काफी सफल रहे जबकि वे हिन्दी में ही बोलते थे। उनकी मूर्तियां लगाई गईं। इसी तरह मुलायम तब पाकिस्तान से रिश्ते सुधारने और लोहिया की कल्पना का भारत-पाक महासंघ बनाने की बात भी करते थे। उन्होंने मधु लिमये से यह पूछकर चौंका दिया कि क्या आप मेरे प्रदेश में लोहिया के बताए अनुसार भूमि सेना बनाने में मदद करेंगे क्योंकि अब की स्थिति में उससे ज्यादा रोजगार और पैदावार बढ़ाने की गुंजाइश मुझे दिखाई नहीं देती।

मुलायम ने बहुत पहले 1966 में इटावा में हुए आल इंडिया यादव महासंघ के अधिवेशन में स्वागताध्यक्ष की जिम्मेवारी निभाई थी। उन्होंने यादव और मुसलमानों का अटूट गठजोड़ बनाया जो शायद ही कभी बहुत कमजोर पड़ा। सामाजिक/जातीय संतुलन साधने में उस्ताद माने गए मुलायम कभी जातिवादी नहीं कहे गए क्योंकि जो जिस काबिलियत का था और जिसमें सलाहियत थी, उसे पार्टी में पूरा मान-सम्मान मिला। यही वजह रही कि सब नेताजी के प्रिय थे और नेताजी सबके प्रिय।

एक इतनी बड़ी पार्टी, देसज विचार की परंपरा को आगे बढ़ाना हो, इतने दबावों के बीच मण्डल की रिपोर्ट मानने का दबाव बनाना या अयोध्या मामले में सरकार कुर्बान करना हो, उत्तर प्रदेश जैसे बड़े राज्य के प्रशासन में बदलाव करना हो, बड़े नेताओं से अच्छा व्यवहार करना हो और अपने असंख्य कार्यकर्त्ताओं से बेपनाह प्रेम करना हो, मुलायम ने अकेले दम पर यह सब करके अपना मुकाम बनाया था।

बहुत सीनियर नौकरशाह और कैबिनेट सचिव तक पहुंचे सुब्रमण्यम के संस्मरण बताते हैं कि ऊपर से गंवई दिखने वाले और एक साफ वैचारिक आग्रह से शासन करने वाले मुलायम प्रशासन की बारीकियों को किस कुशलता से समझते थे और कैसे उनका व्यावहारिक समाधान निकालते थे। और मौकों पर प्रशासनिक सख्ती दिखाने से भी गुरेज नहीं करते थे। तो यही मुलायम थे, यही उनका तरीका था, यही उनकी कमाई है।



खांटी समाजवादी थे मुलायम

जयशंकर पांडेय

धोती कुर्ता पहन कर सामंतवाद, जातिवाद, पूंजीवाद और सांप्रदायिकता से लोहा लेने वाली नेताओं की पीढ़ी के आखिरी योद्धा थे मुलायम सिंह यादव। वह, संघर्ष करने, संगठन बनाने और चुनावी राजनीति में चमत्कारी प्रदर्शन करने वाली क्षमताओं के धनी थे।

उत्तर प्रदेश की राजनीति पर चार दशक से भी ज्यादा समय तक छाए रहने की क्षमता रखने वाले मुलायम सिंह को लोग भले क्षेत्रीय क्षत्रप कहें लेकिन भारत में नफरत और सांप्रदायिकता और जातिगत वर्चस्व के विरुद्ध संघर्ष करने का इतिहास जब भी लिखा जाएगा तो उनका नाम उसमें प्रमुखता से दर्ज होगा, उनकी अंतिम यात्रा पर सैफई में उमड़े विशाल जनसमुदाय ने यह साबित कर दिया।

ऐसी अंतिम यात्राएं उन्हीं नेताओं की होती हैं जिनके नाम से जनता का दिल धड़कता है। उन्होंने बार बार चुनाव जीतकर ही नहीं अपनी अंतिम यात्रा में भी यह साबित कर दिया कि `जिसका जलवा कायम है उसका नाम मुलायम है।' यानी मुलायम सिंह की देह सांसारिक अर्थों में भले मौत से हार गई हो लेकिन उनकी कीर्ति पराजित और धूमिल होने वाली नहीं है।

लोग भले कहें कि मुलायम सिंह की राजनीति तब शुरू होती है जब वे महज 28 साल की उम्र में जसवंतनगर क्षेत्र से विधानसभा पहुंचे लेकिन वास्तव में उनका राजनीतिक बपतिस्मा तभी हो गया था जब वह महज 13

साल की उम्र में समाजवादी नेता महेंद्र सिंह की प्रेरणा से गिरफ्तार हुए थे। तब उन्होंने 28 दिन की जेल भी काटी थी। उसी से लग गया था होनहार बिरवान के होत चीकने पात।

उन्होंने बाकी पंद्रह सालों में पढ़ाई की। राजनीति शास्त्र के शिक्षक बने। इस तरह उन्होंने उस नारे को गांव के स्तर पर साकार कर दिया जो लोग दिल्ली के बड़े विश्वविद्यालयों में लगाते हैं, 'पढ़ो लड़ाई लड़ने को, लड़ो पढ़ाई पढ़ने को, लड़ो समाज बदलने को।' उसी के साथ उनके जेहन में उन नारों का अर्थ भी उतरने लगा कि-- `समाजवादियों ने बांधी गांठ पिछड़ा पावै सौ में साठ। दाम बांधो काम दो वरना गद्दी छोड़ दो। डा लोहिया का फरमान रेल का डिब्बा एक समान या फिर रोटी कपड़ा सस्ती हो दवा पढ़ाई मुफ्ती हो।'

सात बार विधायक और आठ बार लोकसभा के सदस्य रहने वाले मुलायम सिंह तीन बार प्रदेश के मुख्यमंत्री रहे। वे जून 1996 से मार्च 1998 तक भारत के रक्षा मंत्री रहे। उनके सभी कार्यकाल भारी उथल पुथल वाले रहे। मुलायम सिंह के बारे में तमाम राजनीतिक विश्लेषक कहते हैं कि वे तब चमकते हैं जब सत्ता से बाहर होते हैं। यही कारण है जब वे सत्ता में होते थे तो व्यवस्था को बदलने के लिए विपक्ष की भूमिका निभाते थे और जब विपक्ष में होते थे तब तो उस भूमिका में होते ही थे। यही असली समाजवादी चरित्र है।

समाजवादी तब तक शांत बैठ ही नहीं सकते जब तक डा राम मनोहर लोहिया के सपनों की सप्तक्रांति न हो जाए या जयप्रकाश नारायण की संपूर्ण क्रांति न हो जाए। साइकिल से चलकर सत्ता तक पहुंचे मुलायम सिंह ने बड़ी गाड़ियों की सवारी करते हुए और हवाई जहाज में उड़ते हुए भी साइकिल को कभी भुलाया नहीं। उन्होंने साइकिल को अपनी पार्टी का चुनाव चिन्ह बनाया और अपने आवास से लेकर बाहर सड़क तक साइकिल को गरिमा प्रदान की।

डॉ राम मनोहर लोहिया की प्रेरणा से गैर-कांग्रेसवाद के रास्ते पर चल कर उन्होंने 1967 में चौधरी चरण सिंह के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश में सरकार बनवाने में मदद की तो आपातकाल में जेल यात्रा भी की। 1977 में उत्तर प्रदेश में मंत्री बने। 1989 में मुख्यमंत्री बने तो मंडल आयोग की रपट लागू हुई और उसके क्रियान्वयन में मजबूती देने का काम किया क्योंकि उन्हें पिछड़ा पावै सौ में साठ





का लक्ष्य पूरा होता दिख रहा था। इस बीच अयोध्या के आंदोलन ने जोर पकड़ा तो उन्होंने संवैधानिक दायित्वों का निर्वहन किया। वे भारत के धर्मनिरपेक्ष ढांचे की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध थे।

मुलायम सिंह का बड़ा दूरदर्शी फैसला समाजवादी पार्टी का गठन था। 1992 में उन्होंने पार्टी गठित की। बड़ी बात यह है कि जब डंकल प्रस्ताव और विश्व व्यापार संगठन के माध्यम से दुनिया और देश में वैश्वीकरण, निजीकरण और उदारीकरण का तूफान उठ रहा हो तब उन्होंने समाजवादी पार्टी के नाम से एक राजनीतिक दल का गठन किया और निराश हो रहे समाजवादियों को एक मंच पर इकट्ठा किया।

उस वक्त ऐसा दौर शुरू हो गया था जब समाजवाद विचार और शब्द के प्रति नफरत फैलाई जा रही थी और कहा जा रहा था कि संविधान की प्रस्तावना में दिए गए समाजवाद और धर्मनिरपेक्षता शब्द को हटा देना चाहिए था। भारतीय जनता पार्टी जिसने 1980 में अपने गठन के साथ गांधीवादी समाजवाद के सिद्धांत को त्याग दिया था और खुल्लम खुल्ला पूंजीवाद का समर्थन और बहुसंख्यक सांप्रदायिकता का उग्र रूप लेकर उपस्थित थी। कांग्रेस पार्टी ने तो अंतरराष्ट्रीय पूंजी के समर्थन में उदारीकरण की प्रक्रिया 1991 में ही पीवी नरसिंह राव के नेतृत्व में तेज कर दी थी।

उस वातावरण में समाजवादी पार्टी नाम रखना और उस रास्ते पर चलना देश के सबसे बड़े प्रदेश में संघर्ष का बिगुल बजाना एक साहस का काम था लेकिन वे साहस के साथ कौशल भी रखते थे। उन्होंने कांशीराम के साथ गठजोड़ करके और उत्तर प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी को हराकर यह दिखा दिया कि सांप्रदायिकता को कैसे पराजित किया जा सकता है।

महात्मा गांधी, डॉ राम मनोहर लोहिया, जयप्रकाश नारायण और चरण सिंह से होती हुई जो समाजवादी गांधीवादी विरासत इस देश का दुनिया में सिर ऊंचा कर सकती है उसी मजबूत कड़ी का नाम है मुलायम सिंह यादव। वे वास्तव में डा लोहिया के जेल, फावड़ा और वोट के सिद्धांत पर चलने वाले नेता थे। उन्होंने जाना था कि निराशा के कर्तव्य क्या हैं और उसे वे पूरा करते थे। उन्हें मालूम था कि लोकतंत्र में कितना संघर्ष किया जाए, कितनी रचना की जाए और चुनाव किस तरह से जीता जाए। उनकी विरासत भविष्य में समाजवादी आंदोलन को नई ऊंचाई तक ले जा सकती है क्योंकि विरासत में भी वही कूवत, दूरदृष्टि और संघर्ष का माद्दा साफ-साफ दिखाई देता है जो कि मुलायम सिंह यादव में था।

(लेखक समाजवादी पार्टी के पूर्व विधायक हैं)

दिल से भी मुलायम थे नेताजी



शफी आज़मी
वरिष्ठ पत्रकार

जननायक बनने के लिए कार्यकर्ताओं की कितनी अहमियत होती है, यह जानने के लिए नेताजी को करीब से समझना होगा। नेताजी के लिए कार्यकर्ता कितने मायने रखते थे, एक-एक कार्यकर्ता को लेकर उनकी फिक्र के बारे में संस्मरण याद आ रहा है।

बात 2 अप्रैल 2003 की है। मैं हिन्दुस्तान अखबार में था। नेताजी को देवरिया के राजकीय इंटर कालेज मैदान में सभा करनी थी। मुझे कवर करना था। नेताजी गोरखपुर एयरपोर्ट पर विशेष विमान से आए। भीड़ बहुत थी। एयरपोर्ट के विशेष कक्ष में विश्राम-जलपान की व्यवस्था थी। वह कक्ष में दाखिल ही हुए थे कि पीछे से श्री जगदीश यादव जी के साथ मैं और राष्ट्रीय सहारा के वरिष्ठ फोटो जर्नलिस्ट श्री मुकेश पाण्डेय जी सामने पहुंच गए। मुकेश जी को देखते ही वह चौंके पहला सवाल? तुम यहां कैसे? मुकेश जी ने बताया कि नेताजी अब यहीं आ गया हूं। खुश हुए। पीठ थपथपाई और बोले- बढ़िया। मेहनत से काम करो। लम्बे अरसे बाद भी पहचान लेने पर मुकेश भाई गदगद हुए। देवरिया में सभा चल रही थी और अभी स्थानीय नेता बोल रहे थे कि मेरे मन में विचार कौंधा। मैने नोटबुक से एक पन्ना अलग किया। उसपर नेताजी के नाम चंद अल्फाज लिखे। सिर्फ इतना ही कि आपके साथ गोरखपुर चलना चाहता

हूं, बातचीत करनी है।

नीचे अपना परिचय लिखकर रुक्का उन तक पहुंचाने की जिम्मेदारी मंच की सीढ़ियों पर डटे गोरखपुर के भाई सिंहासन यादव जी को सौंपी। पहले वह तनिक हिचकिचाए पर मेरे साथ निजी संबंधों की वजह से हामी भर ली। भाई सिंहासन ने मंच पर पहुंचकर मेरी पर्ची पीछे से नेताजी के हाथ में थमा दी। मैं देख रहा था। नेताजी ने पढ़ा और उसे बगल में बैठे पार्टी के एक वरिष्ठ नेता को थमा दिया। नेताजी का संबोधन चल ही रहा था कि लहीम-शहीम एक शख्स प्रेस गैलरी में आया और पूछा कि शफी आज़मी साहब कौन हैं? मैने कहा-नाचीज़ को ही शफी आजमी कहते हैं तो उसने बताया कि आपको नेताजी के साथ चलना है, मेरे साथ आइए।

एम्बेसडर कार में बायीं जानिब नेताजी, बीच में एक वरिष्ठ नेता बैठे और दाहिनी खिड़की पर मुझे जगह मिली। उस वक्त सपा ने मंडल अध्यक्ष बनाना शुरू किया था। जौनपुर वाले डा केपी यादव पहले और शायद अंतिम अध्यक्ष थे क्योंकि उसके बाद यह व्यवस्था खत्म हो गई। बहरहाल, डा केपी यादव वहां पहुंचे तो नेताजी ने सामने की सीट पर बैठने का इशारा किया।

केपी भाई आगे के दरवाजे पर पहुंचे मगर वहां पहले से मौजूद ब्लैक कैट कमांडों ने आगे बैठने की इजाजत नहीं दी। वह दूसरे वाहन की तरफ बढ़ गए। काफिला आगे बढ़ा तो चिलचिलाती धूप में कार्यकर्ताओं का उत्साह-जुनून देखकर नेताजी ने मुझसे कई बार खिड़की का शीशा गिराकर यह कहते हुए देखने को कहा-लिखिएगा जरूर, कार्यकर्ता कितना पसीना बहा रहे हैं। कंजूसी न करियेगा लिखने में। कार्यकर्ताओं की भीड़ को चीरता हुआ नेताजी का काफिला हाईवे पर आ चुका था। रास्ते में तमाम बातों के बीच नेताजी बीच में यह जरूर कहते-केपी को बुरा लगा होगा, वह नाराज़ हुआ होगा कि उसे गाड़ी में जगह नहीं मिली।

मैंने कहा कि एक कार्यकर्ता के लिए इतने फिक्रमंद क्यों हैं। बस, लगा कि मैंने उनकी दुखती रग पर हाथ रख दिया। रौ में बोलने लगे-आप नहीं जानते, आज जो कुछ हूं, इन कार्यकर्ताओं की बदौलत हूं। ये खफा हो गए तो मैं कुछ नहीं। ये मेरे लिए जीते हैं तो मुझे इनके लिए जीना पड़ेगा ही। गोरखपुर के इंजीनियरिंग कालेज पहुंचने से पहले ही उन्होंने बताया कि दिवंगत दीपनारायण यादव जी के घर चारू चंद्रपुरी कालोनी जाऊंगा, उनके बेटे आनंद यादव को ढांढस बंधाना है।

मैंने जैसे ही इच्छा जताई कि मैं वहीं उतर जाऊंगा, खबर भी फाइल करनी है तो खुश हो गए गोया उन्हें मांगी मुराद मिल गई, तपाक से बोले, यह अच्छा है, वहां से एयरपोर्ट तक केपी को साथ ले लूंगा, उसकी नाराजगी दूर हो जाएगी। मतलब साफ था कि उनके दिमाग में इन 53 किमी में भी केपी की नाराजगी ही घूम रही थी। कार्यकर्ताओं की इस तरह फिक्र करते थे नेताजी।

2007 में चुनाव का बिगुल बज गया था। श्री भानु प्रकाश मिश्र गोरखपुर सदर से सपा प्रत्याशी बनाए गए थे। पार्टी के एक नेता जफर अमीन डक्कू को भानु का प्रत्याशी बनाया जाना पसंद नहीं था। नेताजी इस विरोध से वाकिफ थे।

अभी तक पार्टी फोरम पर ही विरोध था पर संशय था कि विरोध सड़क पर न आ जाए। उन्होंने सभा तय कर दी। नेताजी ने पहले ही रणनीति बना ली थी। वह आए। पहले जफर अमीन डक्कू को बुलाया और उनसे ही घोषणा पत्र पढ़वाकर उनका गुस्सा कम किया। बताया कि डक्कू की पार्टी में काफी अहमियत है। बाद में भानु भाई और डक्कू साहब का हाथ थामकर ऊपर उठाकर अवाम को संदेश दिया कि दोनों एक साथ हैं।

सभा खत्म हुई। नेताजी मंच से नीचे उतरने लगे तो मीडिया के साथियों के साथ उन तक पहुंचने की कोशिश की। उन्होंने इशारे से मुझे आने को कहा। वह बोले-कोई सवाल नहीं, सवाल का जवाब ही छाप दोगे और सभा की बात छूट जाएगी। सभा छापो। मैंने एक दिन बाद छापने का वायदा किया तो वह मान गए। वाहन का दरवाजा पकड़कर खड़े हो गए। सवालों के जवाब दिए। कार में बैठने लगे तो उन्होंने कान में कहा- डक्कू को समझाना, गलती न करे फिर सरकार बनने जा रही है। डक्कू की नाराजगी वैसे भी नेताजी की हिकमत अमली से काफूर हो चुकी थी। इतनी शिद्दत से एक-एक कार्यकर्ता के बारे में जानकारी रखना, उसे मनाना, मरहम लगाना नेताजी को बखूबी आता था। नाम से ही नहीं दिल से भी मुलायम होना कोई नेताजी से सीखे।

ऐसे ही कोई नहीं बनता है मुलायम सिंह!

मधुकर त्रिवेदी
वरिष्ठ पत्रकार

आजादी के बाद से अब तक उत्तर प्रदेश में 43 मुख्यमंत्रियों की नाम पट्टिकाएं लग चुकी हैं। इनमें कई एकाधिक बार मुख्यमंत्री की कुर्सी पर बैठे हैं लेकिन इस गिनती में एक नाम अलग से दिखाई देता है वह है मुलायम सिंह यादव का। बिना किसी लाग लपेट और संशय के यह बात रिकार्ड में रखी जा सकती है कि इस एक नाम के अलावा जो भी मुख्यमंत्री बने हैं वे अपने संगठन-राजनीतिक दल के नामित रहे हैं। अपने संगठन कौशल से उन्हें बड़ा पद नहीं मिला।

श्री मुलायम सिंह यादव ने खुद कुआं खोदा और फिर पानी पिया। उनकी न कोई राजनीतिक पारिवारिक पृष्ठभूमि थी, न ही वे किसी नामी राजनीतिक घराने से थे। वे एक सामान्य कृषक परिवार से थे जिनकी पढ़ाई किसी नामी गिरामी कॉलेज में नहीं हुई। वे सामान्य मास्टर बने। गांव सैफई के लोकप्रिय खेल कुश्ती के मैदान में दांव पेंच सीखकर कई कुश्तियां लड़ीं। दूर तक तब ऐसी कोई संभावना नहीं दिखाई दे रही थी कि गांव का गबरू पहलवान प्रदेश की राजनीति का केन्द्र बनेगा।

कहावत है पूत के पांव पालने में ही दिख जाते हैं। 15 वर्ष की कच्ची उम्र में नहर रेट आंदोलन में जेल जाकर अपनी राजनीतिक यात्रा का श्रीगणेश करने वाला यह किशोर एक दलित गंगा प्रसाद जाटव और बाल्मीकि के घर खाना क्या खा आया कि सामाजिक बहिष्कार की नौबत आ गई। यह तब की बात है जब जाति की जड़ता से निबटना बड़े जोखिम का काम था।

नहर रेट आंदोलन में जेल जाकर अपनी राजनीतिक यात्रा का श्रीगणेश करने वाला यह किशोर एक दलित गंगा प्रसाद जाटव और बाल्मीकि के घर खाना क्या खा आया कि सामाजिक बहिष्कार की नौबत आ गई। ये थे अपने नेताजी

यह कहानी आज के नौजवानों के लिए कहानी ही रहेगी कि कैसे मुलायम सिंह जी ने अपने बूते गांव-गली छानते हुए यादवों में जातीय अस्मिता जगाई, दलितों को साथ लिया ओर अपनी टोली में जनेश्वर मिश्र, बृजभूषण शरण तिवारी, मोहन सिंह और मोहम्मद आज़म खान जैसे नगीने भी जुटाए। न केवल उत्तर प्रदेश अपितु कई अन्य राज्यों में भी प्रभाव बढ़ाया। अपने को सेक्युलर ताकतों के बीच प्रतिष्ठित किया।

श्री मुलायम सिंह यादव अपने व्यवहार में दलगत सीमाओं से परे रहे किन्तु यह तथ्य भी भुलाया नहीं जा सकता कि मुख्यमंत्री पद के हर दौर में उन्हें अपनों से ही चुनौतियां मिलती रहीं। केन्द्र की साजिशों के वे शिकार होते-होते बचे तो सिर्फ अपनी त्वरित निर्णय की क्षमता और स्थिति को सही भांपने की वजह से। अयोध्या आंदोलन में उन्होंने जो दृढ़ता दिखाई उसके बहुत लोग कायल रहे किन्तु उनको व्यक्तिगत रूप से कई लांछनों को भी झेलना पड़ा। वे इस आग में तपकर कुंदन से दमके।

राजनीति में माहिर होना ही केवल मुलायम सिंह बन जाना नहीं था। गरीबी का दर्द क्या होता है, वे जानते थे अतः किसान और गरीब उनकी प्राथमिकता में रहे। सुबह 5 बजे से उनका जनसम्पर्क शुरू हो जाता था। हर दुखी की मदद उनका स्वभाव बन गया। मुख्यमंत्री के रूप में जब कोई फाइल आती थी तो उनका जोर रहता था कि कोई छोटा कर्मचारी सजा न पाए। अपनों का संरक्षण, छोटे से छोटे कार्यकर्ता का सम्मान उनसे सीखने लायक था। कार्यकर्ता के सुख-दुःख में शामिल रहने की वजह से ही यह माना जाता था कि किसी की तकलीफ की खबर



उन तक पहुंचाना ही काफी था फिर उसका योगक्षेम देखना उनका काम था। कार्यकर्ताओं से जुड़ाव ऐसा था कि गांव-कस्बों के पचासों लोगों को नाम लेकर बुलाते थे।

विरोध को विरोध नहीं मानते थे, मतभेद माने मनभेद नहीं, यही पाठ तो वे सिखाते थे।

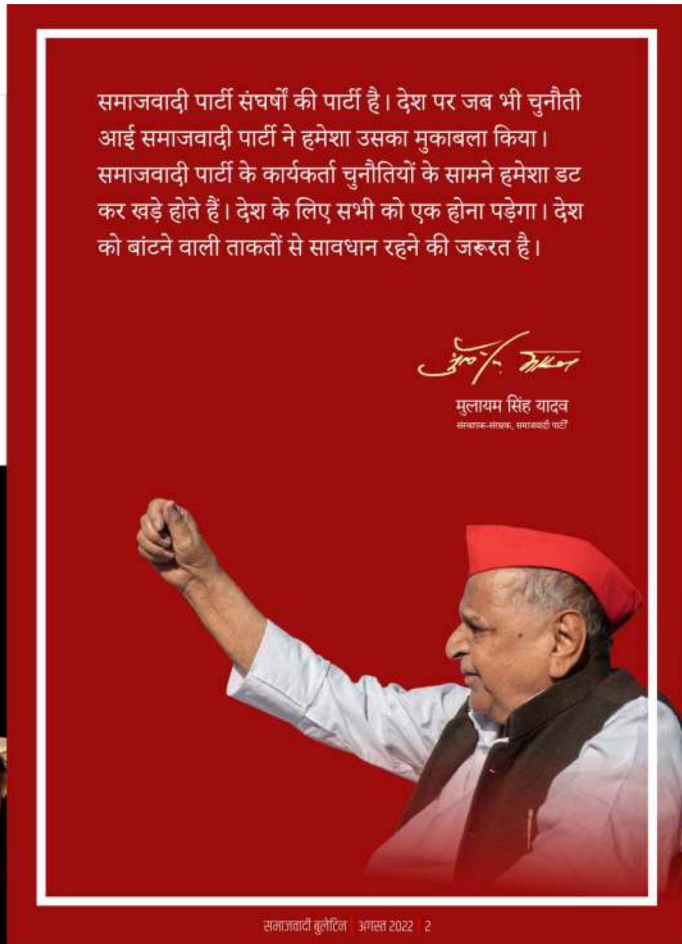
पहली बार मुख्यमंत्री बनते ही चुंगी समाप्ति की घोषणा की। केन्द्र में रक्षामंत्री बने तो शहीद सैनिक जवान का पार्थिव शरीर उनके घर तक पहुंचाने के साथ ससम्मान अंत्येष्टि की व्यवस्था की। साम्प्रदायिकता के खिलाफ लड़ाई के वे अप्रतिम योद्धा थे। धर्मनिरपेक्षता के जुझारू सेनापति भी वही थे। वे इस मत के थे कि देश कानून से चलेगा, आस्था से नहीं। सिद्धांत से डिगना उन्होंने नहीं सीखा था, यही उनका जलवा था।

श्री मुलायम सिंह यादव ने समाजवादी पार्टी के रूप में ऐसा संगठन दिया है जोकि भाजपा की राजनीति का दृढ़ता से मुकाबला करने में समर्थ है। मुलायम सिंह यादव की कितनी जनस्वीकार्यता थी उनके निधन पर देशभर के प्रमुख नेताओं द्वारा उनको श्रद्धांजलि देने आने से साबित है। दलीय सीमाओं से परे थे मुलायम सिंह। वे अनोखे और अकेले ऐसे नेता थे जो सबके लिए आदरणीय थे।

आज हर कोई समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव में ही मुलायम सिंह यादव का अक्स देखता है। लोगों को विश्वास है कि मुलायम सिंह यादव की विरासत को श्री अखिलेश जी आगे ले जाएंगे लेकिन हाल फिलहाल तो हर तरफ यही आवाज है कि मुलायम सिंह यादव के निधन के साथ एक युग का अंत हो गया है।

नेताजी जो बोल गए


परिवर्तन की लहर है। इसमें युवाओं की बड़ी भूमिका होगी। समाजवादी विचारधारा को फैलाने की सबसे ज्यादा जिम्मेदारी युवा पीढ़ी पर है। समाजवादी आंदोलन भेदभाव मिटाने के लिए है। हमें सभी को साथ लेकर चलना है।
मुलायम सिंह यादव


समाजवादी पार्टी संघर्षों की पार्टी है। देश पर जब भी चुनौती आई समाजवादी पार्टी ने हमेशा उसका मुकाबला किया। समाजवादी पार्टी के कार्यकर्ता चुनौतियों के सामने हमेशा डट कर खड़े होते हैं। देश के लिए सभी को एक होना पड़ेगा। देश को बांटने वाली ताकतों से सावधान रहने की जरूरत है।
मुलायम सिंह यादव
संस्थापक-संरक्षक, समाजवादी पार्टी
समाजवादी बुलेटिन | अगस्त 2022 | 2


समाजवादी आंदोलन भेदभाव मिटाने के लिए है। समाजवादी पार्टी को यह दायित्व निभाते रहना है। हमें महिलाओं, युवाओं, गरीबों और किसानों की बेहतरी के लिए काम करना होगा। सभी वर्गों ने समाजवादी पार्टी का साथ दिया है। हमें सभी को साथ लेकर चलना है।
मुलायम सिंह यादव

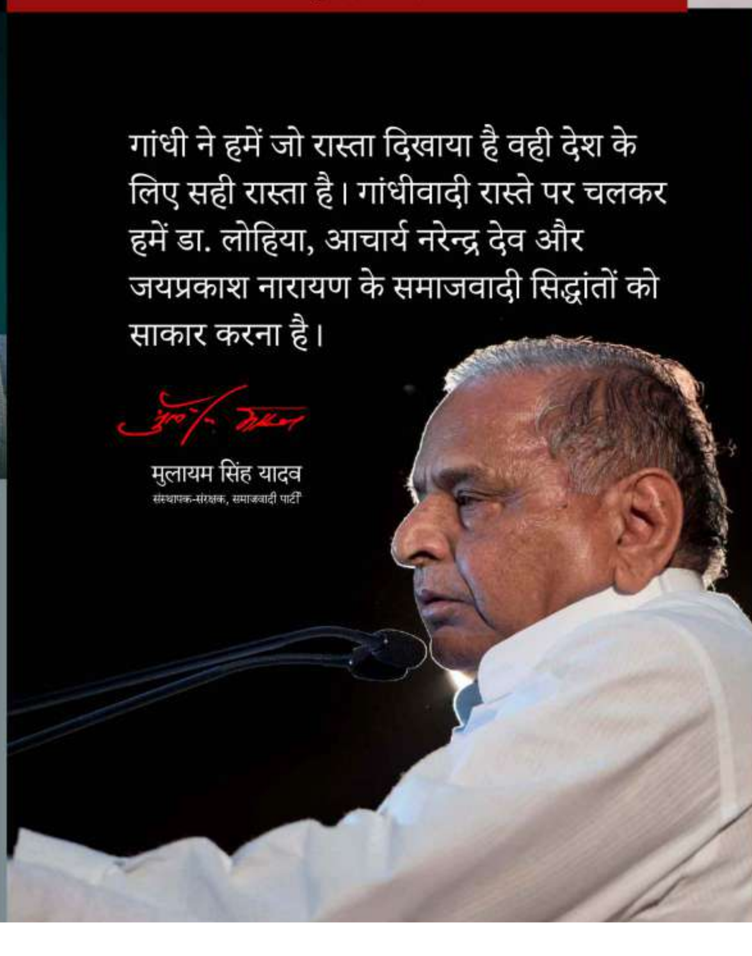



वर्तमान सरकार में कुशासन का बोलबाला है। महंगाई, भ्रष्टाचार पर काबू पाने की इनकी कोई नीति ही नहीं है। न गरीबी के खिलाफ कोई संकल्प है। समाज में बराबरी लाने के बजाए विषमता की खाई को बढ़ाया जा रहा है। समाजवादियों के सामने हालात बदलने की बड़ी जिम्मेदारी है।
मुलायम सिंह यादव

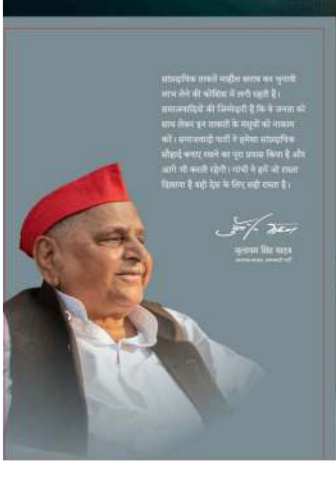

समता और संपन्नता समाजवाद का मूल मंत्र है। समाज के सब लोगों को विकास के अवसर मिले इसके लिए समाजवादियों को बढ़-चढ़कर काम करना होगा। सिर्फ नारे लगाने से समाजवाद नहीं आएगा, बल्कि समाजवादी सिद्धांतों को समझना और अपनाना होगा। समाजवादी विचारधारा को फैलाने की जिम्मेदारी सबसे ज्यादा युवा पीढ़ी पर है।
मुलायम सिंह यादव




किसी में भेद नहीं करना चाहिए। चाहे वह औरत-मर्द हों या गोरे-काले। क्षेत्रीयता के आधार पर भी भेद नहीं करना चाहिए। नौजवान समाजवादियों को समाजवादी पार्टी की विचारधारा, डा. राम मनोहर लोहिया के सभी भाषणों को पढ़ना चाहिए क्योंकि उनको जनता के बीच में बोलना होता है। वे जितना पढ़ेंगे, उतना अच्छा बोलेंगे।
मुलायम सिंह यादव


गांधी ने हमें जो रास्ता दिखाया है वही देश के लिए सही रास्ता है। गांधीवादी रास्ते पर चलकर हमें डा. लोहिया, आचार्य नरेन्द्र देव और जयप्रकाश नारायण के समाजवादी सिद्धांतों को साकार करना है।
मुलायम सिंह यादव
संस्थापक-संरक्षक, समाजवादी पार्टी


पूरी दुनिया में परिवर्तन की लहर है। सपा शुरू से परिव
की राजनीति करती रही है। नौजवान ही माहौल बनाते
नौजवानों की बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। देश को शक्तिश
बनाने वाले तीन लोग हैं, किसान, नौजवान और व्यापार


सांप्रदायिक ताकतें माहौल खराब कर चुनावी लाभ लेने की कोशिश में लगी रहती हैं। समाजवादियों की जिम्मेदारी है कि वे जनता को साथ लेकर इन ताकतों के मंसूबों को नाकाम करें। समाजवादी पार्टी ने हमेशा सांप्रदायिक सौहार्द बनाए रखने का पूरा प्रयास किया है और आगे भी करती रहेगी। गांधी ने हमें जो रास्ता दिखाया है वही देश के लिए सही रास्ता है।
मुलायम सिंह यादव


किसान अन्नदाता हैं और उनके हितों
को सर्वोच्च प्राथमिकता मिलनी
चाहिए। जब तक खेती की उन्नति नहीं
होगी, गांवों का विकास नहीं होगा।
लेकिन जहां देश के अन्य सारे धंधे
फायदे में हैं वहीं किसान घाटे में है।
जब तक देश का किसान सुखी नहीं
होगा तब तक देश संपन्न और महान
नहीं बन सकता।
मुलायम सिंह यादव


हर तरफ महंगाई, भ्रष्टाचार एवं कुशासन का बोलबाला है। करोड़ों लोगों को दो जून पेट भर खाना नसीब नहीं। वर्तमान सरकार की इस बारे में कोई नीति नहीं है और न गरीबी के खिलाफ कोई संकल्प है। समाज में बराबरी लाने के बजाए विषमता की खाई को बढ़ाया जा रहा है।
मुलायम सिंह यादव
समता और संपन्नता ही समाजवाद का मूल मंत्र है। समाज के सब लोगों को विकास के अवसर मिलें इसके लिए समाजवादियों को बढ़-चढ़कर काम करना होगा। सिर्फ नारे लगाने से समाजवाद नहीं आएगा, बल्कि समाजवादी सिद्धांतों को समझना और अपनाना होगा। समाजवादी विचारधारा को फैलाने की सबसे ज्यादा जिम्मेदारी युवा पीढ़ी पर है।
मुलायम सिंह यादव
संस्थापक-संरक्षक, समाजवादी पार्टी
देश पर जब भी चुनौती आई समाजवादी पार्टी ने हमेशा उसका मुकाबला किया। हमारी पार्टी किसान आंदोलन के दौरान उनके साथ खड़ी रही। देश के लिए सभी को एक होना पड़ेगा। समाजवादी पार्टी के कार्यकर्ता चुनौतियों के सामने हमेशा डट कर खड़े होते हैं।
मुलायम सिंह यादव
हमारा लक्ष्य है समाजवाद, लोकतंत्र और धर्मनिरपेक्षता। इस लक्ष्य को पाने के लिए एक बड़े सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक परिवर्तन की जरूरत है।
मुलायम सिंह यादव
समाजवादी बुलेटिन | अक्टूबर 2020 | 2
किसान अन्नदाता हैं और उनके हितों को सर्वोच्च प्राथमिकता मिलनी चाहिए। जब तक खेती की उन्नति नहीं होगी, गांवों का विकास नहीं होगा। गांवों के विकास के बगैर हमारे देश का विकास नहीं होगा।
मुलायम सिंह यादव
समाजवादी पार्टी परिवर्तन की राजनीति करती है, नौजवानों भविष्य में पार्टी तुम्हारे हाथों में होगी, समाजवादी सिद्धांतों और साहित्यों को पढ़ो। किसान, नौजवान और व्यापारी ही देश को शक्तिशाली बनाते हैं।
मुलायम सिंह यादव
लाल टोपी से भाजपा के नेता परेशान हो गए हैं। भाजपा को लाल टोपी से अपने लिए खतरा लग रहा है। लाल टोपी भाजपा के कुशासन के खिलाफ रेड अलर्ट है। लाल टोपी व्यवस्था परिवर्तन में अहम योगदान देगी। भविष्य समाजवादियों का है।
मुलायम सिंह यादव
समाजवादी पार्टी के सदस्यता अभियान को सभी नेताओं और कार्यकर्ताओं को मिलकर सफल बनाना है। युवाओं और महिलाओं को बड़ी संख्या में पार्टी से जोड़ें। समाजवादी पार्टी ही सामाजिक न्याय की लड़ाई लड़ सकती है और सभी को अधिकार दिला सकती है। दुनिया के जितने दुख-दर्द हैं वे समाजवादी व्यवस्था से ही दूर हो सकते हैं, दूसरा और कोई रास्ता नहीं है।
मुलायम सिंह यादव



समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय व राज्य सम्मेलन संपन्न

भाजपा का सफाया करने का संकल्प